

आत्मा से उत्पन्न उत्पादकता

(SPIRIT BORN CREATIVITY)

परमे २ की उत्पादकता को संसार में छोड़ना



SPIRIT BORN CREATIVITY

आत्मा से उत्पन्न उत्पादकता

Releasing God's creativity into your world

परमेश्वर की उत्पादकता को संसार में छोड़ना

by Mark and Patti Virkler

मार्क और पैटी विर्कलर द्वारा लिखी गयी

आत्मा से उत्पन्न उत्पादकता

by Mark and Patti Virkler
मार्क और पैटी विर्कलर द्वारा लिखी गयी

विषय सूची

परिचय - कौन? मैं? उत्पादक?!!!

१. उत्पादकता - घनिष्ट परिचय का साथी फल
२. परमेश्वर ने मनुष्य को उत्पादक बनाया है
३. मनुष्य की आत्मा की पाँच इंद्रियों का उपरी दृष्य और परमेश्वर उन्हें कैसे भरना चाहता है

पहला स्तर - धारणा

४. परमेश्वर के उत्पादक विचारों को प्राप्त करने की तैयारी
५. परमेश्वर की आवाज को सुन कर मनुष्य की आत्मा की पहली इंद्रि को भरना

स्तर दो - अण्ड सेवन

६. परमेश्वर के दर्शन को देख कर मनुष्य की आत्मा की दूसरी इंद्रि को भरना
७. परमेश्वर की आवाज और दर्शन पर विचार कर के मनुष्य की आत्मा की तीसरी इंद्रि को भरना
८. परमेश्वर के रहमा और दर्शन को स्विकार कर मनुष्य की आत्मा की चौथी इंद्रि को भरना
९. विश्वास द्वारा कार्य कर के मनुष्य की आत्मा की पाँचवीं इंद्रि को भरना

स्तर तीन - जन्म

१०. दर्शन की मृत्यु और पुणरुत्थान
११. सर्व शक्तिमान परमेश्वर के रहमा और दर्शन को जन्म देना
१२. सारी महिमा परमेश्वर को देना

परिशिष्ट

- अ) रहमा, "कहा गया वचन", की शक्ति को समझना
- ब) परमेश्वर द्वारा आपके दर्शन को देखने की क्षमता को वापस लौटने देना
- स) दर्शन की मृत्यु का एक संक्षिप्त चित्र
- द) विश्वास में आगे बढ़ते हुए अब्राहम ने जो दूसरे पाठ सीखे

इस बात की सूचना दी जाती है की इस पाठ्यक्रम को प्रारंभ करने से पहले मार्क और पैटी विर्कलर द्वारा लिखी गयी परमेश्वर के साथ बंधुत्व को समूह में बैठ कर सुना व देखा जाए। यदी यह नहीं हो सकता तो उन की पुस्तक परमेश्वर के साथ बात चीत पढी जाए। इस से इस पुस्तक को पढने में बहुत लाभ होगा।

परिचय

कौन? मैं? उत्पादक?!!!

उत्पादकता पर आप के विश्वास पर आधारित कुछ प्रश्न
(रिक्त स्थान पर "सच" या "गलत" लिखिये।)

- _____ १. उत्पादकता की अर्थ, विचार करना या कुछ एक दम नया करना है।
- _____ २. केवल निपुण व्यक्ति ही कुछ अर्थपूर्ण उत्पादक बना सकता है।
- _____ ३. केवल कुछ लोगों को ही उत्पादक बनने का उपहार मिला है।
- _____ ४. उत्पादकता पागलपन को रोकती है।
- _____ ५. यदि आप में सच में उत्पादकता है, तो कोई न कोई आप को खोज निकालेगा और आप के गुण को पहचानेगा।
- _____ ६. विचार जादू की तरह होते हैं, आप को उन के लिये परिश्रम करने की आवश्यकता नहीं।
- _____ ७. उत्पादक विचार अच्छे हैं परन्तु अव्यवहारिक।
- _____ ८. उत्पादकता का अर्थ जटिलता है।
- _____ ९. सब से अच्छा रास्ता मिल चुका है।

उम्मीद करता हूँ की आप ने इन में से किसी पर भी सच नहीं लिखा है, क्योंकि हर वाक्य गलत है, जैसा की इतिहास में बार बार दोहराया गया है। (इस तरह के कई उदहारण माईकल लीबोफ की पुस्तक विचारकरना में दिये गये हैं।)

हम आईस्टाइन को बहुत महान उत्पादक मानते हैं, जो की वे थे, परन्तु कई लोग इस बात को नहीं जान पाए की उन्होंने कई वर्ष स्विस के कार्यालय में काम किया था। यह वह महान स्थान है जहाँ दूसरों की समझ और उत्पादकता से प्रोत्साहन मिलता है।

हम डेल कारनेजी को उस व्यक्ति के रूप में देखते हैं, जिसने लाखों लोगों को आनन्द के साथ, आधिक सफलता के साथ और उत्पादकता के साथ जीना सिखाया। परन्तु कारनेजी ने अपनी उत्पादकता को ऐसे बताया:

"जिन विचारों को मैं अपनाता हूँ वे मेरे नहीं हैं। मैंने उन्हें सौक्रेटस से उद्धार मांगे हैं। मैंने उन्हें चैस्टरफील्ड से आघात कर के लिये हैं। मैंने उन्हें यीशु से चुराये हैं। और मैंने उन्हें एक पुस्तक में एकत्रित किया है। यदि आप को उन के सिद्धांत पसंद नहीं हैं, तो किस के प्रयोग में लाओगे?"

कई लोग ऐसे श्रेष्ठों में स्थापित हो गये हैं, जिन में अन की निपुणता नहीं है। उदहारण के लिये, ऐली वाईटनी, जिसने कौटन जिन का अविशकार किया वह एक स्कूल अध्यापक थे। सैमूएल मोर्से और रौबर्ट फुलटन, जिन्होंने टैलीग्राफ और स्टीमबोट का अविशकार किया, दोनों कलाकार थे। निपुण न होने से आप के पास उत्पादक होने की क्षमता को बताता है, क्योंकि आप समप्रदायिकता से बंद कर समस्या के नहीं देखते।

उत्पादक बनने की इच्छा होनी चाहिए, बजाए किसी विषय में निपुणता के। उदहारण के लिए, विश्व युद्ध दो में, ब. एफ. गुडरिच को हर वर्ष कर्मचारीयों सुधारने के तीन हजार उपाय मिलते थे, और उन में से एक तिहाई ऐसे थे जिन से अच्छि धन राशी प्राप्त हो सकती थी।

बडती उम्र मनुष्य में उत्पादक बहाव को अवकाश देती है। जौर्ज बर्नाड शाह ने लगभग सत्तर वर्ष की आयु में नोबल पुरुसकार प्राप्त किया। जब टामस जैफरसन सेवानिवरित हो कर मौनटिसैलो गये, उन्होंने कई सादनों का अविशकार सत्तर से अस्सि वर्ष की आयु में किया। डा. जौर्ज वाशिंगटन कारवर अस्सि वर्ष की आयु में भी कृषि उध्योग में उपयोग होने वाले नये विचारों को बताते रहे। ऐलैकजाडर गाहम बैल ने टैलीफोन को अठावन वर्ष की आयु में सही किया और हवाई जहाजों में संतुलन बनाये रखने की समस्या को सत्तर वर्ष की आयु में किया। मार्क टवैन ने इकहत्तर वर्ष की आयु में दो पुस्तकें लिखीं, ईवज़ डाईरी और द ३०,००० डालर बिक्वेस्ट। बेंजामिन फर्रैकलिन ने एक महान कार्य को उस वक्त रचा जब वे चौरासी वर्ष के थे। उदहारण की सूची बहुत लम्बि है।

प्रोफैसर हारवे लेहमैन ने करीब एक हजार उत्पादक प्राप्त लोगों की सूची का अध्ययन किया और इस नतीजे पर पहुँचें की वह आयु जब कुछ उत्पादता हुई है वह चौहत्तर वर्ष है। यह सब बातें इस बात को बताती हैं की हम अपनी उत्पादक शक्ति का जितना प्रयोग करेंगे वह उतनी ही बेहतर होती जाएगी।

आत्मा से उत्पन्न उत्पादता कोई हादसा नहीं, इस के लिए आशयपूर्ण कार्य करना पढता है। इस पुस्तक की पढाई से आप की समझ के दरवाजे खुलेंगे, ताकी आप में परमेश्वर की उत्पादता लगातार बहने लगे। यदी एक बार आप परमेश्वर की आत्मा के बहाव में बहने लगें तो फिर आप की सीमा केवल परमेश्वर ही है। आप स्वयं को अपनी योग्यता से अधिक करते हुए पाएँगे। अब आपने सर्वशक्तिमान परमेश्वर की योग्यताओं के साथ बहना सीख लिया है।

पहले अध्याय में हम खोजेंगे की उत्पादता घनिष्ट परिचय का साथी फल है। अध्याय दो में हम सीखेंगे की परमेश्वर ने मनुष्य को उत्पादक बनाया है। अध्याय तीन में हम देखेंगे की यह उत्पादता पूरी रीती से बहती है जब परमेश्वर हमारी आत्मा की इंद्रियों को स्वयं से भर देता है। अध्याय चार में हम अपने आप को शांत करना सीखेंगे ताकी हम दैवी बहाव को पहचान सकें। अगले पाँच अध्यायों में हम एक एक करके देखेंगे की परमेश्वर कैसे हमारी आत्मा की पाँचों इंद्रियों को स्वयं से भरता है। अध्याय दस में हम दर्शन की मृत्यु के सिद्धांतों को हम देखेंगे, और हम यह भी देखेंगे की परमेश्वर हमें जिस दिशा में ले जा रहा है, हम उस ओर जाएँ और दर्शन पर से अपने हाथ हटा लें। अध्याय ग्यारह हमें अंत में ले आयेगा, पूर्णतो की ओर जो हमारे अंदर बास कर रहे परमेश्वर की अलौकिक उत्पादता का जन्म है।

लिखने के बारे में

यह पुस्तक यह चाहती है की आप अधिकतर लिखें। मैं यहाँ पर कई बातें बताना चाहूँगा जो मदद कर सकती हैं। १) प्रश्नों को अपनी आवश्यकता के अनुसार बदलीए। २) कई विषयों के बारे में लिखना आप को कठिन लगेगा, जैसे की पैसों का लक्ष्य या कोई व्यापार की योजना। तो हमें इस बात को याद रखना होगा की कुछ भी विषेश नहीं है। सारा जीवन ही पवित्र है।

उदहारण के लिये जब मैं स्टाक सार्केट के साथ काम करने लगा, तो मैं उस के बारे में कई कारणवश लिखना नहीं चाहता था। मैं पहले इस बात से संतुष्ट होना चाहता था की यह परमेश्वर की दृष्टि में सही है और यह स्टेबाज़ी नहीं है। तो मैंने इस के बारे में लिखना प्रारंभ किया। फिर मैं अपने इस पत्राचार से डर गया क्योंकि इस में

मुझे कई विषयों पर चित्र और रूप रेखा बनानी पड़ती ताकी यह पता चले की मुझे किस में पैसे लगाना है। परमेश्वर न मुझे बताया की कई महिनों तक मुझे कुछ पैसे नहीं मिलेंगे, और मुझे जून १ तक चित्र बनाते रहना है। मुझे यह विश्वास नहीं हुआ की मैं पैसे नहीं कमा पाऊँगा और मुझे इस तरह से पत्राचार करना ठीक नहीं लग रहा था, तो मैंने वस्तुएँ बेचने लगा क्योंकि मुझे यह ठीक लगा।

३ महिनों तक सेवय की कोशिश करने के बाद और पैसा गवा देने के बाद, आखिरकार परमेश्वर ने मुझ से पत्राचार के द्वारा बात की, "मार्क, यदी तुम अपने पतेराचार पर विश्वास करते तो क्या इस से बुरा होता?" मैंने कहा, "नहीं" और अगली बार पैसा लगाते वक्त मैंने अपने पत्राचार पर विश्वास किया। और यकीनन चार सप्ताह में मेरे सारे पिछले नुकसान पूरी हो गये।

इसलिए, तीसरी सम्स्या इस पुस्तक में पत्राचार करते समय जो आप के सामने आयेगी वह यह है की आप परमेश्वर जो आप को कह रहा है उस पर विश्वास नहीं करेंगे, आप को विश्वास करना कठिन होगा जब आप नये क्षेत्रों पर पत्राचार करेंगे। यह ठीक है। उसे सामानय रूप से स्विकार करीए। यदी आप चाहेंतो जो परमेश्वर कह रहा है उसे छोड कर जो आप को ठीक लगे उस प्राकार करीए। तब अपने नतीजों को दर्ज करीए। अगली बार अपने पत्राचार के अनुसार चलीए और नतीजे दर्ज करीए।

मेरे लिए, मन का विश्वास बढ़ाना और आत्मा से उत्पान्न उत्पादत्ता को छोडना एक ही बात है। जब परमेश्वर मेरी आत्मा की पाँचों इंद्रियों को स्वयं से भरता है तब मन का विश्वास बढ़ता है और दैवी उत्पादत्ता छोड दी जाती है। आईये और हमारे साथ मिल कर सर्वशक्तिमान परमेश्वर की उत्पादत्ता को छोडने के सिद्धांतों को सीखें।

मौरिस फुल्लर, रौजर मिल्लर, मार्ट
वाही
और जॉन वॉटसन, हमारे विश्वासी
दोस्त
और आत्मिक सलाहकारों
को अर्पित

अध्याय एक

उत्पादता - घनिष्ट परिचय का साथी फल

क्या आप के जीवन का एक लक्ष्य अपनी स्वयं की उत्पादता को बढाना है? क्या आप अपने घर में या कार्यालय की समस्या से जूझने के लिये उत्पादक सुझावों को खोजते हैं? क्या आप संसार को कभी न समाप्त होने वाली सुन्दरता देना चाहते हैं? नयी खोज और नये विचारों के द्वारा क्या आप आपके अडोस पडोस के लोगों के जीवन के स्तर को बढाना चाहते हैं? हाँ, आप ऐसा ही करना चाहते हैं। वरना आप उत्पादता पर आधारित इस पुस्तक को क्यों पढना चाहते?

परन्तु यदी आप उत्पादता को लक्ष्य बना कर आगे बढना चाहते हैं तो आप गलत दिशा में चल पडे हैं। उत्पादता, विशेष रूप से आत्मिक उत्पादता, स्वयं में अंत नहीं है। यह इस सृष्टि के रचेता के साथ संबन्ध बनाने में साथी फल है। मनुष्य के मन और दैवी मन के मिलने से उत्पादता उत्पन्न होती है। यह पवित्रात्मा से घनिष्टता का फल है। अपने मन की आवाज और अपने मन में पवित्रात्मा की आवाज को सुन कर यह बढता है। यह दूसरों के मन की आवाज को सुन कर बढता है।

मसीही बनने के प्रारम्भ के दिनों में मुझे उत्पादता के बारे में बहुत थोडी जानकारी थी। यह इसलिए था क्योंकि मुझे यह नहीं पता था की मैं पवित्रात्मा के साथ कैसे सहाचार्य बना सकता हूँ। मुझे यह नहीं पता था की मैं उससे कैसे सम्पर्क करूँ, या मेरे अंदर उसकी उपस्थिती का क्या अनुभव होता है। मैं परमेश्वर की न तो आवाज सुन सकता था और न ही उसके साथ बात चीत कर सकता था, जैसे की पवित्रशास्त्र में कई पुरुष और महिलाओं ने करा था। मेरी मसीहत एक ईश्वरज्ञान था, एक परंपरा, एक अध्यात्म विध्य, बजाए प्रति दिन के जीवन अनुभव के। इसलिए मैं सर्वशक्तिमान परमेश्वर की उत्पादता को छोड नहीं पा रहा था। मैं जानता था की मैंने मुक्ति पा ली है, क्योंकि मेरा मन परमेश्वर की ओर लगा हुआ था, और मैं उसका अनुभव पाने के लिए जो भी आवश्यक है वह करता था। मेरा वह ज्ञान की परमेश्वर जो आत्मा है उस का अनुभव कैसे करूँ वह बहुत सामित था। कलीसीया में तारकित्ता ने प्रवेश कर लिया था और वे मुझे केवल इंजील की परंपरा दे सकते थे, इंजील के परमेश्वर के साथ मुलाकात नहीं करवा सकते थे। और मुझे दूसरों के मन को सुनने की शिक्षा नहीं मिली थी और मैं इस में अशिक्षित और अज्ञानी था।

परमेश्वर के साथ घनिष्ट परिचय स्थापित करना

मुझे दस वर्ष और एक वर्ष अधिक तीवरता का लग गया, खामोशी को तोड कर मेरे अंदर रह रहे परमेश्वर को खोजने में। परन्तु जब मैंने यह सीख लिया तो कुछ भी कठिन नहीं लगा। एक बच्चा भी कर सकता था। यह याद रखीये की यीशु ने कहा था, "बच्चों को मेरे पास आने दो उन्हें मना मत करो, क्योंकि स्वर्ग का राज ऐसों ही का है।" जब मेरी बेटी आठ वर्ष की थी तब उसने सृष्टिकर्ता की आवाज को अपने मन में सुनना सीखा। और जैसा

की हर एक के साथ होता है, उसे एक आवाज से कुछ अधिक पता चला। हमें वह व्यक्ति मिला जो हमें चंगा करता है, और हमें हमारे विचारों से भी अधिक बढ़ कर प्रेम करता है। इसलिए पौलुस ने उसे अचिन्त्य प्रेम कहा है।

मुझे इस पुस्तक में सर्वशक्तिमान परमेश्वर की उत्पादकता के बारे में जो बताना है वह इस बात पर निर्भर करता है की हम परमेश्वर की आवाज को हमारे मनो में सुन सकते हैं और उसकी अदभुत चंगाई की शक्ति के साथ जीना सीखा है। यदी आप अभी भी तार्किक मसीहत से बंधे हुए हैं, तो मैं चाहूंगा की आप इस पुस्तक को कुछ महिनों के लिए पढ़ना छोड़ दीजिए और मेरी पुस्तक परमेश्वर से बंधुत्व को पढ़िए, जिस में मैंने विस्तार से उन क्रमों को बताया है, जिन पर परमेश्वर ने मुझे चलना सिखाया है, ताकी उसकी आवाज को सुन सकूँ। यह शिक्षा देने वाली पुस्तक है, जिसे छोटे समूह में या किसी मुत्र के साथ पढ़ना चाहिए। यह अच्छा होगा की जब आप नये जीवन का अनुभव कर रहे हों तो आप को सुनने वाला कोई आप के साथ हो।

परमेश्वर के साथ बंधुत्व पुस्तक में बताए गये क्रम को कोई भी प्रयोग कर सकता है। वे कठिन नहीं हैं। हम ने नव जवानों के लिए भी उस में कुछ जोड़ा है। यदी आप उस क्रम पर चलते हैं तो आप परमेश्वर से घनिष्ट परिचय कर सकते हैं। जब से मैंने परमेश्वर से बात चीत प्रारंभ की और उस की आवाज को सुना है, तब से मेरा जीवन बदल गया है। तुम्हारा जीवन भी इसी तरह बदल सकता है।

परमेश्वर के साथ बंधुत्व में, हम आप को सिखाते हैं की आप अपने आप को परमेश्वर के समक्ष कैसे शांत कर उस की आवाज की ओर ध्यान लगा सकते हैं (जो एक स्वैच्छिक विचारों के बहाव के रूप में आता है), दर्शन का प्रयोग करना और स्वैच्छिक चंगाई के बारे में लिखना, जूवनदायक बहाव जो आप के मन की और आत्मा की गहराई से आता है। यह जीवन की नदी है जो बाईबल बताती है की तुम्हारे भीतर से वह निकलेगी यूहन्ना ७: ३७ - ३९)। यह पवित्रात्मा है जिसे विश्वास करने वाला प्राप्त करते हैं। यह सही मायनों में मसीहत है। यह शक्ति और जीवन है। यह परमेश्वर है।

जब आप लगातार परमेश्वर के साथ बंधुत्व में लगे रहेंगे, तो आप आत्मा से उत्पन्न उत्पादकता को प्राप्त करेंगे।

स्वयं के मन से घनिष्ट परिचय स्थापित करना

मेरे लिए अगला क्रम आत्मा से उत्पन्न उत्पादकता, नहीं था। मैं परमेश्वर की आवाज और दर्शन के द्वारा भावुक्ता से चंगाई पाना चाहता था। वह मेरे मन में प्रेम और चंगाई की बातें करने लगा जिससे कई वर्षों के दर्द और पाप मिट गये। केवल उस की आवाज भी इन रुकावटों को हटा सकती थी जो की कई वर्षों से जमा हो गये थे। उस के खून ने मुझे परमेश्वर की दृष्टि ने सही ठहराया, परन्तु मैं अभी भी कई संघर्शों के साथ जी रहा था। इन संघर्शों से मुक्ति मुझे उस की आवाज को सुन कर मिली है। मेरी पुस्तक परमेश्वर से सलाह बताती है की परमेश्वर की आवाज किस तरह गुस्सा, अपराध, दण्ड, शक्तिहीनता, हीनता और दोष को चंगा कर विश्वास, आशा, प्रेम, मसीह में पहचान और बहुत कुछ, एक मसीही जीवन में उण्डेलती है।

कहीं न कहीं इस यात्रा में हर एक को मसीह में रहना सीखना है। मेरे लिए इस का यह अर्थ था की स्वयं से कुछ कार्य न करूँ, परन्तु उस पर विश्वास करूँ जो मेरे साथ है, मेरे अंदर जीवित है और मुझे घेरे हुए है। स्वयं सचेतता को मसीही सचेतता का स्थान ले लेना चाहिए। मैंने एक वर्ष, "मसीह में रहना" सीखने में बिता दिया, और

इस पर भी एक पुस्तक लिख डाली।

मैं आप से यह सब क्यों कह रहा हूँ? क्या इस लिए की मैं आप को अपनी पुस्तकें बेंच सकूँ या यह बताने के लिए की मैं कितना महान हूँ? नहीं, मैं चाहता हूँ की हम में से हर एक जन परमेश्वर के साथ चलना सीखें। यह एसी चाल है, जो एक समय में एक कदम उठाना चाहिए। यदी आप एक कदम कूद कर दूसरी की ओर जोएंगे तो आप कठिनाई में फँस जोएंगे। यदी आप जल्दबाज़ी करेंगे तो आप केवल ईश्वरज्ञान प्राप्त करेंगे, जिस से अधिक लाभ नहीं होगा। मुझे उपर्युक्त के तीन अध्याय पढ़ने में तीन वर्ष लग गये। मैंने परमेश्वर के साथ बातचीत में एक वर्ष बिताया, एक वर्ष परमेश्वर में रहना सीखने के लिए और एर वर्ष मैंने परमेश्वर को अपनी चोटों और पापों को चंगा करने दिया। तब परमेश्वर ने मुझे इस लायक समझा की मैं आत्मा से उत्पन्न उत्पादकता के बारे में सीख सकूँ। और मुझे यह सीखने में भी एर वर्ष लग गया।

पहचानीए की आप अपनी आत्मिक यात्रा में कहाँ पर हैं

मैं चाहूँगा की आप प्रार्थनापूर्वक यह निश्चय करीए की आप परमेश्वर के साथ यात्रा में कहाँ हैं, और परमेश्वर क्या चाहता है की आप का अगला कदम क्या होगा। यदी वह यह पुस्तक है, तो इसे पढ़िए। यदी कोई और जीवन का अध्याय है, तो इस पुस्तक को अलग रख कर, उस से संबंधित पुस्तक पढ़िए। हम यहाँ पर एक जीवन के विषय में बात कर रहे हैं। आप के जीवन के विषय में। उसे वह दीजीए, जो उसे आवश्यक है। उसे वह दीजीए जो परमेश्वर आप से उसे देने को कह रहा है।

उत्पादकता को एक उपहार के रूप में मत खोजीए, जिस में उत्पादक के साथ संबंध नहीं होता। उस को पूर्ण जीवन के बहाव के रूप में पहचानिए। यदी आप उसे आसानी से और छोटे रास्ते के द्वारा पाना चाहते हैं, तो हो सकता है की रास्ते में आप का सामना उस से हो जाए जो अंधकार में छिप कर आप की राह देख रहा हो। उस ने यीशु का भी रास्ता देखा और उन्हें छोटा रास्ता दिखाया, ताकी राष्ट्र उन को दण्डवत कर सकें और उन की आराधना करें। परन्तु यीशु ने इसे ठुकरा दिया। उस ने यह कहते हुए पिता के साथ घनिष्टता की राह चुनी, "मैं स्वयं से कुछ नहीं करता..." हमें भी यही कहने वाले बनना है, "मैं स्वयं से कुछ नहीं करता।" इसकारण, इस बात का यकीन करीए की आप सृष्टिकरता के साथ घनिष्टता स्थापित करे हुए हैं, ताकी आप की उत्पादकता एक सहपाठी की तरह बहती रहे और आप मसीही जाती की सेवा के आराधनालय में आराधना न कर सकें।

मनुष्य की निजी उत्पादकता

मनुष्य का मन इसलिए उत्पादक है क्योंकि हम परमेश्वर की शकल में बने हैं। इस कारण मनुष्य अपने मन की उत्पादकता को निखार सकता है। फिर वह उस जाल में फँस जाता है, जो पकड़नेवाले ने बिछा रखा है। नये युग की संस्था ने यही किया है। उन्होंने मनुष्य के मन की उत्पादकता को खोज निकाला है और उसे कैसे निखारा जाए, यह वे सीख रहे हैं। परन्तु वे दैवी रचेता को नहीं पहचानते और वे मनुष्य की पुजा करने के जाल में फँस जाते हैं।

दूसरों के साथ घनिष्टता स्थापित करना

एक और बात जो इस पढ़ाई को प्रारंभ करने से पहले मैं आप को बताना चाहता हूँ वह यह है की,

उत्पादकता को निखारते समय भीतर के बंधन को पहचानना आवश्यक है। परमेश्वर ने मनुष्य को ऐसे बनाया की वह एक समाज में रह सके। यदी अकेला रहे तो कोई भी मनुष्य जीवनत नहीं रहेगा। जाती को आगे बढ़ाने के लिए दो की आवश्यकता (पुरुष और स्त्री) पडती है। परमेश्वर कहता है की एक जन १००० को भगा सकता है और दो, १०००० को। मनुष्य की उत्पादकता उस समय अधिक बढ़ती है जब वह दूसरों के साथ जुड कर सीखता है। दूसरों के प्रति जितना उसका मन और दिमाग खुला रहेगा, उतनी ही तीव्रता से वह उन्नति करेगा। मैं ऐसी कलीसीया में बडा हुआ हूँ, जो यह समझते थे की केवल वही स्वर्ग जाएँगे। यहाँ अधिक उत्पादकता नहीं हो सकती। और इस का फल साफ नजर आ रहा था। मैं समझता हूँ की यह कलीसीया, सच्चाई से कम से कम ५० वर्ष पीछे थी।

आज मैं किसी से भी सीखने को तैयार हूँ। मैं भिन भिन सभ्यताओं की हजारों पुस्तकें पढता हूँ। इसलिए नहीं की मैं उन से सहमत हूँ, परन्तु, इसलिए की जिन्हें मैं गैर मसीही समझता हूँ, मैं उन में कई सच पाता हूँ। परमेश्वर, अच्छे बुरे, दोनों पर वर्षा करता है।

आप कह सकते हैं की, "इतने लोगों से इतने बडे रूप से प्राप्त करने से क्या आपको धोखा खाने का खतरा नहीं रहता?" नहीं, क्योंकि मैं आत्मिक कवच के निचे रहता हूँ। यदी मैं समझता हूँ की मैं रास्ता भटक रहा हूँ तो मैं अपने आप को उन को सौप देता हूँ, ताकी वे जाँच कर मुझे सुरक्षा दे सकें। यदी वे सुरक्षा नहीं दे सकते तो मैं पीछे हट जोता हूँ।

इसलिए मैं चाहूँगा की आप अपना मन बडा करें ताकी आप को आस पास के लोगों से प्राप्त कर सकें। उन की सुनीए। उन के मन की सुनीए। उन से सीखीए। वे आप को और भी अधिक उत्पादक बनाएँगे। मैं ने सब से महान पाठ तब सीखा और उस समय कदम उन्नती की ओर बडे, जब मैं अपनी कलीसीया की परम्परा से बाहर निकल आया और उन से परिज्ञान प्राप्त किया जो मुझ से अलग थे। इसलिए अपने डर को दूर करीए। एक दृढ आत्मिक चरवाह स्थापित करीए, और नये क्षेत्रों की खोज में अपने से आगे जाईए। अप निराश नहीं होंगे। आप उत्पादकता की नयी दुनिया में प्रवेश करेंगे। आप की यात्रा में आप आशीश पाएँ।

अध्याय दो

परमेश्वर ने मनुष्य को उत्पादक बनाया है

परमेश्वर जो इस ब्रह्माण्ड का रचेता है, उसने "मनुष्य को अपनी शकल में बनाया है।" एक महात्वपूर्ण वाक्य, विशेष रूप से इब्राणियों में। यह वाक्य, "परमेश्वर की शकल" जो पुराने नियम में पाया जाता है, इस का अर्थ है, "छोटे भगवान।" परमेश्वर ने मनुष्य में जीवन की साँस डाली और वह एक जीवित आत्मा बन गया।

मनुष्य की प्रकृति का अध्ययन करनेवाला - मनुष्य की निजी आत्मा में से उत्पादक पाना

क्याकि मनुष्य में परमेश्वर की साँस फूँकी गयी, इसकारण आज मनुष्य स्वयं को उत्पादक समझता है और कई आदभुत कार्य करता है। कई लोग अपने अंदर उत्पादकता का, जो परमेश्वर ने उन के अंदर डाली है, पूरा प्रयोग करते हैं। इसे हम मनुष्य की प्रकृति का अध्ययन करनेवाला कहते हैं। इस व्यक्ति ने अपने सर से मन की ओर आना सीख लिया है, जहाँ परमेश्वर की उत्पादक साँस अब तक काम कर रही है। परन्तु एक मनुष्य की प्रकृति का अध्ययन करनेवाले के लिए परमेश्वर की उत्पादकता कभी भी पूर्ण रूप से नहीं निकलती।

आत्मा से भरा हुआ मसीही - मनुष्य की आत्मा में परमेश्वर की उत्पादकता को पाना

चाहे परमेश्वर ने मनुष्य को अपनी शकल में बनाया हो (यानी, छोटा भगवान, जैसा की इब्रानी का पुराना नियम बताता है), परन्तु परमेश्वर यह नहीं चाहता था की मनुष्य स्वयं ही सब कुछ करे। मनुष्य को हमेशा किसी का अंश बनना पड़ा जो उस से बड़ा था। वह एक शाखा था जिसे छाँट कर दाखलता बनाया गया, एक मन्दिर जिस में कोई और बस्ता है। उसे परमेश्वर के जीवन को, जिसने उसे बनाया है, अपने अंदर बहने देना है। इस तरह वह इस संसार में जिस में वह रहता है, परमेश्वर की उत्पादकता को निखारेगा। उसने अपनी उत्पादकता को स्वयं नहीं प्रयोग करना है, परन्तु उस सर्वशक्तिमान परमेश्वर को यौपना है। मनुष्य को यह आज्ञा मिली है की "परमेश्वर की आत्मा में भर जाओ" और "आत्मा में चलो"। मनुष्य को मसीह में पाना है, स्वयं में नहीं।

मनुष्य की इस तरह की उत्पादकता, जो दूसरे पर निर्भर है, इस से वह अधिक उत्पादकता निखार सकता है, बजाय स्वयं पर निर्भर हो कर स्वयं की आत्मा से उत्पादकता निखारने के। वह न केवल परमेश्वर की आत्मा की उत्पादकता को निखारेगा, परन्तु वह ब्रह्माण्ड के सिर्जहार की उत्पादकता को भी निकालेगा, क्योंकि वह न केवल परमेश्वर की ओर परन्तु उसकी पवित्रात्मा के बहाव की ओर भी ध्यान लगाता है।

हेतुवादी - जो उत्पादक नहीं है

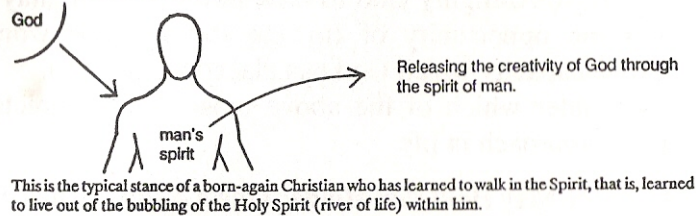
वह मनुष्य उत्पादक नहीं है जिसने आत्मा की दुनिया के स्वैच्छिक बहाव में जीना नहीं सीखा है। वह केवल अपने दिमाग के विचारों के द्वारा जीवित रहता है।

धार्मिक विश्वासी - वह जो विपरित उत्पन्न करता है

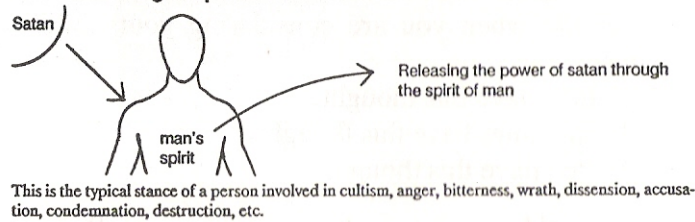
सब से बुरा कार्य जो शैतान कर सकता है, वह यह की मनुष्य के खाली उत्पादका को भर सकता है। इस तरह मनुष्य की उत्पादका का विपरीत प्रयोग हो रहा है। मनुष्य अपने मन को एक बुरे विचार या बुरे दर्शन के विष से भर रहा है। इस तरह वह शैतान का नष्ट करने की शक्ति को इस संसार में छोड़ रहा है जिस में वह रहता है। इसे आगे के पृष्ठ पर चित्र के साथ बताया गया है।

Four Possible Stances

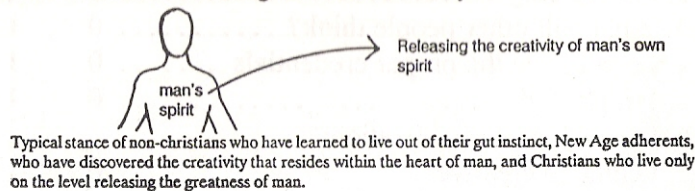
Approach # 1 - Holy Spirit-filled living



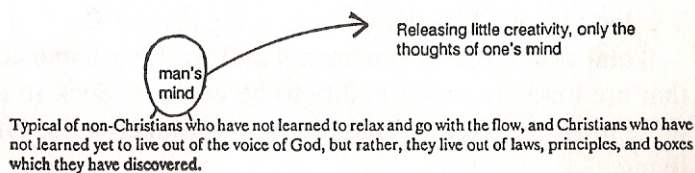
Approach # 2 - Releasing the power of satan



Approach #3 - Humanism - releasing man's own creativity



Approach #4 - Rationalism - releasing the power of the mind



इस तरह हम देखते हैं की मनुष्य बहुत उत्पादक है। वह अपनी उत्पादकता का प्रयोग स्वयं भी करना चाहेगा। वह चाहे अपनी आत्मा में परमेश्वर के बहाव को बहने दे या शैतान के बहाव को बहने दे। विचार करीए की इन में से आप का जीवन किस रास्ते पर चल रहा है।

वह विचार जो किसी की उत्पादक योग्यता को रोक सकते हैं

यदी आप अपनी योग्यताओं को उत्पादक समझते हैं, तो किसी एक गिनती पर चिन्ह लगायें

- ० - मुझे यह विचार कभी नहीं आता।
- १ - मुझे कभी कबार यह विचार आता है
- २ - मुझे हमेशा यह विचार आता है।

१. मैं बहुत बूढ़ा हूँ.....	०	१	२
२. मैं बहुत व्यस्थ हूँ	०	१	२
३. दूसरे लोग क्या सोचेंगे	०	१	२
४. मेरे पास आवश्यक विश्वास पत्र नहीं है	०	१	२
५. मैं गिर सकता हूँ	०	१	२
६. मैं एक संस्था के लिये कार्य करता हूँ, मैं उत्पादक नहीं बन सकता	०	१	२
७. मैं एक स्त्रि हूँ, पुरुष अधिक निपुण हैं	०	१	२
८. मेरे पास अधिक विचार शक्ति नहीं है	०	१	२

अपने अंकों का जोड़ीये। यदी आप का जोड ० नहीं है, तो इसका अर्थ यह है की कुछ बातें ऐसी हैं, जो आप की उत्पादक योग्यता को रोक रही हैं। इन बातों को बदलीये।

क्या आप फिल्लिप्पियों ४:८ को याद करना चाहेंगे:
"मैं हर कार्य मसीह के द्वारा कर सकता हूँ, जो मुझे शक्ति देता है।"

कुछ और विचार जो उत्पादकता को रोकते हैं

यह कार्य नहीं करेगा...	हाँ परन्तु...
यह नहीं चलेगा...	यह परम्परा नहीं है....
लो फिर शुरू हो गये...	यह योजना में नहीं है...
यह बहुत पुराने विचार हैं...	हम इस के लिये बहुत छोटे हैं...
हम इस के लिये बहुत बडे हैं...	हमारे पास समय नहीं है...
इस का अर्थ यह है की अधिक कार्य करना पडेगा	अधिक तीव्रता से मत चलो...
यह हमारी समस्या नहीं है...	
हम अभी इस के लिये तैयार नहीं हैं...	
यह हमारी जिम्मेदारी नहीं है...	
वे सोचेंगे की हम पागल हैं...	
हमारे पास इस समय कई योजनायें हैं...	
हमने इस तरह पहले कभी नहीं किया...	
हम इसके बारे में फिर कभी बहैस करेंगे...	
तुम समस्या को समझ नहीं रहे हो...	
अच्छा है, परन्तु काम नहीं करेगा...	
तुम ने यह रास्ता पहले नहीं प्रयोग किया...	
हम उस तरह करते आये हैं, इस का मतलब वह अच्छा होगा...	
हम कुछ समय तक देख कर प्रगती पर नजर रखेंगे...	
आत्माविध्या के रूप में ठीक है, परन्तु क्या इसे प्रयोग में ला सकोगे...	

इन विचारों से अपने आप को और दूसरों को भी दूर रखो। यह तुम्हारी उत्पादकता की योग्यता को नष्ट करे हैं।

उत्पादक योग्यता किस तरह कार्य करती है उस पर एक विस्तार से दृष्ट

पहले क्रम भीतरी दर्शन से जुड़ा है। आप एक समस्या को देखते हैं, उस समस्या का हल चाहिये, तो आप उस पर कार्य करना प्रारंभ कर देते हैं।

दूसरा क्रम में तैयारी की आवश्यकता है। आप अपनी सारी इंद्रियों का प्रयोग कर एक उत्पादक हल पाने के लिये तैयारी करते हैं और पूरी तरह से जानकारी हासिल कर लेते हैं और खोजते हैं की किस तरह उस विचार को बढ़ावा दें। जब आप परमेश्वर के पास दिशा मांगने जाते हैं, तो आप पाएंगे की वह नहीं चाहता की आप हर दिशा की खोज करें, परन्तु वह आप को एक दिशा बतायेगा जिस को आप ने खोजना है। यह दैवी दिशा आप को अगिनत घण्टों के कष्ट भरे कार्य से बचा सकती है।

तीसरा क्रम अण्ड सेवन का है। आप समस्या को अपने मन पर, अपने अर्ध सचेत दिमाग पर, आप के दाहिने दिमाग पर डालीये और उस पर विचार करीए। थोड़ी देर टहलीये, एक झपकी लीजीये, सपताह के अन्त में उस के साथ सो जाईये, या कुछ भी करीये। विश्राम करने का तरीका ढूँढीये। विश्राम की स्थिती में उस समस्या को परमेश्वर के सामने सौंपीये, और उसे आराम से उसे सानने और आकार देने दें, जब तक की वह सही चित्र नहीं बन जाता।

चोथा क्रम जाँचने का है। बुद्धिमानी का न्याय ले कर और पवित्रशास्त्र में से उदाहरण ले कर, आप अपने विचारों को जाँचेंगे और समझीये की यह अपनाया गया है की ठुकराया गया है। परमेश्वर की शांति आप के मन पर राज्य करे। दूसरों को भी उसे जाँचने दो। उस उसके फल से जाँचा जायेगा।

क्रम दो और तीन में आपकी आत्मा की पाँचों इंद्रियों का प्रयोग किया गया है, जिनके बारे में हम अगले अध्याय में पढ़ेंगे। क्रम दो में परमेश्वर की आवाज और दर्शन का प्रयोग किया गया है ताकी आप को मार्गदर्शन मिल सके की आप ने क्या खोजना है। क्रम तीन में आप अपने मन की गहराई से विचार करते हैं जब आप अण्डा सेवन की क्रिया में लगे हुए हैं।

स्वयं प्रयोग

इस अध्याय के अन्त में हम परमेश्वर की आवाज को पहचानने के उपहार की मनुष्य की उत्पादकाको पहचानने के लिये, हम इन चार क्रमों का प्रयोग कर एक और परिक्षण करते हैं। सही संख्या पर चिन्ह लगाईये।

मैं इसे करता हूँ : १. बहुत कम २. कभी कबार ३. हमेशा

परिज्ञान : मैं एक समस्या, आवश्यकता, या जवाब को देखता हूँ १ २ ३

तैयारी : खोजने की अवस्था में मैं अपनी सारी इंद्रियों का प्रयोग प्रार्थना के साथ करता हूँ.. १ २ ३

अण्ड सेवन : मैं अराम करता हूँ ताकी मेरा मन उस पर कार्य कर सके.....	१	२	३
जाँचना: मैं इन उत्पादक विचारों को जाँचने के लिये सौंपता हूँ.....	१	२	३

यदी आप के अंक अधिक हैं, तो संतोष हो जाईये। यदी अधिक नहीं हैं तो भी संतोष होईये, क्योंकि इस पुस्तक में आप परमेश्वर की सहायता से इस क्रम में आराम से जीना सीखेंगे।

अध्याय ३

मनुष्य की आत्मा की पाँच इंद्रियों का एक दृष्य और परमेश्वर उन्हें

कैसे भरना चाहता है

मन का विश्वास: सारे समय का एक बहुमूल्य वस्तु। परमेश्वर ने दिया गया उपहार, जो जब अंदर अण्डा सेवन की क्रिया में होता है तो परमेश्वर की इच्छा को उभारता है। वह विश्वास जो पहाड़ों को हिलाता है, बिमारों को चंगा करता है और अलौकिक महिमा को स्थापित करता है।

यह कैसे प्राप्त होता है? यह कैसे प्रगति करता है? क्या यह बाईबल में मिलता है? क्या यह किसी धर्म या यंत्र कला में मिलता है? क्या यह धार्मिक जीवन में मिलता है? यह इन में से किसी में नहीं मिलता। यह केवल परमेश्वर में मिलता है। दिमागी तौर से विश्वास करना मनुष्य से प्रारंभ होता है, परन्तु मन का विश्वास परमेश्वर से प्रारंभ होता है। परमेश्वर तुम्हारे मन में दैवीप्रेरणा डालता है, फिर उससे सम्बंधित एक दर्शन देता है, जैसा की उसने अब्राहम के साथ किया था, जो "विश्वास का पिता है।" पहले परमेश्वर ने अब्राहम को वाचा के बारे में बताया। फिर उसने उसे उस वाचा को स्वर्ग में सितारे और समुद्र की रेत को बता कर पूरा किया। फिर अब्राहम ने इस परमेश्वर की वाचा और दर्शन को अण्ड सेवन की क्रिया में डाला, ताकी बाकी की तीन आत्मा की इंद्रियाँ उन में पूरी तरह से घुल जाये। अब्राहम ने अपने आत्मा के दिमाग को परमेश्वर के वचन से भर दिया। उसने अपनी भीतरी इच्छा को केवल उस वाचा और दर्शन से बात करने दी। उसके आत्मा की भावनाये परमेश्वर की वाचा और दर्शन से इतनी उत्तेजित हो गयीं की उन्होंने उसे मजबूर किया की वह परमेश्वर की वाचा पर विश्वास करे। फिर परमेश्वर ने उस दर्शन को मारा और अलौकिक शक्ति से उसे पूरा किया।

इस तरह हम पाते हैं, किस तरह मन पाता है, अण्ड सेवन होता है फिर अंत में अलौकिक चमत्कार होता है। हम प्राप्ति से ले कर पूरा होने तक के इन छः क्रमों को इस पुस्तक में देखेंगे, जो मनुष्य की मन और आत्मा की पाँच इंद्रियों को जाँचता है और कैसे परमेश्वर इन पाँचों को भर कर मन का विश्वास बढाता है। जैसे की डा. पौल योंगि चो बताते हैं, की परमेश्वर के रहमा से हम गर्वती हो जाते हैं।

हमारे पढने की क्रिया : (इन वचनों पर ध्यान दीजिये।)

अब्राहम - विश्वास का पिता

१. परमेश्वर की आवाज को सुना - उत्पत्ति १२ : १ - ३ (प्राप्ति)
२. विश्वास की आँखों से देखा - उत्पत्ति १५ : ५, ६ (प्राप्ति)
३. मन के विश्वास से विचार किया - रोमियों ४ : २०, २१ (अण्ड सेवन)
४. विश्वास के शब्द बोले - उत्पत्ति १७ : ५ (अण्ड सेवन)
५. विश्वास से कार्य किया - उत्पत्ति १७ : २३ (अण्ड सेवन)
६. दर्शन की मृत्यु का अनुभव किया - उत्पत्ति १७ : १८, १९ (जन्म)
७. विश्वास के वाचा को प्राप्त किया - उत्पत्ति २१ : ५ (जन्म)

अगले पृष्ठ पे दिये गये चित्र में मनुष्य की आत्मा की पाँच इंद्रियों को बताया गया है और परमेश्वर उन्हें किस तरह भना चाहता है।

इस पूरी पुस्तक में हम इस चित्र के भावों को देखेंगे। हम मनुष्य की आत्मा की पाँचों इंद्रियों पर एक एक अध्याय पढ़ेंगे और देखेंगे की उन्हें, परमेश्वर से, शैतान से या मनुष्य से कैसे भरा जा सकता है। हम आप को सिखायेंगे की इन पाँचों इंद्रियों से दिन भर कैसे सचेत राहा जा सकता है। आप एक दम पहचान लेंगे की इसे कौन भर रहा है, और किसी भी समय किसी भी विषय पर आप कौन सी क्रिया में हैं। इस से आप परमेश्वर के साथ स्वतंत्रता से बहेंगे, हर स्थिति में उसके जीवन को जन्म देंगे।

इन पाँचों को भरने की क्रिया बहुत ही आसान है। हम इसे सारे दिन बिना सचेतता के करते हैं। आप किसी विचार से प्रारंभ करते हैं। फिर आप उसको पूरा होने का चित्र बनाते हैं। फिर आप कुछ समय उस पर व्यतीथ करते हैं। फिर आप उसके बारे में बताते हैं, अन्त में आप उस पर कार्य करते हैं, अपनी आत्मा की उत्पादक योग्यता में उसे जन्म देते हुए जो की भीतर प्राप्त हुआ गया है और अण्ड सेवन हो रहा है।

	इंद्रि	किस प्रकार प्रयोग करें	बाईबल में उदहारण	स्थिति
१.	भीतरी कान (यूह ५:३०)	परमेश्वर के रहमा को प्राप्त करना	उत्पत्ति १२:१-३	प्राप्ति
२.	भीतरी आँख (प्रका ४:१)	परमेश्वर का दर्शन पाना	उत्पत्ति १५:५,६	
३.	भीतरी दिमाग (लूका २:१९)	परमेश्वर के विचारों पर ध्यान लगाना	रोमि ४: २०, २१	अण्ड सेवन
४.	भीतरी इच्छा (प्रेरित १९:२१)	परमेश्वर के रेहमा पर बोलना	उत्पत्ति १७ : ५	
५.	भीतरी भावनाएँ (१ राजा २१:५)	परमेश्वर के रहमा और दर्शन पर कार्य करता है	उत्पत्ति १७ : २३	
अन्त में नतीज	उस दर्शन की मृत्यु जिसे मैं नहीं ला पा रहा हूँ		उत्पत्ति १६ : २ उत्पत्ति १७: १८, १९	जन्म
	अलोकिक रूप में उस दर्शन का पुनर जन्म "समय के पूरा होने पर परमेश्वर उसे देता है"		उत्पत्ति २१ : १, २ उत्पत्ति ४ : ४ अ	

और विश्वास के करता और सिद्ध करनेवाले यीशु की ओर ताकते रहें। (इब्र १२ : २)।

"मैं अलफा और ओमेगा, पहला और अन्तिम, आदी और अन्त हूँ।" (प्रकाश २२ : १३)।

अपनी आत्मा के द्वारा जीवन या मृत्यु को जन्म देना निरनतर और अपने आप होता है

हम अपनी आत्मा के द्वारा जीवन या मृत्यु को जन्म, अपनी उत्पादक योग्यता से कैसे किया जा सकता है, उस का एक उदहारण देखेंगे।

स्थिति - आप के नये प्रचार या नया काम मिला है, जिस में आपको कोई अनुभव नहीं है।

अपनी आत्मा की पाँचों इंद्रियों में शैतान को भर कर मृत्यु का उत्पादन करना

१. आप को विचार आता है की आप यह बिलकुल नहीं कर सकते।
२. आप अपने आप को फेल होते देखते हो।
३. आप इन विचारों और चित्र पर विचार करना प्रारंभ कर देते हो।
४. आप उन के बारे में बोलना प्रारंभ कर देते हो।
५. आप इस अवसर को ठुकरा देते हैं।

अपनी आत्मा की पाँचों इंद्रियों में परमेश्वर को भर कर जीवन का उत्पादन करना

१. जब आप उस स्थिति के बारे में प्रार्थना करते हैं, तो परमेश्वर आप को बताता है की वह आप के आगे जा रहा है, और वह आप को इस नये काम में कामयाबी देने के लिये हर आवश्यक उपहार प्रधान करेगा।
२. परमेश्वर आप को दर्शन देता है जिस में वह आप को बताता है की किस तरह उसका जीवन आप के जीवन में बहेगा जब आप इस नये काम में कदम डालोगे।
३. आप इन विचारों और चित्र पर विचार करना प्रारंभ कर देते हो।
४. आप उन के बारे में बोलना प्रारंभ कर देते हो।
५. आप हिम्मत के साथ आगे बढ कर इस नये कार्य को अपना लेते हैं।

विश्वास पर पवित्रवचन में से सारांश में वर्णन

१. विश्वास स्पष्ट करना -

"विश्वास आशा की हुई वस्तुओं का निश्चय और अनदेखी वस्तुओं का प्रमाण है (इब्र ११:१)।"

"यह नहीं की जो कुछ देखने में आता है, वह देखी हुई वस्तुओं से बना हो (इब्र ११: ३)।"

२. विश्वास का आरम्भ -

"अतः विश्वास सुनने से और सुनना मसीह के वचन से होता है (रोमि १० : १७)।"

३. विश्वास की आवश्यकता -

"और विश्वास बिना उसे प्रसन्न करना अनहोना है, क्योंकि परमेश्वर के पास आनेवाले को विश्वास करना चाहिये की वह है, और अपने खोजनेवालों को प्रतिफल देता है (इब्र ११ : ६)।"

"जो कुछ विश्वास से नहीं, वह पाप है (रोमि १४ : २३)।"

४. विश्वास को स्पष्ट करना -

अब्राहम - "वह उन सब का पिता ठहरे जो विश्वास करते हैं (रोमि ४ : ११)।"

"हमारे पिता अब्राहम के उस विश्वास की लीक पर चलते हैं (रोमि ४ : १२)।"

"... जो अब्राहम के समान विश्वासवाले हैं, वही तो हम सब का पिता है (रोमि ४ : १६)।"

अब्राहम - "विश्वास में दृढ होकर परमेश्वर की महिमा की (रोमि ४ : २०)।"

स्वयं पर लागू करना

इस अचानक से आप के मन की पाँचों इंद्रियों को भरने वाले अनुभव से सतर्क रहीये जो किसी स्थिती, विषय या विचार से उत्पन्न होती है जिस से आप पिछले कई वर्षों से जूझ रहे हैं, और लिखीये की किस तरह आप की आत्मा से आप की इंद्रियाँ भरती हैं। निम्न अपने अनुभवों को लिखीये। हो सके तो अच्छा विचार लीजीये। परन्तु एक गलत विचार से भी शिश्ना मिल सकती है।

स्थिती, विषय या विचार क्या था

१. जो विचार इस बारे में मैंने चुना वह यह है

२. जिस चित्र या दर्शन से उसे मैं जोड़ना चाहता हूँ वह यह है

३. मैं इस विचार पर सोचने लगा ... (यह भी बताईये की आप ने कैसे विचार किया)

४. मैं उस के बारे में इस तरह से बताने लगा

५. मैं उस पर इस तरह से कार्य करने लगा

६. मैंने उस का जन्म इस तरह से होते देखा

अब दूसरा विषय या स्थिती लीजीये जिसे आप इस समय सामना कर रहे हैं और यही पाँच क्रम से हो कर चलीये। देखीये की किस तरह जीवन और उत्पादका का जन्म हुआ है।

स्थिती, विषय या विचार क्या था

१. "परमेश्वर इस विषय पर आप मुझे क्या बताना चाहते हैं?"

२. "परमेश्वर, इस स्थिती को मैं उस तरह देखूँ जैसा आप देख रहे हैं।"

३. परमेश्वर की आवाज और दर्शन पर विचार करीये।

४. परमेश्वर से पूछीये की वह किस तरह चाहता है की आप इस के बारे में बतायें। वह जो कहता है उसे लिख लें और जैसा वह बताता है उस तरह बोलने लगें।

५. परमेश्वर से पूछीये की क्या कुछ विशेष कार्य है, जो वह चाहता है की आप करें। उसे लिख लें और परमेश्वर के निर्देश अनुसार कार्य करीये।

६. परमेश्वर ने जो आप के द्वारा उत्पन्न किया है उसे लिख लें।

अन्त में प्रार्थना - धन्यवाद प्रभु, मुझे मेरी आत्मा में चल रही उत्पादका के बारे में सतर्क करने के लिये।

अध्याय ४

परमेश्वर के उत्पादक विचारों को प्राप्त करने की तैयारी

"चुप हो जाओ और जान लो.. (भजन ४६ : १०)"

"हे मेरे मन, परमेश्वर के सामने चुपचाप रह, क्योंकि मेरी आशा उसी में है (भजन ६२ : ५)।"

जब तक परमेश्वर के समक्ष आप अपने मनों को शांत नहीं कर लेते तब तक मनुष्य की आत्मा की उत्पादका या पवित्रात्मा नहीं प्राप्त हो सकती। जैसे भीतरी दबाव उत्पादकता को रोक देता है वैसे ही भीतरी शांति उसे छोड़ती है।

"मैं अपनी शांति तुम्हें देता हूँ..." हमारा प्रभु कहता है। मसीही होने के नाते हमें इस शांति को प्राप्त कर के इस में बने रहना है। इस के द्वारा हम अपने मनों में परमेश्वर की उत्पादका को प्राप्त कर सकेंगे। इस के बिना हम कुछ नहीं प्राप्त कर सकते।

परमेश्वर ने मनुष्य को इस तरह से रचा है की वह शांति में अधिक उत्पादक होता है। जब आप शांत होते हैं तो, दिमाग के दाहिने तरफ की नसें खुल जाती हैं और आप के शरीर के इस भाग में अधिक रक्त बहता है। अंतर्ज्ञान से प्राप्त बहाव दिमाग के दाहिने ओर से आता है। शांति, पवित्रात्मा का फल है जो परमेश्वर के साथ बने रहने से बढता है। परमेश्वर हमें विश्वास, आशा और प्रेम से भी भरता है और वह हमें आज्ञा देता है की हम उन बातों में बने रहें जो प्यारी, अच्छी, शुद्ध, शांतिदायक, हो। जब हम इन बातों में बने रहते हैं तो हमारा परमेश्वर खुश होता है और उसकी उत्पादका हम में स्वतंत्रता से बहती है।

हमें इन सब से बढ कर शांति में बना रहना है जो इन सब से उच्च है। गुस्सा, दोष भावना, डर और असुरक्षा की भावनासे शांति नहीं मिलती है। इन सब के बारे में आप इसी रचेता के द्वारा लिखित पुस्तक परमेश्वर से सलाह में पढ सकते हैं।

मैंने इस शांति को उस समय पाया जब मैंने परमेश्वर के साथ बातचीत करना प्रारंभ किया। मैं परमेश्वर के समक्ष अपनी परेशानियों के साथ जोता हूँ और वह मुझ से उन के बारे में बात करने लगता है। वह मुझे उस स्थिती को उसके नजरीएसो बताता है और वह किस तरह उस पर कार्य करेगा और उसकी शक्ति पर विश्वास करने के लिसे कहता है। जब मैं उसके विचारों को जान लेता हूँ, तो मुझ में शांति परमेश्वर की उत्पादका के साथ स्थापित हो जाती है।

मैं परमेश्वर के साथ बातचीत के विषय में अधिक नहीं बता पाऊँगा, क्योंकि मैंने मेरी पुस्तक परमेश्वर से बातचीत में इस के बारे में बताया है। परमेश्वर से बंधुत्व और परमेश्वर से बातचीत दो पुस्तकें हैं जिन्हें पढने की सलाह मैं आप को दूँगा। अगले दो अध्यायों में मैं संक्षिप्त में बताऊँगा की हम परमेश्वर की आवाज और दर्शन कैसे पा सकते हैं। आप अपनी बातचीत को लिख सकते हैं।

शांति पाने के कुछ तरीके

१. वह बात जो आप को शांति नहीं पाने दे रही है उस के बारे में परमेश्वर से प्रार्थना करीये। उस से पूछीये की वह

क्या चाहता है की आप उसके साथ करें। आप अपने प्रश्न और उसके उत्तर को एक पत्रे पर लिख लें। क्योंकि उसकी आवाज, स्वैच्छिक विचारों के बहाव के रूप में आती है, आप स्वैच्छिता पर ध्यान लगायें। प्रार्थना करते समय उसे अपने समक्ष उपस्थित पाईये। वह आप के साथ उपस्थित है।

२. हर शण परमेश्वर के समक्ष चलने का प्रयत्न करीये। भाई लॉरेंस द्वारा लिखित पुस्तक परमेश्वर की उपस्थिती का अभ्यास करना, पढीये। अभ्यास करीये की यीशु आप के साथ है। शांती से सारे दिन उसकी आराधना करीये और उससे बातचीत करीये।

३. प्रभु की उपस्थिती में शांति से समय व्यतीत करीये, उससे प्राप्त करीये। वह जो कहता है उसके विचारों का जवाब दीजीये।

४. याद रखीये की "प्रसन्नचित मन दवाई का काम करता है।" हँसते रहीये। अपने आप को अधिक गंम्भीरता से मत लीजीये। खेल की भावना से काम करीये।

५. एक समय में एक बात पर ध्यान लगाईये।

६. जो आप को शांत रखें उन बातों को अपनाईये।

७. दृष्टिगत विचारों को अपनाईये। इस अंतर्ज्ञान से प्राप्त बहाव का जवाब दीजीये।

८. अपना जीवन दूसरों को समर्पित करीये, क्योंकि जीवन खोने से जीवन प्राप्त होता है।

चार भावनायें जिन से शांती भंग होती है।

चार भावनायें हैं जिन से जीवन में शांती भंग होती है, गुस्सा, दोष भावना, डर और असुरक्षा। इन भावनाओं का आना गलत नहीं है, परन्तु इन्हें जल्द से जल्द परमेश्वर के समक्ष लाना चाहिये, ताकी हम उत्पादक जीवन व्यतीत कर सकें।

क्या आप इन भावनाओं को जल्द परमेश्वर के समक्ष उपस्थित कर रहे हैं या आप इन में फँस जा रहे हैं? इन के बारे में परमेश्वर के विचारों को जानने के लिये इस पत्राचार को करीये।

स्वयं पर लागू करना (अध्यापक के लिये टिप्पणी - इस में से कुछ कक्षा में करवाईये)। शांति प्राप्त करने के लिये इन समस्याओं में से कुछ पर आप परमेश्वर के जवाबों को लिखना चाहेंगे।

प्रभु आप मेरे गुस्से के विषय में क्या कहना चाहेंगे?

प्रभु दोष भावना के बारे में आप मुझ से क्या कहना चाहेंगे?

प्रभु मेरे डर के विषय में आप मुझ से क्या कहना चाहेंगे?

असुरक्ष के बारे में आप मुझ से क्या कहना चाहेंगे?

बाईबल पर ध्यान लगाना - शांतिपूर्वक ध्यान लगाना

बाईबल के अनुसार ध्यान लगाने का अर्थ यह है की आप परमेश्वर से प्राप्त करने के लिये तैयार हैं। जो

ध्यान लगाता है वह शांत रहता है, पवित्रात्मा पर निर्भर रहता है, और परमेश्वर पर ध्यान लगाये रखता है। आप भी इसी स्तर पर पहुँचना चाहेंगे ताकी परमेश्वर की उत्पादका का बहाव लगातार बना रहे।

ध्यान लगाने समय मुख्य पाँच तत्वों को पहचानना

इस भाग में आप ध्यान लगाने के मुख्य पाँच तत्वों को पहचानेंगे और आप यह भी जान लेंगे की यह आप के जीवन में कैसे उपस्थित हैं।

शारीरिक शांति, केंद्रित ध्यान, रहने देना, प्राप्ति और स्वैच्छिक बहाव, इन से ध्यान लगाना पहचाना जाता है। इन के विपरित है, शारीरिक तनाव, व्याकुलता, अधिक पकड़, कार्य करना और तार्किक विचार। इन को एक रेखा पर रख कर नापा जा सकता है। हर तौल्यरेखा पर उस स्थान पर चिन्ह लगायें जो आप के जीवन को दर्शाती है।

शारीरिक तनाव					शारीरिक शांति	
०	१	२	३	४	५	
व्याकुलता					ध्यान लगाया	
०	१	२	३	४	५	
अधिक नियंत्रण					छूट देना	
०	१	२	३	४	५	
चंचलता					उत्पत्ति	
०	१	२	३	४	५	
तार्किक विचार					स्वैच्छिक बहाव	
०	१	२	३	४	५	

सम्पूर्ण बाईबल में ध्यान लगाने की आज्ञा दी गयी है, और ये तत्व हमें ध्यान लगाने में सहायता करेंगे। मेरे साथ मिल कर इन को जाँचते हैं।

शारीरिक शांति पर बाईबल का उपदेश

"अतः जान लो की परमेश्वर के लोगों के लिये सब्त का विश्राम बाकी है। क्योंकि जिस ने उस के विश्राम में प्रवेश किया है, उसने भी परमेश्वर के समान अपने कामों को पूरा कर के विश्राम किया है। अतः हम उस विश्राम में प्रवेश करने का प्रयत्न करें ऐसा न हो की कोई जन उन के समान आज्ञा न मानकर गिर पड़े।" (इब्र ४:९-११)।

"और उसने किन से शपथ खाई की तुम मेरे विश्राम में प्रवेश करने न पाओगे? क्या केवल उन से नहीं जिन्होंने आज्ञा न मानी? अतः हम देखते हैं की वे अविश्वास के कारण प्रवेश न कर सकें।" (इब्र ३:१८,१९)।

ध्यान लगाने पर बाईबल का उपदेश

"इस कारण... हर एक रोकने वाली वस्तु और उलझानेवाले पाप को दूर करके और विश्वास के करता और सिद्ध करने वाले यीशु की ओर ताकते रहें (इब्र १२ : १,२)।"

"..... मैं तुम से सच सच कहता हूँ, पुत्र आप से कुछ नहीं कर सकता, केवल वह जो पिता को करते देखता है, क्योंकि जिन जिन कामों को वह करता है, उन्हें पुत्र भी उसी रीती से करता है। (युहन्ना ५ : १९)।"

चुप रहने के बारे में बाईबल का उपदेश

"चुप हो जाओ, और जान लो की मैं ही परमेश्वर हूँ। (भजन ४६:१०)।"

"किसी भी बात की चिन्ता मत करो, परन्तु हर एक बात में तुम्हारे निवेदन, प्रार्थना और विन्ति के द्वारा धन्यवाद के साथ परमेश्वर के समुख उपस्थित किये जाये। तब परमेश्वर की शांती, जो सारी समझ से परे है, तुम्हारे हृदय और तुम्हारे विचारों को मसीह यीशु में सुरक्षित रखेगी। (फिल ४ : ६, ७)।"

प्राप्त करने पर बाईबल का उपदेश

"तुम मुझ में बने रहो, और मैं तुम में। जैसे डाली यदि दाखलता में बनी न रहे तो अपने आप से नहीं फल सकती, वैसे ही तुम भी यदि मुझ में बने न रहो तो नहीं फल सकते। मैं दाखता हूँ: तुम डालीयाँ हो। जो मुझ में बना रहता है और मैं उस में वह बहुत फल फलता है, क्योंकि मुझ से अलग हो कर तुम कुछ भी नहीं कर सकते। (यूह १५: ४, ५)।"

स्वैच्छिक बहाव पर बाईबल का उपदेश

"जो मुझ पर विश्वास करेगा, जैसा पवित्रशास्त्र में आया है, 'उसके हृदय में से जीवन के जल की नदीयाँ बह निकलेंगी'। उसने यह वचन पवित्रात्मा के विषय में कहा, जिसे उस पर विश्वास करने वाले पाने पर थे; क्योंकि आत्मा अब तक न उतरा था, क्योंकि यीशु अब तक अपनी महिमा को न पहुँचा था। (यूह ७ : ३८, ३९)।"

शारीरिक शांति

- मेरा मन शांति से और सामान्य रूप से धडक्ता है।
- मेरी साँस शांत, आसान, सामान्य और पूर्ण है।
- मेरी माँसपेशियों में न तनाव है, न जकडन।
- मैं बेचैनी का अनुभव नहीं करता।
- मैं जब कुछ करता या कहता हूँ तो मैं निडरता से कहता हूँ।
- मैं तनाव, गर्मी का अनुभव नहीं करता या मेरे पसीने नहीं छूटते।
- मुझे उस समय गुसलखाने जाने का अहसास नहीं होता जब मुझे नहीं जाना हो।

- मैं भागों को उचित संबंधों में पाता हूँ।
- मेरा मुँह नहीं सूकता।
- मैं नींद में नहीं हूँ और ताजा अनुभव करता हूँ।
- मुझे सर दर्द नहीं है।
- मुझे कमर का दर्द नहीं है।
- मैं अस्वस्त अमुभव नहीं करता।
- मेरे कंधों, गर्दन या कमर में तनाव नहीं है।
- मेरा चर्म स्वस्त है।
- मेरी आँखों में पानी या आँसू नहीं हैं।
- मेरा पेट शांत है।
- मेरा आहार ठीक है।

ध्यान केंद्रित करना

- मेरा दिमाग बिखरा हुआ नहीं है।
- मैं जो कर रहा हूँ उसे समझने में अधिक समय नहीं लगता।
- मैं हर बात से सचेत रहता हूँ।
- यदी काम में रुकावट आ जाती है तो मुझे लौटने में कुछ दिक्कत नहीं होती।
- मेरा दिमाग स्पष्ट है।
- मैं केंद्रित हूँ।
- मैं निर्णय ले सकता हूँ।
- मेरा लक्ष और प्रमुखताएँ स्पष्ट हैं।
- मैं काम को आसान रखता हूँ, एक समय में एक काम।
- मेरा दिमाग स्थिर और केंद्रित है।
- मैं जो कार्य करता हूँ उस पर केंद्रित रहता हूँ।
- मैं ज्ञान विषयक हूँ।
- मेरा दिमाग विचलित नहीं है।
- रुकावटें मुझे परेशान नहीं करतीं।
- मैं जो करना चाहता हूँ उस पर ध्यान लगाता हूँ।
- यदी काम अधिक भी हो जाये तो मुझे लगता है की मैं शांती से और क्रमिक रूप से काम कर सकता हूँ।
- मैं सचेत रहता हूँ।
- मैं जो करने का निश्चय कर लेता हूँ उस पर अपना सारा ध्यान केंद्रित करता हूँ।
- मैं पूरी तरह डूब जाता हूँ।
- मेरा ध्यान विचलित नहीं होता।

- बातें स्पष्ट और साफ नजर आती हैं।
- मुझे अपने कार्य पर ध्यान लगाना आसान लगता है।
- कई कार्यों के बीच मैं अपने आप को बँटा हुआ नहीं पाता हूँ।
- मैं हर बात से सचेत रहता हूँ।
- मैंने जिस कार्य को प्रारंभ किया है उससे नहीं भटकता।
- मैं दूसरा कार्य प्रारंभ करने से पहले, पहले वाले कार्य को समाप्त करता हूँ।
- मैं वर्तमान में रहता हूँ, हर पल का पूरी तरह से अनुभव करता हूँ।
- मेरा दिमाग आयने की तरह है, जिस में शारीरिक और आत्मिक दुनिया स्पष्टता से दिखाई देती है।

चुप रहना

- मेरी इच्छाएँ मुझ पर हावी नहीं होतीं।
- चाहे मुझ में कुछ कमियाँ हैं फिर भी मैं अपने आप पर कठोर नहीं हूँ।
- मुझे ऐसा नहीं लगता की मुझे कुछ कार्य को करने के लिये मुझे जल्दबाजी करनी चाहिये।
- मैं उन कार्यों को भी करना चाहूँगा जो कठिन या समझ से परे हैं।
- मेरी कुछ समस्याओं के बारे में यह कहना ठीक है की "जीयो और जीने दो"।
- मैं मुख्य बातों की रूपरेखा बना सकता हूँ।
- उन बातों से जो बदल नहीं सकती, मैं परेशान नहीं होता हूँ।
- मैं चुप रह सकता हूँ।
- मैं लचीला हूँ।
- जब उन बातों से तुलना करो जो मुख्य हैं, तो मेरी कई इच्छाएँ उतनी मुख्य नहीं लगतीं।
- जब मैं काम कर लेता हूँ तो मैं चुप हो जाता हूँ और शांत हो जाता हूँ।
- मैं धैर्यवान हूँ।
- आने वाले कल या बीते हुए कल की समस्याओं से मैं परेशान नहीं होता।
- कई बातों को रहने देना ठीक है।
- मैं किसी भी समस्या को अपना सकता हूँ।
- मुझे ऐसा नहीं लगता की सब काम एकदम करना है।
- जब मेरे अनुसार काम नहीं होता, तो भी मुझे ऐसे नहीं लगता जैसे कुछ बुरा हो रहा हो।
- मैं उन बातों में नहीं उलझता, जो मुझे नहीं मिलती या जिन का कोई मतलब नहीं हो।
- मैं इन बातों से सचेत नहीं रहता की मुझे हर काम सही करना है या किसी पर छाप छोड़ना है।
- मुझे ऐसा नहीं लगता की मुझे हर किसी की सहमती या अनुमोदन चाहिये।
- मुझे ऐसा लगता है की मैं किसी बड़े काम या अवसर का एक हिस्सा हूँ।

प्राप्ती

- मुझे ऐहसास है की परमेश्वर मेरे अन्दर बह रहा है।
- मैं पवित्रात्मा पर निर्भर हो कर जी रहा हूँ।
- मैं पवित्रात्मा की उपस्थिती को स्विकार करता हूँ।
- मैं कामों को अपनी योग्यता पर नहीं करता।
- जब आवश्यक हो तो मैं एक वाक्य या एक शब्द की प्रार्थना करता हूँ।
- जब घमण्ड या स्वयं पर निर्भर की आत्मा मुझ में प्रवेश करती है तो मुझे पता चल जाता है।
- मैं अपने आप को ऐसे देखता हूँ जैसे किसी में कोई और भरा हुआ हो।
- मुझे पता है की मेरी शक्ति परमेश्वर से आती है।
- मुझे पता है की मेरी बुद्धि परमेश्वर से आती है।
- मुझे पता है की परमेश्वर मेरा सोत्र है।
- मैं वह हूँ जिस में कोई और बह रहा है।
- मुझे पता है की स्वयं से कुछ नहीं कर सकता।
- मुझे पता है की मेरी धार्मिकता मसीह से मिली है।
- मैं अपने आप को मसीह की धार्मिकता का चोगा पहने हुए देखता हूँ।
- मैं वह बर्तन हूँ जिस में कोई और भरा हुआ है।
- जब मैं जयवन्त होता हूँ तो मुझे पता है की यह मसीह की विजय है।
- जब मैं विफल होता हूँ तो मुझे पता है की मैं उस पर निर्भर नहीं था जो मुझ में रहता है।
- मैं बिना तनाव और मेहनत को काम करता हूँ।

स्वैच्छिक बहाव

- मैं स्वैच्छिकता की ओर जा रहा हूँ।
- मैं पवित्रात्मा के बहाव को अपने भीतर के गहरे बहाव के रूप में पहचानता हूँ। (यूहन्ना ७:३७ - ३९)।
- बहाव में रहने के लिये मैं तैयार हूँ।
- मैं डिब्बों में रहने से बेचैन हो जाता हूँ।
- तार्किकता के साथ स्वैच्छिक बहाव में बहना अच्छा है, बजाये केवल तार्किकता में बहने के।
- मैं भीतरी जवाबों से संतुष्ट हूँ।
- मैं स्वैच्छिक और स्वतंत्र अनुभव करता हूँ।
- मुझे ऐसा लगता है जैसे मैं बातों के बहाव में आ जाता हूँ।
- मुझे पता चल जाता है जब मैं बहाव में होता हूँ।
- काम करते समय मैं आवश्यक शिथिल हो जाता हूँ ताकी बहाव का अनुभव कर सकूँ।
- मैं अपने अंदर बह रही उत्पादकता के बहाव से सचेत हूँ।

- मैं शांत स्थानों को खोजता हूँ ताकी मेरी उत्पादता अधिक हो।
- मैं दूसरों के साथ स्वैच्छिक और शांत समय बिताने में संतोष अनुभव करता हूँ।
- मैं अपने आप को शांत कर, ध्यान केंद्रित करता हूँ और शिथिल हो जाता हूँ ताकी बहाव प्रारंभ हो सके।
- जब बहाव में होता हूँ तो मैं वह काम करता हूँ जो कर रहा था, ताकी उसे समाप्त कर सकूँ।
- मैं तब तक काम नहीं करता जब तक बहाव का अनुभव न कर लूँ।
- मैं उस समय काम प्रारंभ करता हूँ जब मैं उन का बहाव अपने अंदर अनुभव करता हूँ।
- जब मैं बहाव के अनुभव में रहना सीख लेता हूँ, तब मुझे लगता है की वे आसानी से हो रहे हैं।
- मुझे समझ है की जो कार्य स्थिर है वह बहाव के अनुभव से आते हैं।

अन्तिम प्रार्थना

"प्रभु, मेरे लिये ध्यान लगाना एक जीवनचर्या बन जाये।"

Stage One - Conception



The Holy Spirit will come upon you and the power of the most high will overshadow you; and you will conceive. (Luke 1:35, 31)

Stage one - Conception

पहला क्रम - प्राप्ति

"पवित्रात्मा तुझ पर उतरेगा, और परमप्रधान की सामर्थ तुझ पर छाया करेगी, और तू गर्भवती होगी (लूका १ : ३५, ३१)।"

अध्याय ५

परमेश्वर की आवाज को सुन कर मनुष्य की आत्मा की पहली इंद्रि को भरना

परिचय

आत्मिका से उत्पन्न उत्पादका का प्रारंभ और अंत परमेश्वर के अलौकिक कार्यों से होता है। परमेश्वर अपनी आत्मा को भेज कर हमारे मनो से बात करवा कर मन का विश्वास प्रारंभ करता है। वह अपनी आत्मा को भेज कर अपने वचनों को कहलवाता है। इस तरह वह अपने वादों को अलौकिक रूप से पूरा करता है। इस तरह आत्मिक उत्पादका परमेश्वर से ही प्रारंभ और अंत होती है। फिर भी हम कई तरह से इस में भाग लेते हैं। पहले, हम शांत हो कर सिन कर भाग लेते हैं (जैसा कि हम ने पिछले अध्याय में पढ़ा)। फिर जब हम उस का शब्द सुनते हैं तो उसे अपने मन में जन्म देते हैं और फिर उस के द्वारा अलौकिक रूप से उसे पूरा होने का इंतजार करते हैं।

इस अध्याय में हम इस तरह से आत्मिक उत्पादका को प्राप्त करने का क्रम सीखेंगे और परमेश्वर और मनुष्य के अभिनय को जाँचेंगे ताकी उसकी दैविका से हम इस संसार में अपने मकसद को पहचान सकें।

	इंद्रि	किस प्रकार प्रयोग करें	बाईबल में उदहारण	स्थिति
१.	भीतरी कान (यूह ५:३०)	परमेश्वर के रहमा को प्राप्त करना	उत्पत्ति १२:१-३	प्राप्ति
२.	भीतरी आँख (प्रका ४:१)	परमेश्वर का दर्शन पाना	उत्पत्ति १५:५,६	
३.	भीतरी दिमाग (लूका २:१९)	परमेश्वर के विचारों पर ध्यान लगाना	रोमि ४: २०, २१	अण्ड सेवन
४.	भीतरी इच्छा (प्रेरित १९:२१)	परमेश्वर के रहमा पर बोलना	उत्पत्ति १७ : ५	
५.	भीतरी भावनाएँ (१ राजा २१:५)	परमेश्वर के रहमा और दर्शन पर कार्य करता है	उत्पत्ति १७ : २३	
अन्त में नतीज	उस दर्शन की मृत्यु जिसे मैं नहीं ला पा रहा हूँ		उत्पत्ति १६ : २ उत्पत्ति १७: १८, १९	जन्म
	अलौकिक रूप में उस दर्शन का पुनर जन्म "समय के पूरा होने पर परमेश्वर उसे देता है"		उत्पत्ति २१ : १, २ उत्पत्ति ४ : ४ अ	

अब्राहम - एक उदहारण

अब्राहम एक उदहारण है जिस का विश्वास, उस के मन में परमेश्वर के कहे हुए वचन से उत्पन्न हुआ था। अब्राहम के विश्वास ने परमेश्वर की अलौकिक शक्ति को अपने निजी जीवन में प्राप्त किया और इस का असर सारे

युगों में इस संसार में देखा गया है। विश्वास उस समय उत्पन्न हुआ जब परमेश्वर उस के मन में बात करने लगा। निम्न दिये गये रिक्त स्थान में अब्राहम को कहे गये परमेश्वर के शब्दों को लिखीये।

उत्पत्ति १२: १-३ लिखीये

आप भी परमेश्वर की आवाज सुन सकते हैं।

इस युग में हम लोग तार्किकता से और अनुभव संबंधी विचारों से इतने बंधे हुए हैं की इस बात को मानना बिलकुल न मुमकिन लगता है की कोई सच में परमेश्वर की आवाज को सुन सकता है। परन्तु हम कई वजह से इस का मजाक नहीं उड़ाते। पहले, पूरी बाईबल में पुरुष और स्त्रि परमेश्वर की आवाज को लगातार सुनते आये हैं। दूसरा, कई महत्वपूर्ण लोग हैं आज की दुनिया में जो यह कहते हैं की उन्होंने परमेश्वर की आवाज को सुना है। अंत में, हम सब में एक भूख है की हम परमेश्वर की आवाज सुन सकें और अस से बात कर सकें।

बाईबल का विश्वासी, नये जन्में मसीह होने के नाते मैंने परमेश्वर से बात करने की बहुत कोशिश की। मैंने प्रार्थना करी, उपवास रखा, बाईबल पढ़ी और उसकी आवाज को सुनने लगा, परन्तु कुछ नहीं हुआ। कोई भीतरी आवाज नहीं थी जिसे मैं सुन सकता था। फिर परमेश्वर ने मुझे एक वर्ष का समय निश्चित किया जिस में मैं उसकी आवाज सुनने पर कई पुस्तकें पढ़ने लगा। उस समय परमेश्वर ने मुझे चार चाबीयाँ दीं, जिससे दो तरफा प्रार्थना के दरवाजे खुल सकते थे। मैंने पाया की यह न सिर्फ मेरे लिये कामयाब हुई परन्तु उन लोगों को भी इन से लाभ हुआ जिन को मैंने इन चाबीयों के बारे में बताया। इस से ९९ प्रतिशत लोगों ने अपने मसीही जीवन में परमेश्वर से बात करने का अनुभव प्राप्त हुआ, जिससे उन के जीवन बदल गये। यह आप के साथ भी होगा यदि आप इन चार चाबीयों का प्रयोग करें। यह सब हबक्कूक २:१,२ में मिलती हैं। मैं चाहूँगा की आप आगे बढ़ने से पहले इसे पढ़ लें।

चाबी # १ - हमारे मनो में परमेश्वर की आवाज स्वैच्छिक विचारों के बहाव की तरह लगती है। इसलिये, जब मैं परमेश्वर की ओर ध्यान लगाता हूँ तो मैं स्वैच्छिकता की ओर ध्यान लगाता हूँ।

बाईबल बताती है की - "यहोवा ने मुझ से कहा..." (हब २:२)। हबक्कूक परमेश्वर की आवाज पहचानता था। बाईबल इसे "धीमी और शांत आवाज" बताती है। मैं एक भीतरी सुनाई देनेवाली आवाज समझता था। कई बार इस तरह से परमेश्वर बात करता है। हम में से कई लोगों के लिये परमेश्वर की आवाज, स्वैच्छिक विचार, दर्शन, भावना या छाप, के रूप में आती है। कई बार ऐसा होता है की हमें गाड़ी चलाते में अचानक विचार आता है की हम किसी के लिये प्रार्थना करें? हम इसे परमेश्वर की आवाज मानते जो हम से किसी के लिये प्रार्थना करने को कह रही है। मेरा प्रश्न यह है की "गाड़ी चलाते में आप को परमेश्वर की आवाज कैसे सुनाई पड़ी?" क्या वह भीतरी

सुनाई देनेवाली आवाज थी या एक स्वैच्छिक विचार था? कई लोग कहते हैं की उन्हें परमेश्वर की आवाज स्वैच्छिक विचार के रूप में सुनाई पड़ती है।

इसलिये मैं स्वयं से कहता हूँ की, "शायद जब मैं परमेश्वर की आवाज सुनना चाहूँ तो मुझे स्वैच्छिक विचारों के बहाव को सुनना चाहिये। आत्मिक स्तर की बातचीत शायद, स्वैच्छिक विचारों, छापों, भावनाओं और दर्शनों के रूप में होती हैं।

बाइबल भी इसे बताती है। इब्रानि शब्द, पागा जिस का अर्थ बातचीत है, वह एचानक मुलाकात बी है। जैसे परमेश्वर हमारे मनो में लोगों को डालता है प्रार्थना करने के लिये, वह पागा के द्वारा ऐसा करता है, एक अचानक मुलाकात या विचार। इसलिये जब मैं परमेश्वर की ओर ध्यान लगाता हूँ तो मैं अचानक या स्वैच्छिक विचारों की ओर ध्यान देता हूँ। यदी मैं परमेश्वर के समक्ष शांति से प्रार्थना पूर्वक बैठूँ, तो मैं ने पाया है की जो स्वैच्छिक विचार आते हैं वह यकीन परमेश्वर की ओर से हैं।

चाबी # २ - परमेश्वर के विचारों और भावनाओं के बहाव को पहचानने के लिये मुझे अपने विचारों और भावनाओं को शांत करना होगा।

हबक्कूक ने कहा, "मैं अपने पहरों पर खड़ा रहूँगा, और गुम्मत पर चढ़कर ठहरा रहूँगा ... (हब २:१)।" हबक्कूक जानता था की परमेश्वर की शांत, भीतरी, स्वैच्छिक विचारों को सुनने के लिये उसे किसी शांत जगह पर जाना होगा। भजन संहिता ४६ : १० कहता है, "चुप हो जाओ और जान लो की मैं ही परमेश्वर हूँ।" जब हम अपने मन और दिमाग को शांत कर लेते हैं तो हम आत्मा के स्वैच्छिक विचारों का अनुभव कर सकते हैं।

मैंने अपने आप को शांत करने के कई रास्ते खोज लिये हैं, ताकी मैं परमेश्वर के स्वैच्छिक बहाव को पहचान सकूँ। कई लोगों के लिये परमेश्वर से प्रेम करने के लिये एक शांत आराधना का गीत गाना लाभदायक होता है। (२ राजाओं ३ : १५ देखिये)। जब मैं परमेश्वर के समक्ष शांत हो जाता हूँ (विचार, इच्छा और भावना), तब दैवी बहाव प्राप्त करता हूँ। जब मैं चुपचाप आराधना कर लेता हूँ, शांत हो जाता हूँ, तब स्वैच्छिक बहाव के लिये तैयार हो जाता हूँ। यदी विचार उन कार्यों के आते हैं जिन्हें मैं करना भूल गया हूँ तो मैं उन को लिख लेता हूँ और उन्हें जाने देता हूँ। यदी दोष भावना के विचार आते हैं तो मैं पश्चताप करता हूँ, भेड के लहूँ ले धुल जाता हूँ, उसकी धार्मिकता का चोगा पहन लेता हूँ और अपने आप को परमेश्वर के समक्ष बेदाग पाता हूँ।

जब मैं यीशु पर अपनी आँखों को लगाके रखता हूँ (इब्र १२:२), उसकी उपस्थिती में शांत हो जाता हूँ और मेरे मन में जो है वह उस के सात बाँटता हूँ, तो पाता हूँ की दो तरफा बातचीत प्रारम्भ हो जाती है। स्वैच्छिक विचार परमेश्वर के सिंहासन से बहने लगते हैं और मैं देखता हूँ की मैं सच में राजाओं के राजा के साथ बातचीत कर रहा हूँ।

यदी आपको परमेश्वर के शुद्ध वचन पाने हैं तो यह आवश्यक है की आप शांत हो जायें और सही ध्यान लगायें। यदी वह शांत नहीं है तो वह केवल अपने विचार ही प्राप्त करेगा। यदी उस का ध्यान यीशु पर केंद्रित नहीं है तो वह केवल वही विचार पायेगा जिस पर उस का ध्यान केंद्रित है। यदी आप ने अपना ध्यान यीशु पर लगा रखा है तो स्वैच्छिक विचार यीशु की ओर से होगा। यदी शुद्ध बहाव पाना हो तो अपने आप को शांत करो और यीशु पर

अपनी आँखों को टिका कर रखना है। यह राजा शांती से राजा की आराधना करने से होता है।

चाबी # ३ - जब मैं प्रार्थना करता हूँ तो अपनी आँखों को यीशु पर लगाये रखता हूँ, आत्मा में, सर्वशक्तिमान परमेश्वर के स्वप्न और दर्शन देखता हूँ।

पिछले पन्नों पर हम ने इस बारे में पढ़ा है। परन्तु हमें इसे और आगे बढ़ाना है। हबक्कूक कहता है, "मैं ताकता रहूँगा," और परमेश्वर ने कहा, "दर्शन की बातें लिख (हब २:१,२)।" यह एक दिलचस्प बात थी की हबक्कूक प्रार्थना करते समय दर्शन देखने जा रहा था। वह अपने मन की आँखें खोल कर आत्मा की दुनिया में देखने जा रहा था की परमेश्वर उसे क्या दिखाना चाहता है।

मैंने कभी भी अपने मन की आँखों को खोल कर दर्शन देखने की नहीं सोची। यही तो परमेश्वर चाहता था की हम करें। उसने मुझे मन में आँखें दी हैं। वह लालसा करने के लिये या विफलता देखने के लिये नहीं हैं। उन से हमें आत्मा की दुनिया में झाँक कर सर्वशक्तिमान परमेश्वर के कार्यों को देखना है। हमारे चारों ओर एक आत्मिक दुनिया काम कर रही है। यह दूतों, शैतानों, पवित्रात्मा, विश्वव्यापी परमेश्वर, और उसका विश्वव्यापी बेटा, यीशु, से भरी हुई है। कोई वजह नहीं है की मैं इसे न देखूँ, सिवाए मेरी तार्किक स्थयता के, जो मुझे यह बताती है की इस विश्वास नहीं करना है।

हमें देखना है। दानियल भी अपने दिमाग में दर्शन देख रहा था और उसने कहा, "मैं देख रहा था ... मैं देखता रहा मैं देखता रहा ... (दानि ७:१,९,१३)।" अब जब मैं प्रार्थना करता हूँ तो मैं यीशु को अपने समक्ष उपस्थित पाता हूँ, और उसे मुझ से बात करते हुए देखता हूँ, और वह मुझ से बातें करता है, और जो बातें उस के मन में हैं वह मुझे बताता है। कई मसीही जब देखेंगे तो वे यीशु को पायेंगे। यीशु इमानुएल है, परमेश्वर हमारे साथ। यह इतना आसान है। जैसे आप स्वैच्छिक विचार पाते हैं, वैसे ही आप स्वैच्छिक दर्शन पायेंगे। अप मसीह को अपने साथ आरामदेह मुद्रा में उपस्थित पायेंगे। यह दर्शन आप को इतनी आसानी से मिलेगा की आप उसे झटक देंगे, यह साच कर की यह आप का विचार है। (शक, शैतान का बहुत कीमती हथियार है कलीसीया के खिलाफ)। यदी आप इसके बारे में लिखने लगे तो यह विश्वास में बदल जायेगा, क्योंकि यह सर्वशक्तिमान परमेश्वर के द्वारा उत्पन्न हुआ है।

परमेश्वर अपने लोगों को दर्शन देता आया है। वह उत्पत्ति से ले कर प्रकाशितवाक्य तक करता आया है। प्रेरितों २ में उसने पवित्रात्मा को उँडेला तोकी हम लगातार स्वपनों और दर्शनों का बहाव प्राप्त कर सकें (प्रेरितों २:१-४)। यीशु जो हमारा उदहारण है, उसने इस योग्यता को सर्वशक्तिमान परमेश्वर के साथ नाता बनाये रख कर इस योग्यता को बताया। उस ने कहा की वह आप से कुछ नहीं करता परन्तु वही जो वह अपने पिता को करते देखता या सुनता है। (यूह ५:१९,२०,३०)। जीने का क्या शानदार तरीका है।

क्या हम उस दैवी बहाव में जी सकते हैं, जैसे की यीशु जीते थे? मैं इस पर विश्वास करता हूँ। यीशु मसीह की मृत्यु और पुनरुत्थान का एक मकसद यह था की वह परदा ऊपर से नीचे तक फट गया, और अब हम परमेश्वर के समक्ष जा सकते हैं और हमें यह आज्ञा मिली हुई है (इब्र १० : १९ - २२)। अब समय है की हम कलीसीया को वह लौटा दें जो उस का है।

कई लोग जो तार्किकता की परम्परा में इतने घिरे हुए हैं की उनको यह सब समझने में समय लग सकता है। वे मदद पाने के लिये इसी लेखक द्वारा लिखित पुस्तक परमेश्वर के साथ बातचीत पढ़ सकते हैं।

चाबी # ४ - पत्राचार, अपनी प्रार्थनाएँ और परमेश्वर के जवाबों को लिख लेने से, परमेश्वर की आवाज को सुनने की स्वतंत्रता प्राप्त कर सकते हैं।

परमेश्वर ने हबक्कूक से कहा, "दर्शन की बातें लिख दे, वरन् पटियाओं पर साफ साफ लिख दे ... (हब २:२)।" यह मैंने पहले कभी नहीं सोचा की अपनी प्रार्थनाएँ और परमेश्वर के जवाबों को, हबक्कूक की तरह लिख लूँ। यह परमेश्वर की आज्ञा है। यदी आप इस बात को बाईबल में खोजते हैं तो आप कई सैकड़ों अध्याय में यह मिलेगी (भजन संहिता, कई भविष्यवक्ता, प्रकाशितवाक्य)। फिर मैंने इस बारे में क्यों नहीं सोचा? मैंने इस विषय पर कोई उपदेश क्यों नहीं सुना?

मैंने इस क्रिया को पत्राचार का नाम दिया है और इस का प्रयोग करने लगा हूँ। इससे मैं परमेश्वर के भीतरी स्वैच्छिक बहाव को पहचानने लगा क्योंकि मैं कई घण्टों तक विश्वास में लिखने लगा, केवल इस विश्वास के साथ की यह परमेश्वर है। मुझे इसे जाँचने की आवश्यकता नहीं थी, क्योंकि मुझे पता था की जब बहाव समाप्त होगा तो मैं इस का परिक्षण कर सकता हूँ, इस बात के सक्तीन के साथ की यह पवित्रशास्त्र से जुड़ा हुआ है।

जब आप पत्राचार प्रारम्भ करेंगे, तो आप देखेंगे की यह कितना अद्भुत है। पहले शक आप को रोक सकता है, परन्तु आप इसे झटक कर इस विश्वास के साथ आगे बढ़ सकते हैं की परमेश्वर अपने बच्चों के साथ बात कर रहा है। इसे अधिक गम्भीरता के साथ मत लें। इसे एक खेल की तरह खेलें। जब आप गम्भीरता के साथ खेलेंगे, तो आप तनाव में आ जाएंगे और यह पवित्रात्मा के लिये रुकावट बन सकता है। जब हम अपने भार को छोड़ कर परमेश्वर के विश्राम में प्रवेश करते हैं, तब परमेश्वर स्वतंत्रता से बहता है (इब्र ४: १०)। इसलिये, अपने चेहरे पर एक मुस्कुराहट लाईये, आराम से बैठीये, अपना कागज और कलम निकाल लें, स्तुती और आराधना करते हुए परमेश्वर की ओर अपने ध्यान को केंद्रित करें, और उसके चेहरे को तलाशें। जब आप, परमेश्वर के लिये अपने प्रश्न को लिख लेते हैं, यीशु पर जो वहां उपस्थित है, अपनी आँखों को टिका कर रखीये, तो आप पायेंगे आप के प्रश्न को एक बहुत अच्छा जवाब मिलेगा। इस पर शक मत करीये, केवल लिख लीजिये। बाद में जब आप अपने पत्राचार को पढ़ेंगे तो आप देखेंगे की आप सच में परमेश्वर के साथ बात कर रहे हैं।

कुछ अंतिम टिप्पणीयाँ। इसे वही लोग कर सकते हैं जिन्होंने कम से कम नये नियम को पढ़ा हो (पूरी बाईबल पढ़ना अच्छा होगा)। इस के अलावा, हमें किसी आत्मिक नायकत्व के तैहत रहना चाहिये। जो पत्राचार आपने लिखा है उस पर कार्य करने से पहले अपने उपर किसी को सौंपें जो परमेश्वर के आधीन हो। इस कार्य को करने से पहले, इसी लेखक द्वारा लिखित पुस्तक परमेश्वर के साथ बातचीत पढ़ना उचित होगा। काश हबक्कूक का अनुभव आप का हो।

परमेश्वर की आवाज मनुष्य में परमेश्वर की उत्पादकता को जन्म देती है

परमेश्वर की उत्पादकता, उसकी आवाज के रूप में हमारे दिमागों में विचार के रूप में पतपन्न होती है। यह विचार अकसर स्वैच्छिक विचार की तरह आता है। इसलिये यह आवश्यक है की हम उत्पादकता के बहाव को धूँधते समय स्वैच्छिकता की ओर ध्यान लगायें। यदी हमारे दिमाग में कोई विचार आता है तो यह अच्छा होगा की हम उस पर कुछ समय बितायें, क्योंकि यह हमारी समझ से कई अधिक अच्छा हो सकता है।

भीतरी आवाज़ का परिक्षण

यह जानने के लिये की बहाव शुद्ध है, हमें स्वैच्छिता की ओर ध्यान लगाते समय अपनी आँखों को यीशु पर लगाना होगा। निम्न दिये गये चित्र से आप को मदद मिल सकती है यह पहचानने में की विचारों का बहाव परमेश्वर की ओर से है या नहीं।

क्योंकि परमेश्वर की आवाज़ अंतर्ज्ञान के रूप में होती है, इसे परख लेना आवश्यक है। पहले इसे पवित्रशास्त्र के साथ परखना होगा। हमें इस का जन्म, इस का विषय और फल को परखना है। निम्न दिये गये चित्र से आप को मदद मिल सकती है यह पहचानने में की विचारों का बहाव परमेश्वर की ओर से है या नहीं।

स्वयं	शैतान	परमेश्वर
जन्म को ढूँढीये (आत्मा को परखें - १ यूह ४:१)		
ध्यान लगाने से उत्पन्न। विचारों का उत्पन्न होना।	अचानक मानसिक विचार। क्या दिमाग रिक्त था? क्या विचार रुकावट बन रहा था?	भीतर अनुभव किया गया। बाद में विचार बना। क्या दिमाग यीशु पर केंद्रित था?
विषयों को परखें (शब्दों को परखें - १ यूह ४:५)		
जिन बातों को मैंने सीखा है, उन पर फिर से विचार करना।	विपरित, विनाशकारी, जबर्ण, डरावने, दोष लगानेवाला, परमेश्वर के स्वभाव के विरुद्ध। वचन के विरुद्ध। विचार परखने से डरता है।	शिक्षा देनेवाला, प्रोत्साहन देनेवाला, दिलासा देनेवाला विचार परखने के लिये तैयार है।
उस के फल को देखें (फल को परखें - मत्ति ७:१५, १६)		
बदल सकते हैं।	डर, मजबूरी, बंधवा, उत्सुक्ता, विचलित।	विश्वास को बढ़ाता है, शक्तिशाली, शांती लाता है, अच्छा फल, जाग्रुक्ता, ज्ञान

भीतरी आत्मिक अनुभव का फल यह है की प्रेम, मेल जोल, चंगाई और पूर्णता में उन्नती होती है। वे बातें जिन से आप के जीवन में बड़ा बदलाव आने वाला है, उन को आप अपने उपर किसी आत्मिक सिद्ध पुरुष को बतायें जो आप को सही सलाह दे सकता है। यह परमेश्वर की ओर से हमारे लिये सुरक्षा के लिये दिये गये हैं। आत्मिक सिद्ध पुरुष हमें सुरक्षित रखेगा और हमें शैतान के और स्वयं के अनुभवों से बचायेगा।

बईबल हमें बताती है की एक दूसरे के आधीन रहो (इपि ५:२१), विशेष रूप से उन के लिये जो हमारे प्राणों पर नज़र लगाये बैठे हैं (इब्र १३:१७)। दो या तीन लोगों के मुख से इसे प्रमाणित करें। यदि परमेश्वर ने मेरे जीवन के लिये कोई महत्वपूर्ण निर्णय लिया है तो मैं उसे दो या तीन लोगों को बताता हूँ, और उन से कहता हूँ की वे उस बात पर प्रार्थना कर के बतायें की परमेश्वर ने उन से इस बारे में क्या कहा है। मैं हम चारों की सहमती के लिये रुका रहता हूँ। यह मेरे लिये पिछले दस वर्षों से बहुत अच्छा सुरक्षा कवच बना हुआ है।

अपने जीवन में आत्मिक कवच को बनाना

जब आप सुरक्षा कवच बनाना चाहें तो पहले यह जान लें की परमेश्वर ने आप के जीवन में आपके पती, आपके पादरी, आप के नियुक्ति करनेवाले को पहले से ही इस कार्य के लिये रखा हुआ है। इन के अतिरिक्त आप किसी और को भी अतिरिक्त कवच के लिये स्थापित करना चाहेंगे (उन की सहमती के साथ, जिन्हें परमेश्वर ने आप के जीवन में पहले से ही नियुक्त किया हुआ है)। यदी ऐसा है तो आप को परमेश्वर से प्रार्थना कर के पूछना होगा की वह व्यक्ति कौन हो सकता है। वह औसा व्यक्ति होना चाहिये जो (१) बाईबल का जानकार हो (२) परमेश्वर की आवाज सुन सकता हो (३) दोस्त है (४) वह स्वयं दूसरों के आधीन हो और (५) आप के साथ इस रिश्ते में बंधने को तैयार हो।

अपने दर्शन पर ध्यान देना - तीन उचित केंद्र

जब आप स्वैच्छिता की ओर बढ़ते हैं तो यह जान लेना आवश्यक है की आप की आँखें किस पर केंद्रित हैं। यदी आप अपने आप पर केंद्रित हैं तो बहाव आप के मन से आयेगा। यदी आप किसी विषय के बारे में केंद्रित हैं तो बहाव विषय पर आयेगा। यदी आप यीशु पर केंद्रित हैं तो बहाव यीशु से आयेगा। सिद्धांत यह है की बहाव वहाँ से आता है जहाँ पर आप केंद्रित हैं। इसलिये यह आवश्यक है की आप अपनी आँखों को यीशु पर केंद्रित करें। यदी आप के पास कोई समस्या है जो आप उस के समक्ष रखना चाहते हैं तो उस इस समस्या को सुलझाते हुए देखीये। वह क्या करते और कहते हैं इस पर ध्यान लगाईये, तब आप के पास अनुग्रह के सिंहासन से शुद्ध जवाब पहुँचेगा।

उत्पादका के स्तर पर पुनर दृष्टि

सब से कम उत्पादक व्यक्ति वह होता है जिस ने अब तक स्वैच्छिक बहाव का अनुभव नहीं किया है। वह अब तक अपने दिमाग के विचारों में जी रहा है। अगला उत्पादका का स्तर वह होता है जिस में वह व्यक्ति स्वैच्छिता में जीना सीख लेता है। सब से उच्च स्तर की उत्पादका वह होती है जिस में व्यक्ति अपनी दृष्टि यीशु पर लगाये रहता है (इब्र १२:२), जब वह स्वैच्छिता पर ध्यान लगाता है। यह सर्वशक्तिमान परमेश्वर की उत्पादका को दर्शाता है। केवल मनुष्य के मन की उत्पादका से संतुष्ट मत होईये। परमेश्वर के मन की उत्पादका को प्राप्त करीये।

परमेश्वर के द्वारा वृद्धि पाना

परमेश्वर कहता है की उस की राहें हमारी राहें नहीं और उसके विचार हमारे विचार नहीं। इसलिये जब हम उसकी आवाज को सुनते हैं, तो हम पाते हैं की वह चाहता है की हम कार्यों कुछ अलग सा करें। वह उन बातों पर ध्यान डलवाता है, जिसे हम समझते हैं की हम उस पर ध्यान डाल चुके हैं। कई बार तो वह ऐसे कार्य करवाता है जो बेतुके से लगते हैं। परन्तु यह हमेशा सही होगा की हम उसके निर्देशों और हमारे जीवन के लिये उस का क्या लक्ष्य है उसका पालन करें।

निम्न दिये गये पत्राचार के अभ्यास को, जीवन के हर क्षेत्र में यीशु के दिये गये निर्देश से भरीये।

पत्राचार के द्वारा लक्ष निर्धारित करना

प्रिय प्रभु यीशु, वे क्या लक्ष हैं जिन पर आप चाहते हैं की मैं अपना ध्यान लगाऊँ?

मेरे परिवार के जीवन में

मेरे आत्मिक जीवन में

मेरे कार्य में

मेरे शरीर/ स्वास्थ्य का ध्यान रखने के बारे में

निजी रिश्तों में

आर्थिक व्यस्था के बारे में

मंत्रित्व में

गहन पत्राचार का कार्य पत्रा

इस कार्य पत्रे पर आप परमेश्वर से विशेष समस्या या लक्ष के बारे में पूछेंगे। पहले प्रश्न का जवाब मिलने के बाद आप दूसरे प्रश्नों का पत्राचार करेंगे, जिससे आप उस का जवाब पा लेंगे।

१. प्रभु, क्या आप सफाई से मुझे यह बतायेंगे की अगले छः महिनो में मुझे क्या करना है, मेरा लक्ष क्या है (या वह क्षेत्र जिस में मुझे कार्य करना है)?

२. प्रभु, आप क्यूँ चाहते हैं की मैं इस लक्ष को प्राप्त करूँ (या इस क्षेत्र पर केंद्रित होऊँ)?

३. प्रभु, यदी मैं सफल होता हूँ तो इस का नतीजा क्या होगा?

४. प्रभु, आप किसे सफलता मानते हैं? एक अच्छी सफलता? एक लाजावाब सफलता? विशेष रूप से बतायें।

५. प्रभु, इस लक्ष को पाने के लिये आप अपनी इच्छा बतायें।

६. प्रभु, इस लक्ष को प्राप्त करना, मेरे जीवन के कई लक्षों को प्राप्त करने में किस तरह उपयोगी है?

७. इस लक्ष को प्राप्त करने के लिये मुझे क्या दाम चुकाना होगा?

ॢ. प्रभु, यदी मै सफल न हुआ तो क्या होगा?

९. प्रभु, इस लक्ष को प्राप्त करने के लिये मुख्य कदम क्या उठाने चाहिये? हर कदम के लिये क्या कोई निश्चित समय है?

१०. इस कार्य को सफलता पूर्वक समाप्त करने के लिये क्या अडचने हैं? इन पर कैसे काबू किया जा सकता है?

११. आज आप क्या चाहते हैं की मैं करूँ, ताकी मैं इस लक्ष को प्राप्त करना प्रारम्भ करूँ?

१२. प्रभु, कृपया मुझे इस लक्ष का साफ दर्शन दिखाईये (जो दर्शन परमेश्वर आप को दिखा रहे हैं, उसे लिख लीजिये)।

मनुष्य के द्वारा वृद्धि पाना: तूफानीमस्तिष्क की क्रिया

हम न केवल परमेश्वर से वृद्धि प्राप्त करते हैं, परन्तु हम मनुष्य से भी वृद्धि प्राप्त करते हैं। कई लोगों की सलाह में सुरक्षा है। हमें दोनों, मसीह की और मसीह की देह की आवश्यकता है। कोई भी एक दूसरे की जगाह नहीं ले सकता।

आप पूछ सकते हैं की, "परमेश्वर मुझ से सीधे बात क्यों नहीं करता? मुझे अपूर्ण मनुष्यों के पात्रों के पास जाने की केया आवश्यकता है?" अच्छे प्रश्न है। इस के जवाब का कुछ अन्श यह हो सकता है की अकसर हमारा केंद्र सीमित रहता है। हम समस्या को केवल एक ही दृष्टिकोण से देखते हैं, जहाँ परमेश्वर के पास कोई और रास्ता नहीं बचता हमारे पास पहुँचने के केवल इस के की वह हमें अचेत अवस्था में डाले, जो पवित्रवचन के अनुसार अकसर नहीं होता।

इसलिये परमेश्वर ने हमें एक दूसरे को दिया है, जिस से हम वृद्धि पा सकते हैं, इस समूहिक क्रिया को हम तूफानी विवाद कहते हैं।

तूफानी मस्तिष्क का सामान्य विचार

१. तूफानी विवाद कि सभा एक उत्पादक सभा है जिस में कई विचारों की सूची उत्पन्न होती है, जिन्हें बाद में क्रम में डाल कर समस्याओं का समाधान निकाला जा सकता है।
२. तूफानी मस्तिष्क की सब से बड़ी बहूमूल्यता यह है की यहाँ पर सामान्य सभा से कई गुणा अच्छे विचार उत्पन्न हो सकते हैं।

तूफानी विवाद के लिये कुछ मौलिक नियम

१. निर्णय या समालोचना करना मना है।
२. स्वतंत्रता से बात चीत का स्वागत है।
३. परिमाण लाने की कोशिश करो।
४. जैसे जैसे विचार आते जाते हैं, वैसे वैसे उन्हें मिला कर सुधारते जाईये।

तूफानी विवाद के लिये कुछ और अतिरिक्त मार्ग दर्शक

१. सामान्य बनाने के बजाये, अपनी समस्या को विशेष बनाईये।
२. तूफानी विवाद को न्याय के बजाये, समस्या का समाधान पाने के लिये विचारों के लिये प्रयोग करीये।
३. तूफानी विवाद की सभा के लिये कम से कम १२ लोगों की आवश्यकता होगी। सभा का समय ३० मिनट का हो

सकता है।

४. तूफानी विवाद की सभा का प्रारंभ उपर बताये गये चार नियमों को बता कर करीये। उन्हें एक विज्ञापनपत्र पर लिख कर दिवार पर चिपका दें।

५. इस सभा को परिपूर्ण के माहोल में लाने के बजाये उसे हँसमुख बनाईये।

६. उन विचारों को प्रोतसाहन दीजीये जो पहले के विचारों से उत्पन्न हुए हैं। उन विचारों को प्रोतसाहन दीजीये जो दूसरों के विचारों की उत्पादका हो।

७. एक ऐसे व्यक्ति को नियुक्त कीजीये जो इस में भाग न ले परन्तु जो विचार उत्पन्न हो रहे हैं, उन को लिखता जाये।

तूफानी विवाद क्यों कार्य करता है

१. एक दूसरे के विचारों से उत्पादका उत्पन्न होती है।

२. अकेले के बजाये समूह में अधिक विचार निकलते हैं।

३. जब हम विचार देने के लिये किसी के साथ बराबरी करना चाहते हैं तो हमारी क्षमता ५०% बड़ जाती है।

४. हर विचार को मान लेना मनुष्य के चरित्र के लिये उपहार है।

कक्षा के समय स्वयं पर ध्यान रखने वाली बातें

तूफानी विवाद के नियमों को बताईये। पूरी क्रिया को दोहरा कर उस पर विवाद करीये। ऐसा विषय चुनिये जो सब को पसन्द हो। एक विषय यह हो सकता है, "घर में बात चीत अधिक बडाने के तरीके।" एक समूह जिन के सात में काम कर रहा था, वे ३० मिनट में १०० से अधिक तरीके निकाल सके। हम ने हर व्यक्ति को इस की एक प्रतिलिपी भी दी।

आप तूफानी विवाद के शांत वातावरण का आनंद लेंगे। इस अध्याय के अंत में वर्ग पत्रा दिया गया है, उसके हिसाब से अपने वर्ग डालीये।

गर्हकार्य के लिये स्वयं को क्या करना है

यदी आपने पत्राचार नहीं किया है, तो घर जा कर लिख लीजीये। आप के पत्राचार में से आप किसी विषय पर आप विचार डालना चाहेंगे। इस सप्ताह दूसरों के साथ मिल कर तूफानी विवाद की क्रिया को दोहराईये, ताकी आप किसी एक लक्ष की ओर जो सकें। इस अध्याय में से कुछ भीतरी दृष्टि या प्रश्न जो उत्पन्न हुए हैं, उन्हे नीचे रिक्त स्थान में लिख लें। उत्पत्ति १२:१ से २२:१९ तक पढीये। अब्राहम के विश्वास की कहानी की उन्नती पर ध्यान दीजीये। मुख्य बातों को यदी आप लिखना चाहें तो लिख सकते हैं।

तूफानी विवाद के बाद पत्राचार

तूफानी विवाद से आप को कई विचार मिलेंगे जिन्हें छांटना होगा। छांटने की एक अच्छी जगह आप का पत्राचार है। इन को आप परमेश्वर के समक्ष रख कर देख सकते हैं की वह इन के बारे में क्या कहता है। वह आप को बतायेगा की किन को रखना है, और किन को छोड़ना है, परन्तु ध्यान रखीये की आप केवल उन पर केंद्रित मत होईये जिन्हें आप परमेश्वर के समक्ष ला रहे हैं। उस विषय को परमेश्वर के समक्ष रख कर अपना ध्यान परमेश्वर पर केंद्रित करीये। तब आप को शुद्ध जवाब मिलेगा।

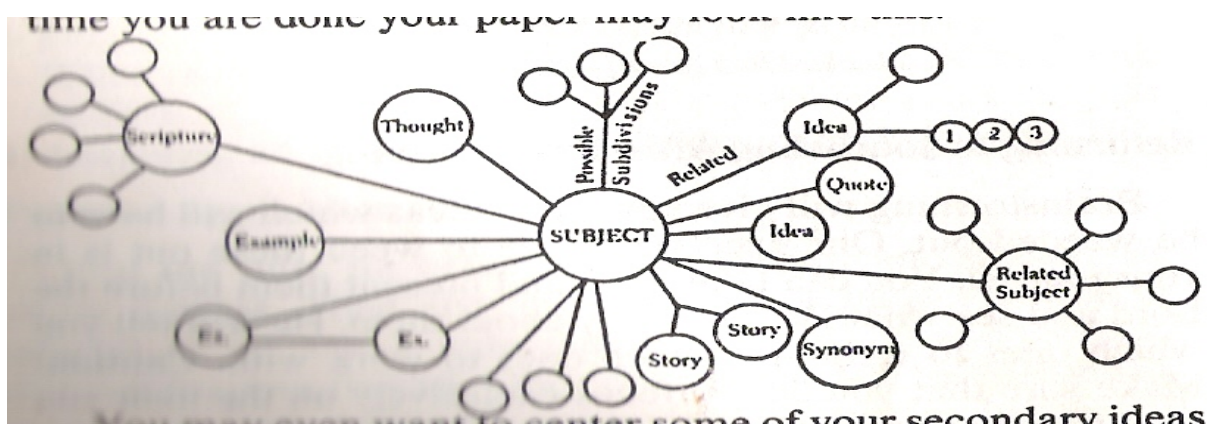
यदी आप ने कक्षा में घर पर बातचीत को अधिक करने के विषय में तूफानी विवाद किया होतो आप उन पर भी पत्राचार कर सकते हैं।

तूफानी विवाद क्रिया के दो भेद

तूफानी विवाद को कई भेद हैं जिन पर हम चर्चा कर सकते हैं, परन्तु इस समय हम केवल दो के बारे में बतायेंगे। एक को हम कहेंगे, "शाखा बनाना" और दूसरे को हम कहेंगे, "कहानी का पट"।

१. शाखा बनाना

तूफानी विवाद की क्रिया के इस भेद में आप अपने विषय पर अपने विचारों को प्रारंभ के पत्रे पर लिखने के बजाये आप पत्रे के बीच में, छोटे घेरे के बीच में लिखेंगे। जब आप को इस के संबंद में कोई विचार आता है, तो आप एक रेखा कोबाहर की ओर खींचेंगे, और उस विचार को लिख कर उसके चारों ओर एक गोलाकार बना दीजिये। दूसरे विचार के बारे में आप को दो या तीन विचार आ सकते हैं तो आप रेखा खींच कर इन नये विचारों को लिख कर, हर विचार के चारों ओर गोला बना दें। फिर से अपने पुराने विचार की ओर लौटिये और तूफानी विवाद की क्रिया प्रारंभ करीये। जब आप पूरी क्रिया कर चुके होंगे, तब तक आप का पत्रा कुछ इस तरह से दिखेगा:



आप अपने कुछ नये विचारों को भी मध्य विचार बनाना चाहेंगे, जिसे आप दूसरे पत्रे पर कर सकते हैं।

तूफानी विवाद की सूची बनाने के लिये जो विचार आप को आते हैं, उन्हें लिख लें। इस नयी क्रिया के दो लाभ हैं। पहला, चित्र को देख कर आप कई दिशा में जा सकते हैं और दूसरा, एक दूसरे से संबंधित विचारों को जोड़ा जा सकता है।

एक बार जब तूफानी क्रिया समाप्त हो जाये तो हर विचार, पवित्रवचन, कहानीयों, उद्धारणों वगैरा को प्रार्थनापूर्वक चुनिये, ताकी आप के मन में आप की इंद्रियाँ साक्षी दें और इन के साथ कार्य करना प्रारंभ कर दें।

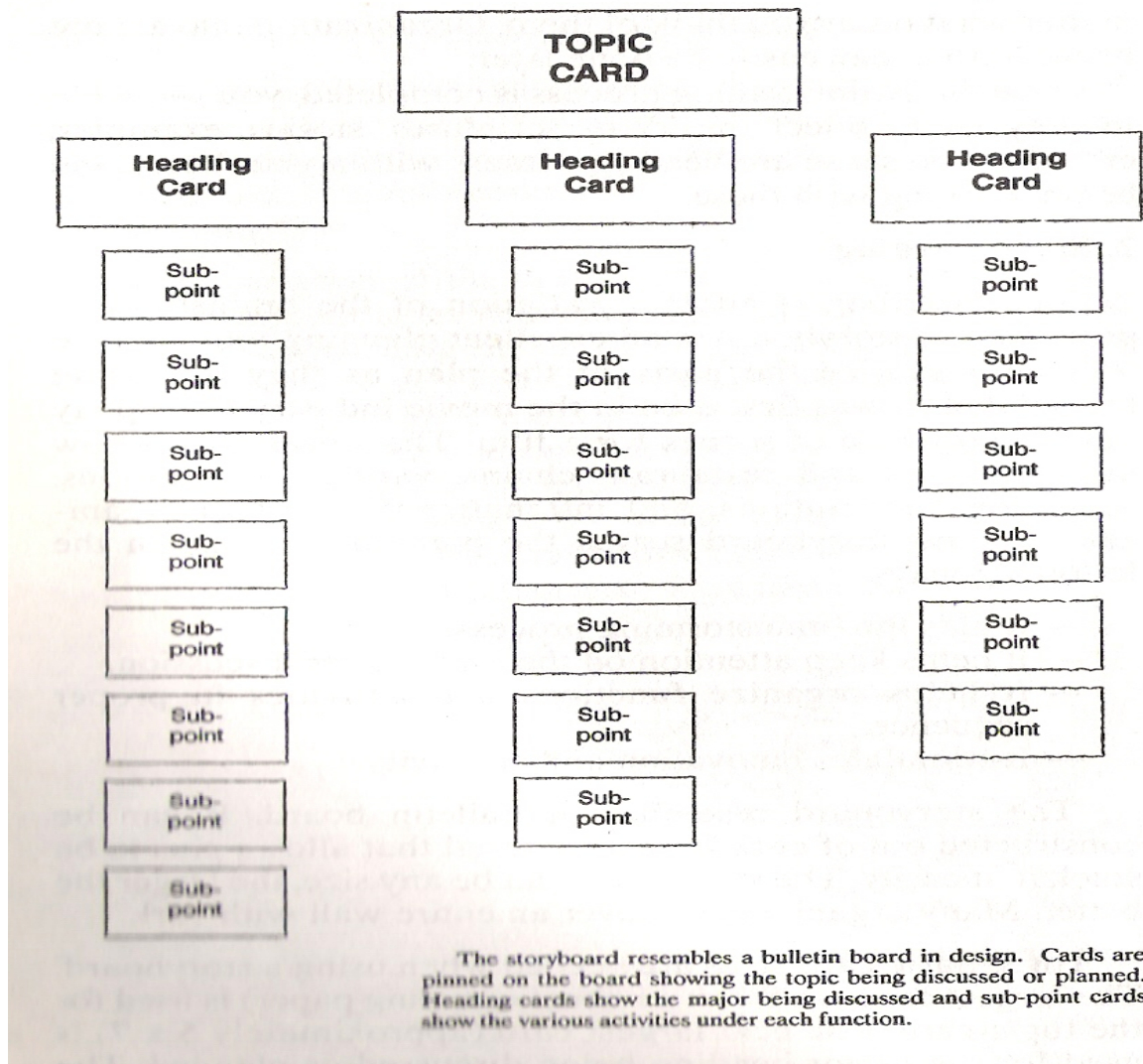
२. कहानी पट

तूफानी विवाद क्रिया का एक और भेद कहानी पट है। कहानी पट, योजना की एक अच्छी क्रिया है जिस में हम योजना के विभिन्न भागों को देख सकते हैं। इस का प्रयोग पहले फिल्म बनाने में किया गया था, जिस के द्वारा फिल्म का अनुक्रम डाला जाता था। कहानी पट का उपयोग आज कल होटलों, शिक्षा के स्थानों और मसीही संस्थाओं में किया जा रहा है। कहानी पट का प्रयोग योजना की क्रिया में निम्न बताये अनुसार किया जा सकता है:

- यह तूफानी विवाद की क्रिया को मदद करता है।
- यह हमारा ध्यान उस विषय पर बनाये रखता है, जिस पर विवाद हो रहा है।
- इस की मदद से हम सम्मेलनों और कार्यों को सही अनुक्रम से कर सकते हैं।
- यह उत्पादता बढाता है।

कहानी पट सीचना पट की तरह होता है। यह गत्ते या ऐसी सामगरी से बनता है जिस में पिनें आसानी से घुसा सकें। कहानी पट किसी भी आकार का हो सकता है। जितना बडा हो उतना अच्छा। कई समस्थाएँ सारी दिवार को गत्ते से ढंक देती हैं।

कहानी पट का प्रयोग करते समय, तीन आकार के कार्डों की आवश्यकता पडेगी। सब से बडा कार्ड (८ १/२ x ११ पत्रे का टंकक कागज) का प्रयोग विषय कार्ड के रूप में प्रयोग होगा। दूसरा बडा कार्ड (५x७) का प्रयोग मुख्य शीर्षक लिखने के लिये। छोटे कार्ड (३x५) का प्रयोग, शीर्षक के छोटे विषयों (अधीन शीर्षक) के कार्यों को लिखने के लिये। निम्न चित्र देखीये।



विषय कार्ड

शीर्षक कार्ड
अधीन शीर्षक

शीर्षक कार्ड
अधीन शीर्षक

शीर्षक कार्ड
अधीन शीर्षक

कहानी पट सूचना पट की तरह होता है। उस पर कार्डों को पिन के द्वारा चिपकाया जाता है। सब से ऊपर विषय कार्ड होता है, उस के नीचे शीर्षक कार्ड और उन के नीचे अधीन शीर्षक कार्डों को लगाया जाता है।

तूफानी विवाद के जो नियम बताये गये हैं, उन का प्रयोग कर के कार्डों को उन के उचित स्थानों पर लगाया जा सकता है। आप को पहले मात्रा देखनी है, उत्तमता बाद में जाँच सकते हैं। जैसे की चित्र में बताया गया है उसी प्रकार से विषयों को कहानी पट पर लगाईये।

जब तूफानी विवाद समाप्त हो जाता है, तब कहानी पट पर के विचारों को जाँचा जाता है, योजना के अनुक्रम

और स्थान के अनुसार। योजना में वे कहाँ ठीक बैठेंगे उसके मुताबिक स्थानों को बदला जा सकता है।

आने वाले कुछ सप्ताहों के लिये कक्षा में कार्य

आप कहानी पट के तूफानी विवाद के विचार को ले कर कक्षा में विचारों को बडाना चाहेंगे। याद रखीये की ऐसा विषय चुनें जो सब को आकर्षित करे। कुछ विषय यह भी हो सकते हैं, "उपद्रवि बच्चों को कैसे संभाला जाये," या "प्रभु की ओर आप के बच्चों कैसे सौंपा जाये," या हर पती या पत्नी के लिये, "प्रेम को कैसे अनन्तकाल तक रखा जाये।" इस मे आप और कुछ सामान्य आकर्षण के विषय डाल सकते हैं।

निजी अनुभव

क्योंकि इस अध्याय में हम परमेश्वर की आवाज द्वारा अपनी आत्मा की पहली इन्द्री को भरने के बारे में बात कर रहे हैं, तो मैं आप को अपना एक उदहारण बताता हूँ, की कैसे परमेश्वर के कहे हुए वचन से, कठिन समय में मुझे मन का विश्वास दिया।

जहाँ में पादरी का काम कर रहा था, उस कलीसीया के कुछ लोग मेरे पास एक लिखित पत्र ले कर आये जिस में यह निवेदन था की, जब तक वे आपस की कुछ कठनाईयों को नहीं सुलझा देते, मैं छः सप्ताह के लिये पादरी पद से हट जाऊँ। जब मैंने इस विषय में परमेश्वर से पूछा तो उस ने मुझे कहा की वह मुझे कलीसीया के अधिकारी पद से नहीं हटायेगा, और मुझे यह पद नहीं छोडना चाहिये। जब मुझे मेरे उपर के आत्मिक अध्यक्ष से भी इस बात की पूर्ति मिली तो मैं रहमा में चलने लगा।

मेरे चारों ओर जब तूफान बडने लगा तो मैंने पाया की इन छः सप्ताहों में मुझे जीवन के ऐसे भीतरी ज्ञान मिला जैसा की मैं फिर कबी नहीं पा सकता था। परमेश्वर ने मेरे सामने पवित्रवचन को अविश्वासनीय रीती से खोला, जिस से विश्वास की एक नीव डल गयी जो मैं अपने सारे जीवन में प्रयोग कर सकता हूँ। ये सच उन के जीवन में भी कार्य कर रहे हैं, जिन के साथ मैंने इन्हें बाँटा है। इन में से कुछ सच इस पुस्तक में भी बताये जा रहे हैं।

छः सप्ताह के बाद परमेश्वर ने मुझ से कहा की मैं पादरी पद पर बना रहूँ, परन्तु मैं इसे छोडने की सोच रहा था। परन्तु दो महिनों के बाद जब चंगाई और पुनर निर्मा प्रारम्भ होने लगा तो परमेश्वर ने मुझे यह पद छोडने को कह दिया। मेरे उपर के आत्मिक अध्यक्ष से भी इस बात की पूर्ति मिली तो मैंने यह पद छोड दिया। मेरे पास और कोई काम नहीं था। मैंने अपने आप को परमेश्वर के हाथों में पाया। परमेश्वर ने मुझ से कहा की वे मेरे लिये एक शिक्षा की प्रचार सभा खोलना चाहेंगे। आने वाले महिनों में परमेश्वर का ऐसा कार्य मैंने देखा जैसा की कोई मनुष्य नहीं कर सकता था। उन्होंने मेरे मन की इच्छा, शिक्षा प्रचार सभा को मुझे दिया। परमेश्वर की रहमा ने मुझे कठिन समय में उन्नती प्रधान करी।

स्वयं पर लागू जाँचसूची जब तूफानी विवाद में हों

एक समूह बनाने के नियम: (हाँ या ना में जवाब दीजीये)।

- १. हर कोई जो इस में भाग लेता है उसके लिये प्रलोभन है।
- २. हम सोचने के लिये, समय और स्थान नियुक्त करते हैं।
- ३. सभा और सोचने का समय संतोष जनक था।

- ४. एक साथ विचार करने के बाद हम लोग जा कर अकेले में सोचने लगे।
- ५. हम फिर से मिले और एक संतोषजनक नतीजा निकाल लिया।
- ६. हम ने विवाद नहीं किया।
- ७. हम ने तूफानी विवाद का प्रारंभ, चार मुख्य नियमों को समझा कर किया। हम ने इन नियमों को पट पर लिखा।
(निर्णय या समालोचना करना मना है, स्वतंत्रता से बात चीत का स्वागत है, परिमाण लाने की कोशिश करो, जैसे जैसे विचार आते जाते हैं, वैसे वैसे उन्हें मिला कर सुधारते जाईये।)
- ८. हम ने समस्या को सामान्य बनाने के बजाये विशेष बनाया है।
- ९. जो समस्याओं को हम ने तूफानी विवाद के लिये चुना, वह नयाय के बजाये विचार ढूँढने के लिये थीं।
- १०. हम ने समूह में १२ लोगों को लिया और समय ३० मिनट का रखा।
- ११. हम ने निपूर्णता पर ध्यान नहीं दिया। हम ने इसे संतोषजनक रखा।
- १२. हम ने उन विचारों को प्रोत्साहन दिया जो पहले विचारों ले उत्पन्न हुए थे।
- १३. हमारे साथ एक व्यक्ति था जो भाग नहीं ले रहा था परन्तु हमारे विचारों को लिख रहा था।

तूफानी विवाद के लिये कुछ मौलिक नियम

- १. निर्णय या समालोचना करना मना है।
- २. स्वतंत्रता से बात चीत का स्वागत है।
- ३. परिमाण लाने की कोशिश करो।
- ४. जैसे जैसे विचार आते जाते हैं, वैसे वैसे उन्हें मिला कर सुधारते जाईये।

अध्याय ६

परमेश्वर के दर्शन को देख कर मनुष्य की आत्मा की दूसरी इंद्रि को भरना

परमेश्वर की आवाज को परमेश्वर के दर्शन से ठोस बनाना

हमारे मन का दूसरा प्रभाव जिसके द्वारा हम परमेश्वर के दैवी प्रकाशन को पा सकते हैं वह "हमारे मन की आँखें हैं (इफि १:१८)।" जैसे हमारी शारीरिक आँखें हमें इस सांसारिक दुनिया को दिखाती हैं, वैसे ही हमारी आत्मिक आँखों का प्रयोग परमेश्वर हमें आत्मिक दुनिया को दिखाने में मदद करता है। उत्पत्ति से ले कर प्रकाशितवाक्य तक परमेश्वर उन लोगों को जो उस को खोजते हैं, उन्हें स्वपन और दर्शन देता आया है। ये स्वपन

और दर्शन, मन के विश्वास को बनाने में बहुत मुख्य सामग्री हैं।

अब्राहम के जीवन में विश्वास बनाने के लिये परमेश्वर ने उसे एक दर्शन दिया जिस में उसका वचन पूरा होने जा रहा था। उत्पत्ति १५:१,५,६ लिखीये।

	इंद्रि	किस प्रकार प्रयोग करें	बाईबल में उदहारण	स्थिती
१.	भीतरी कान (यूह ५:३०)	परमेश्वर के रहमा को प्राप्त करना	उत्पत्ति १२:१-३	प्राप्ति
२.	भीतरी आँख (प्रका ४:१)	परमेश्वर का दर्शन पाना	उत्पत्ति १५:५,६	
३.	भीतरी दिमाग (लूका २:१९)	परमेश्वर के विचारों पर ध्यान लगाना	रोमि ४: २०, २१	अण्ड सेवन
४.	भीतरी इच्छा (प्रेरित १९:२१)	परमेश्वर के रेहमा पर बोलना	उत्पत्ति १७ : ५	
५.	भीतरी भावनाएँ (१ राजा २१:५)	परमेश्वर के रहमा और दर्शन पर कार्य करता है	उत्पत्ति १७ : २३	
अन्त में नतीज	उस दर्शन की मृत्यु जिसे मैं नहीं ला पा रहा हूँ		उत्पत्ति १६ : २ उत्पत्ति १७: १८, १९	जन्म
	अलोकिक रूप में उस दर्शन का पुनर जन्म "समय के पूरा होने पर परमेश्वर उसे देता है"		उत्पत्ति २१ : १, २ उत्पत्ति ४ : ४ अ	

परमेश्वर जानता था की चित्र या दर्शन से कहा हुआ वचन और प्रभावित करता है। परमेश्वर ने अब्राहम को एक बाहरी दर्शन दिया: आकाश के तारागण और समुद्र की रेत। जब धर्मी यहून्ना ने प्रकाशितवाक्य को लिखना प्रारंभ किया तो परमेश्वर ने उसे भीतरी दर्शन दिया। ये दो उदहारण इस बात को दर्शाते हैं की परमेश्वर या तो बाहरी या भीतरी दर्शन दे सकता है।

चाहे जैसा भी दर्शन प्राप्त करें, परन्तु मुख्य बात यह है की दर्शन से मन का विश्वास बडता है। रेहमा के साथ परमेश्वर स्वप्न और दर्शन भी देता है ताकी रेहमा का वचन और प्रभावशाली बने।

जब शिल्पकार नयी इमारत खडी करता है तो पहले वह विचार - रेहमा के साथ प्रारंभ करता है। फिर वह अपने दिमाग में उस इमारत की कल्पना करता है। फिर वह बनाना प्रारंभ करता है।

कोई ऐसी वस्तु नहीं जिस की पहले कल्पना न की गयी हो। बनाने के लिये देखना पडता है। वैज्ञानिकों का मानना है की दो लोग चित्र का अधिक प्रयोग करते हैं: बुद्धिमान और बच्चे, दोनों ही बात उत्पादक हैं। अल्बर्ट

आईस्टाईन कहते हैं, "कल्पना, ज्ञान से अधिक मुख्य है।" शेक्सपियर कहते हैं, "कल्पना मनुष्य को जानवरों से उत्तम बनाती है।" डिसराएली कहते हैं, "कल्पना दुनिया पर राज करती है।" अरिस्टोटल कहते हैं, "दिमाग में चित्र का न होना न मुमकिन है।"

चौथे परिमाण ने तीसरे परिमाण को उत्पन्न किया

"विश्वास ही से हम जान जाते हैं की सारी सृष्टि की रचना परमेश्वर के वचन के द्वारा हुई है। पर यह नहीं की जो कुछ देखने में आता है, वह देखी हुई वस्तुओं से बना हो।" (इब्र ११:३)

मुझे लगता है की परमेश्वर ने पहले इस दुनिया को अपनी आत्मा में देखा होगा और बाद में इस दुनिया को अपने मन में बसे चित्र के अनुसार बनाया होगा। जो चौथे परिमाण, यानी आत्मा की दुनिया में चित्र बनाते हैं, उसे तीसरे परिमाण में उत्पन्न करते हैं।

यीशु, जो हमारा आदर्श है, दर्शन के साथ रहता था

यीशु ने अपना दुनियावी जीवन रहमा और दर्शन देखते हुए काटा। "जो मैंने उससे सुना है वही जगत से कहता हूँ।" (यूह ८:२६)।

"मैं वही कहता हूँ जो अपने पिता के यहाँ देखा है।" (यूह ८:३८)।

"मैं अपने आप से कुछ नहीं करता परन्तु जैसे मेरे पिता ने मुझे सिखाया वैसे ही ये बातें कहता हूँ।" (यूह ८:२८)।

हमें भी परमेश्वर के रहमा में जीना सीखना है। इस तरह हम परमेश्वर की इच्छा में जीयेंगे और मसीह जैसे चलते थे वैसे चल सकेंगे।

अनदेखी वस्तुओं को देखने से उत्पादता में बदलाव आता है।

बाईबल हमें बताती है की हमारे जीवनों और हमारे चारों ओर के संसार में बदलाव कैसे आ सकता है।
२ कुरिंथियों ३:१८ और ४:१७, १८ लिखीये।

हमारा बदलाव तब होता है जब हम लगातार आत्मिक दुनिया की ओर देखते रहते हैं। यदी हम लगातार उन वस्तुओं को देखें जो दिखती हैं, तो हम उदपादक नहीं बन सकते। यदी हम अपनी भीतरी आँख से आत्मिकता में देखें और उस आत्मिक दर्शन को अपने अंदर बैठा लें, तो समय आने पर परमेश्वर उसे तीसरे परिमाण की इस दुनिया में लायेगा।

पतरस का पानी पर चलना एक उदहारण के रूप में लिया जा सकता है। ये कहानी मत्ति १४:२८-३२ में मिलती है। यीशु ने रहमा में बोला जब उन्होंने पतरस को उन के पास पानी पर चल कर आने को कहा। पतरस ने परमेश्वर की शक्ति का दर्शन यीशु में देखा। एक चमत्कार हुआ। पतरस के जीवन में उत्पादक शक्ति मिली, वह पानी पर चला। परन्तु चमत्कार समाप्त हो गया क्योंकि पतरस ने यीशु को देखना छोड़ कर नीचे देखने लगा। अलौकिक बहाव समाप्त हो गया और पतरस डूबने लगा। इस तरह अलौकिक उत्पादक शक्ति उस समय प्राप्त होती है जब हम उन वस्तुओं को देखते हैं जो दिखाई नहीं देती।

परमेश्वर हमें अलौकिक दर्शन देता है ताकी हम उसे ताकते रहें और उसकी अलौकिक शक्ति हमारे जीवन में बह सके। "क्योंकि हम रूप को देख कर नहीं पर विश्वास से चलते हैं (२ कुरिं ५:७)।"

"विश्वास के कर्ता और सिद्ध करनेवाले यीशु की ओर ताकते रहें (इब्र १२:२)।"

अपने मन की आँखों को परमेश्वर को सौंपना सीखना

इब्रानियों में भविष्यवक्ता को सिद्ध पुरुष कहा गया है। भविष्यवक्ता एक सिद्ध पुरुष है, जो परमेश्वर के दर्शन और मकसद को देखता है।

२ राजाओं ६: ८ - २३ में हम एलीशा और अरामी सेना की कहानी पढते हैं। जब उन्होंने एलीशा के रहने के स्थान को घेर लिया तो मौजूदा हालात को देख कर एलीशा के सेवक डर गये। परन्तु एलीशा ने आत्मिक आँखों से आत्मिक स्थिती को देखा। जब उसने परमेश्वर से प्रार्थना की की वह उसके सेवक की आँखों को खोले, तो उन्होंने क्या देखा की एलीशा के चारों ओर के पहाड घोड़ों और आग के रथ से भरा हुआ है।

हमें न दिखने वाली स्थिती देखनी है न की दिखने वाली स्थिती। हमें भी भविष्यवक्ताओं के स्कूल में शिक्षा लेनी चाहिये ताकी हम भी सिद्ध बन सकें। इस के लिये हमें पहले परमेश्वर के समक्ष स्वयं को शांत करना होगा। हमें अपनी भीतरी आँखों से न केवल दिखने वाली वस्तुओं को देखना है, परन्तु इन्हें धीरे धीरे परमेश्वर को सौंपना है ताकी वह इन में अलौकिक स्वप्न और दर्शन डाल सके।

हबक्कूक अपने प्रार्था करने के स्थान पर जाता है ताकी ताकता रहे की परमेश्वर उस से क्या कहना चाहता है और परमेश्वर ने उस को दर्शन दिया की वह लिख ले (हब २:१,२)। हबक्कूक, जो की एक सिद्ध पुरुष था, उसने अपनी भीतरी आँखों को, प्रार्थना करते समय परमेश्वर को सौंपना सीखा, ताकी वह परमेश्वर के स्वप्न और दर्शन पा सके।

यूहन्ना ने भी अपनी भीतरी आँखों को परमेश्वर को सौंपना सीखा ताकी वह परमेश्वर की आवाज़ और दर्शन पा सके। प्रकाशितवाक्य ४:१, २ लिखीये:

क्या मैं यह कह सकता हूँ की प्रकाशितवाक्य ४ के पहले वचन में यूहन्ना "पम्प में पानी डाल कर उसे चलाने की कोशिश" कर रहा है। वह अपनी आँखों को आत्मिक क्षेत्र को सौंप रहा है, यह देखने के लिये की क्या परमेश्वर उसे कोई दर्शन देंगे की नहीं। और परमेश्वर उसे दर्शन देता है। वचन दो में वह आत्मा में होकर सिंहासन वाले भवन का दर्शन प्राप्त करता है। यह बात दिलचस्प है की वह वचन दो तक आत्मा में नहीं आया था, तो यूहन्ना पहले वचन में कहाँ था?

मुख्य बात यहाँ पर पम्प का चालू करना है। कई वर्षों तक मैं भीतरी आँखों को महत्व नहीं देता था, यह सोच कर की यह केवल साधारण विचार हैं, जिन का कोई महत्व नहीं। मैंने कभी परमेश्वर से कोई दर्शन नहीं पाया। परन्तु अब मैंने जब भीतरी आँखों को परमेश्वर को भरने के लिये सौंपा है, तो लगातार आत्मिक बहाव पाया है। यह हम में से हर एक जन के साथ हो सकता है और जब ऐसा होता है तो हम भविष्यवक्ताओं के स्कूल में शिक्षा पाना प्रारम्भ कर देते हैं।

निम्न दिये गये सुझावों से आप परमेश्वर को अपनी मन की आँखों को उसके स्वपन और दर्शन से भरने के लिये सौंप सकते हैं।

१. आप को भीतर और बाहर से स्थिर होना पड़ेगा, ताकी पवित्रात्मा लगातार प्रतिबिम्ब का बहाव बेजता रहे।

२. दर्शन की मदद से बाईबल की कहानी में प्रवेश करीये। यह सब से साधारण तरीका है। जो आप पढ़ रहे हैं, उसे देखने लगीये। उन्हें देखते हुए परमेश्वर से कहीये की वह आप को क्या दिखाना चाहता है, उसे दिखाये। फिर परमेश्वर के द्वारा भेजी हुई छवियों का बहाव प्रारम्भ हो जाएगा।

३. शांत समयों में अपने मन की आँखों को खोलीये ताकी परमेश्वर आप को बातें बता सके। मैंने यह अनुभव किया है की गहराई से यीशु पर केंद्रित होने से पवित्रात्मा की प्रतियों का बहाव प्रारम्भ होता है (इब्र १२:२)।

४. दूसरों के लिये प्रार्थना करते समय उस व्यक्ति को प्रार्थना में देखीये, फिर मसीह को उस व्यक्ति के साथ मिलते हुए देखीये। देखीये की वह क्या कर रहा है। फिर वही बात पूरी करने के लिये प्रार्थना करीये।

५. अपने स्वपनों की सुनिये, जो भीतरी दुनिया का कथन है। रात के समय परमेश्वर से कहीये की वह आप से बात करे (भजन १२७:२)। जब सो कर उठो तो अपने स्वपनों को तुरन्त लिख लीजीये फिर, परमेश्वर से उसका अर्थ बताने के लिये कहीये। वह बतायेंगे।

६. आत्मा में प्रार्थना करने से पवित्रात्मा के साथ बातचीत प्रारम्भ होती है और जब आप मन की आँखों को परमेश्वर को सौंपते हैं तो चित्रों का बहाव प्रारम्भ होता है।

७. यीशु के लिये अपना प्रेम और आप के लिये उसका प्रेम जताते हुए, शांती से प्रार्थना करने से दर्शन प्राप्त होते

हैं।

८. स्तुती और आराधना करते समय ध्यान दीजिये की आप क्या माँग रहे हैं, पवित्रात्मा जो दिखाना चाहता है उस पर उसे दर्शन देने दीजिये।

दर्शन देखना - स्वयं पर लागू करना

निम्न दिये प्रश्नों का संक्षेप में उत्तर दीजिये। (यदी कुछ समय तक आप कुछ देख नहीं पा रहे हैं तो परिशष्ट 'ब', "परमेश्वर को आप की दर्शन देखने की क्षमता का लौटाने देना," देखीये।)

१. जो परमेश्वर को आप के मन में लक्ष्य रखे हैं, क्या उन के बारे में आप परमेश्वर से दर्शन माँगते हैं?

२. जो आप के दिमाग में चित्र आ रहा है, क्या आप उन के प्रति स्तर्क हैं?

३. जो आप के दिमाग में चित्र आते हैं, क्या उन का आप मार्ग दर्शन करते हैं?

४. आप के मन और दिमाग के दैवी दर्शनों की क्या आप को आदत हो गयी है?

५. आप के दिमाग के चित्र कितने शक्तिशाली हैं?

परमेश्वर से मुलाकात के लिये दर्शनों की क्षमता का प्रयोग करने के लिये कुछ पुस्तकों को पढ़ने की सलाह

१. डॉ. पॉल योंगी चो, जो स्वपन और दर्शनों से भरा हुआ जीवन व्यतीत करते हैं, उन की पुस्तक "चौथा परिणाम" पढ़िये।

२. भीतरी चंगाई की प्रार्थना सभा में चित्रों का प्रयोग करने के लिये, फादर डैनिस और मैट लिन द्वारा लिखित पुस्तक "जीवन की चोटों को चंगा करना," पढ़िये।

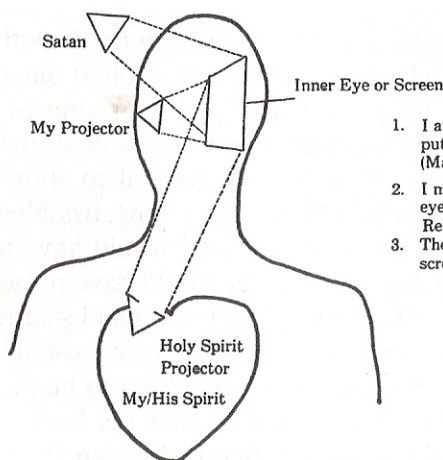
स्वपन और दर्शन को परखना

क्योंकि स्वपन और दर्शन, स्वयं की आत्मा, पवित्रात्मा या शैतान की ओर से हो सकते हैं, इसलिये इन को परखना आवश्यक है। बड़े स्वपनों या दर्शनों को अपने सलाहकारों को सौंप देना चाहिये। निम्न दिया गया चित्र पिछले अध्याय के चित्र की तरह है, परन्तु इसे दुबारा दिया गया है, ताकी आप इस पर पुनर विचार कर के आप के स्वपन और दर्शनों का मार्ग दर्शन कर सके।

Filling the Second Sense; Seeing the Vision of God

91

ONE INNER SCREEN — THREE PROJECTORS



1. I am to instantly cut off all pictures put in my mind's eye by Satan (Matt 5:28; II Cor. 10:5).
2. I may use my mind to present my inner eye to the Lord. (I may prime the pump Rev. 4:1.)
3. The Spirit is to project on my inner screen the images He desires (Rev. 4:2).

TESTING WHETHER AN IMAGE IS FROM SELF, SATAN OR GOD

SELF	SATAN	GOD
Find Its Origin (Test the Spirit — I Jn. 4:1)		
Born in mind. A painting of a picture.	A flashing image. Was mind empty, idle? Does image seem obstructive?	A living flow of pictures coming from the innermost being. Was your inner being quietly focused on Jesus?
Examining Its Content (Test the Ideas — I Jn. 4:5)		
A painting of things I have learned.	Negative, destructive, pushy, fearful, accusative, violates nature of God. Violates Word of God. Image is afraid to be tested. Ego appeal.	Instructive, upbuilding, comforting. Image accepts testing.
Seeing Its Fruit (Test the Fruit — Matt. 7:15)		
Variable	Fear, compulsion, bondage, anxiety, confusion. Inflated ego.	Quickens faith, powerful, peace, good fruit, enlightenment, knowledge. Produces humility.

एक भीतरी पर्दा - तीन किरनों को फैलाने वाले यंत्र

शैतान

बीतरी आँख या पर्दा

मेरा किरणों को फैलाने वाला यंत्र

पवित्रात्मा का किरणों को फैलाने वाला यंत्र

मेरी/ उसकी आत्मा

१. शैतान के द्वारा मेरे दिमाग की आँखों में डाले गये चित्र को तुरन्त निकाल फेंकना है। (मत्ति ५:२८, २ कुरिंथीयों १०:५)
२. प्रभु अपनी भीतरी आँख देने के लिये मैं अपने दिमाग का प्रयोग कर सकता हूँ। (मैं पम्प चाली कर सकता हूँ। प्रकाशितवाक्य ४:१)।
३. मेरे भीतरी पर्दे पर आत्मा को, उस के पसन्द के चित्रों को डालना चाहिये (प्रकाशितवाक्य ४:२)।

स्वयं	शैतान	परमेश्वर
जन्म को ढूँढीये (आत्मा को परखें - १ यूह ४:१)		
ध्यान लगाने से उत्पन्न। विचारों का उत्पन्न होना।	अचानक मानसिक विचार। क्या दिमाग रिक्त था? क्या विचार रुकावट बन रहा था?	भीतर अनुभव किया गया। बाद में विचार बना। क्या दिमाग यीशु पर केंद्रित था?
विषयों को परखें (शब्दों को परखें - १ यूह ४:५)		
जिन बातों को मैंने सीखा है, उन पर फिर से विचार करना।	विपरीत, विनाशकारी, जबर्ण, डरावने, दोष लगानेवाला, परमेश्वर के स्वभाव के विरुद्ध। वचन के विरुद्ध। विचार परखने से डरता है।	शिक्षा देनेवाला, प्रोत्साहन देनेवाला, दिलासा देनेवाला विचार परखने के लिये तैयार है।
उस के फल को देखें (फल को परखें - मत्ति ७:१५, १६)		
बदल सकते हैं।	डर, मजबूरी, बंधवा, उत्सुक्ता, विचलित।	विश्वास को बढ़ाता है, शक्तिशाली, शांती लाता है, अच्छा फल, जागृक्ता, ज्ञान

परमेश्वर के दर्शन से मन की आँखों के भरे जाने पर एक निजी उदहारण

जब मैं और मेरे साथ कलीसीया का एक वृद्ध, एक महिला की चंगाई के लिये प्रार्थना कर रहे थे, तो थोड़ी देर बाद हमें अनुभव हुआ की हमारे आगे के रास्ते में रुकावट आ गयी है, और हम आगे नहीं बढ़ पा रहे हैं। प्रार्थना करते हुए मैं सोच ही रहा था की मैं क्या करूँ, तो मैंने अपने मन की आँखों को परमेश्वर को सौंप दिया और उस से पूछने लगा की क्या कोई दर्शन है जो वह मुझे दिखाना चाहता है। तुरन्त, एक छोटी सी, पाँच वर्षिये लड़की का दृश्य मुझे दिखाई दिया। मैंने इस दृश्य के बारे में उस ३५ वर्षिय औरत को बताया की इस से क्या उसका कोई सम्बंध है। यह उसके बाकी की चंगाई की चाबी निकली। परमेश्वर उसे उस के बचपन में ले गया ताकी जो परेशानी उसकी उस समय प्रारम्भ हुई थी, उन को चंगा कर सके।

परमेश्वर के दर्शन से मन को बुद्धि और शक्ति मिलती है, जिससे वह विश्वास के साथ कार्य करता है और अलौकिक नतीजे मिलते हैं।

मेरी पत्नि और मुझे कई दर्शन मिले, जिन्हें हम कई महिनों और वर्षों तक संभाल कर रखा। कुछ बहुत सुन्दरता से पूरे हुए हैं और कुछ अभी तक सुरक्षित हैं। मेरी पत्नि का एक दृश्य था की वह बड़े, सुन्दर, पुराने मकान में रहे। मुझे पता था की एक गाँव की कलीसीया का पादरी होने के नाते यह बिल्कुल भी मुमकिन नहीं था। इतना

पैसा नहीं था की इस तरह की कोई वस्तु खरीद सकें। परन्तु हमारी कलीसीया ने, गिरजाघर बनाने के लिये एक जगाह खरीदी। उस में एक बड़ा, सुन्दर, पुराना घर था, जो मुझे रहने के लिये दिया गया। इस तरह परमेश्वर ने मेरी पत्नि का देखा हुआ स्वपन कई वर्षों बाद पूरा किया। यह, हमारे जीवन में एक चमत्कार था।

स्वयं पर लागू करना - परमेश्वर के दर्शन को लिखते हुए लक्ष्य तैय करना

पिछले अध्याय में आप ने निम्न दिये गये प्रश्न के बारे में परमेश्वर से पूछा। अब फिर से उन प्रश्नों को दोहराईये और परमेश्वर से इस बार, आप के जीवन के इन लक्ष्यों पर दृष्टि भी देने को कहीये। जब आप दर्शन मांगें तो दर्शन को देखें डी। आप उसे पायेंगे। जो दृष्टि आप देखेंगे, उस के बारे में लिख लें। हर प्रश्न के विषय दर्शन देखें। दृष्टि माँगने से पहले, पिछले अध्याय में जो आप को परमेश्वर ने उत्तर दिये हैं, उन को एक बार पढ़ लीजिये, जिस से उन के साथ का दर्शन पाना आसान होगा। अपने मन को परमेश्वर के रहमा वचन से भर कर देखने के लिये देखीये।

प्रिय प्रभु, इस समय मुझे जिन लक्ष्यों को पाना है उन के बारे में मुझे दर्शन दीजिये। रुक कर अपने दिमाग में चित्र देखीये (दानीयल ७), फिर उस का सारांश लिख लें, या उस के बारे में लिखें।

मेरे परिवार के जीवन में

मेरे आत्मिक जीवन में

मेरे कार्य में

मेरे शरीर/ स्वास्थ्य का ध्यान रखने के बारे में

निजी रिश्तों में

आर्थिक व्यवस्था के बारे में

मंत्रित्व में

गहन पत्राचार का कार्य पत्रा

इस कार्य पत्रे पर आप परमेश्वर से विशेष समस्या या लक्ष के बारे में पूछेंगे। पहले प्रश्न का जवाब मिलने के बाद आप दूसरे प्रश्नों का पत्राचार करेंगे, जिससे आप उस का जवाब पा सकेंगे। पिछले अध्याय के रहमा के लिये दर्शन खोजीये। पिछले अध्याय के रहमा के वचनों को एक बार दोहराईये।

१. प्रभु, क्या आप सफाई से मुझे दिखायेंगे की अगले छः महिनो में मुझे क्या करना है, मेरा लक्ष क्या है (या वह क्षेत्र जिस में मुझे कार्य करना है)?

२. प्रभु, आप मुझे दिखाईये की आप क्यूँ चाहते हैं की मैं इस लक्ष को प्राप्त करूँ (या इस क्षेत्र पर केंद्रित होऊँ)?

३. प्रभु, यदी मैं सफल होता हूँ तो मुझे दिखाईये की इस का नतीजा क्या होगा?

४. प्रभु, आप किसे सफलता मानते हैं? एक अच्छि सफलता? एक लाजावाब सफलता? विशेष रूप से दिखाईये।

५. प्रभु, इस लक्ष को पाने के लिये आप अपनी इच्छा दिखाईये।

६. प्रभु, इस लक्ष को प्राप्त करना, मेरे जीवन के कई लक्षों को प्राप्त करने में किस तरह उपयोगी है, मुझे दिखाईये?

७. इस लक्ष को प्राप्त करने के लिये मुझे क्या दाम चुकाना होगा मुझे दिखाईये?

८. प्रभु, यदि मैं सफल न हुआ तो क्या होगा, मुझे दिखाईये?

९. प्रभु, इस लक्ष को प्राप्त करने के लिये मुख्य कदम क्या उठाने चाहिये, मुझे बताईये? हर कदम के लिये क्या कोई निश्चित समय है?

१०. इस कार्य को सफलता पूर्वक समाप्त करने के लिये क्या अडचने हैं, मुझे बताईये? इन पर कैसे काबू किया जा सकता है?

११. आज आप क्या चाहते हैं की मैं करूँ, ताकी मैं इस लक्ष को प्राप्त करना प्रारंभ करूँ, मुझे बताईये?

स्वयं पर लागू - अपनी कल्पना को उत्तेजित करने के लिये प्रश्न पृछीये

कई बार हम अटक जाते हैं। कोई नये विचार या दर्शन नहीं मिलता। ऐसे समय पर आप अपने लक्ष्य या समस्या के प्रश्नों के साथ निम्न दिये गये प्रश्न पूछ सकते हैं। ये प्रश्नों की सूची आप को समस्या हल करने में या अपना लक्ष्य पाने में मदद करेगी। एक और सूची दी गयी है जिससे आप विचार और योजनायें प्राप्त कर सकते हैं। सही सूची को चुन लें।

हर प्रश्न तूफानी विवाद से भरे हुए हैं। इन से विचारों की सूची बन सकती है। समूह में उत्पादता बढ़ती है। यह परमेश्वर की उत्पादता हो, यह आवश्यक नहीं। इस सूची को परमेश्वर के समक्ष रखना पड़ेगा और परमेश्वर की ओर ताकते हुए उस से पूछीये की इन के विषय वह क्या कहना चाहता है। इस अध्याय के अंत में ऐसा करने के लिये आप को रिक्त स्थान दिया गया है।

अ) जब आप समस्या के बारे में बजाये योजना के प्रश्न पूछना चाहें। (उदहारण के लिये, टूटे हुए रिश्तों को जोड़ने के तरीके, परिवार में एकता के लिये कुछ विचार, ईश्वरज्ञान के विषय जो विवाद था, उस को सुधारने के विचार, उत्पादता उपदेश बनाने के कुछ विचार)।

१. संक्षिप्त में बताईये की आप को निश्चित रूप से किस विषय या समस्या के बारे में सोचना चाहते हैं।

२. लोगों ने इन समस्याओं को किन तरीकों से संभाला है।

३. आप इन समस्याओं को किस तरह संभालेंगे?

४. इस स्थिती में यीशु को दृष्य में ढालीये, वह इसे किस तरह संम्भालते?

५. इस स्थिती में जितने बाईबल के उदहारण, कहानीयों की सूची बना सकें लिख लें।

६. बाईबल के कौन से सिद्धांत, आप की बनाई हुई सूची के विपरित है।

७. आप इस समस्या को किन विभिन्न विचारों से देखेंगे? इस समस्या को देखने के लिये कौन से नये विचार आ रहे हैं?

ब) व्यापार में उन्नति के सम्बंध में विचार पर प्रश्न

जब आप किसी वस्तु को बाजार में उतारना चाहें तो उस के विषय जो उत्पादक विचार आते हैं, निम्न दिये गये प्रश्न आप के विचारों को बड़ा सकते हैं।

१. मैं इसे दूसरे उपयोगों में कैसे लाऊँ? इस के उपयोग में लाने के नये तरीके? कुछ और उपयोग, यदी बदले गये हों?

२. लागू करना? इस की तरह और क्या है? यह और क्या विचार बताता है? क्या भूतकाल का कोई समानान्तर है? मैं क्या अपना सकता हूँ? मैं किस की तरह बन सकता हूँ?

३. यह कैसे सुधारा जा सकता है? नया मोड? अर्थ, रंग, चाल, आवाज, बू, आकार, बदलना है? कुछ और बदलाव?

४. इसे कैसे बड़ाया जाये? कैसे जोड़ें? अधिक समय? अधिक तीव्रता? अधिक शक्तिशाली? और बड़ा? और लम्बा? और मोटा? अधिक मूल्य? अधिक अंश? नकल? गुणा? बड़ा चड़ा कर बोलना?

५. कम करना? कैसे घटायें या छोड़ दें? अधिक छोटा? सिकुडना? छोटा? नीचा? कम? हलका? सीधे लाना? तोडना? नीचा दिखाना?

६. बदले में? इस के बदले और कौन? इस के बदले और क्या? कुछ और अंश? कुछ और तत्व? कुछ और क्रम? कुछ और शक्ति? कुछ और स्थान? कुछ और राह? कुछ और तरह की आवाज?

७. दुबारा क्रम में लगाना? तत्वों को बदलना? कुछ और तरीका? कुछ और दृश्य? कुछ और क्रम? प्राकृतिक अवस्था बदलने का कारण और असर? चाल में बदलाव? नियम में बदलाव?

८. पलट देना? प्राकृतिक अवस्था बदलना? सही और गलत? प्रतिकूल का क्या? पीछे पलटीये? ऊपर नीचे करीये? नाटक के पात्र बदलीये? स्थान बदलीये? पासा पलटीये? दूसरा माल दीजीये?

९. मिलवाईये? मिलाने के बारे में क्या, एक धातू, क्रम, मिलाना? इकाई को जोड़ना? प्रार्थनाओं को जोड़ना? विचारों को जोड़ना?

निजी पत्राचार से दैनी सफाई लाना

प्रभु इन सब विचारों के विषय में मुझ से बात कर। इन में से किन को मैं अपना कर उन के साथ कार्य करूँ? इस समय मुझे किन पर ध्यान नहीं देना चाहिये? आप किय तरह चाहते हैं की मैं आगे बढ़ूँ? (परमेश्वर जो आप से कह रहा है उन को लिख लें)।

कक्षा में चर्चा के लिये तैयारी

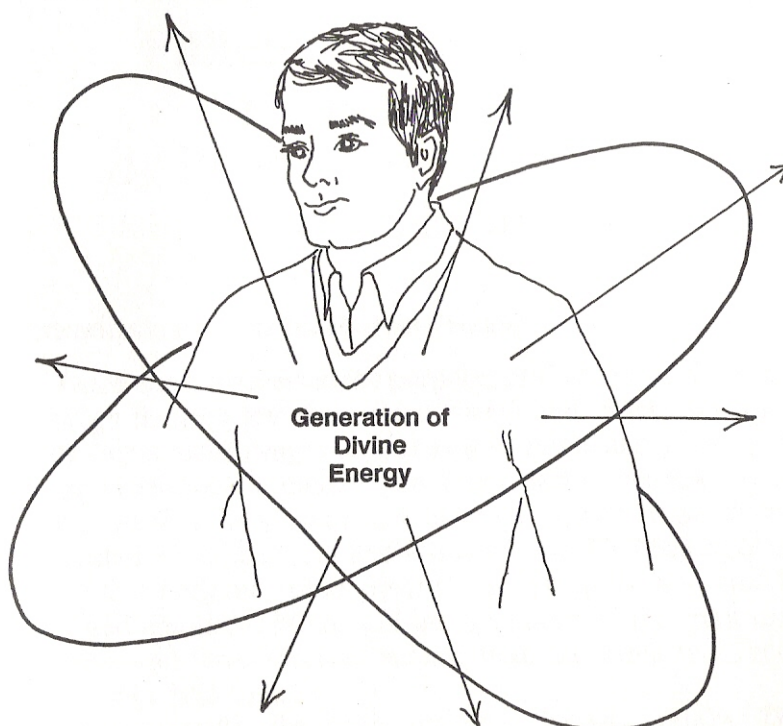
१. दर्शन के सिद्धांतों के बारे में सब के साथ चर्चा करने के लिये तैयार रहें। उन्हें लिंक लें।

२. आप के मन में परमेश्वर जो दर्शन दे रहा है, उसे सब के साथ चर्चा करने के लिये तैयार रहें। इस तरह की चर्चा दूसरों के मनों में विश्वास उत्पन्न करता है जो इसे सुनते हैं और परमेश्वर के लिये महिमा लाता है।

३. खुली चर्चा होगी उन रुकावटों को पार करने के लिये जो दर्शन पाने से रोकते हैं। यदि आप दर्शन पाने के लिये संघर्ष कर रहे हैं, तो अपने संघर्ष के बारे में चर्चा करने के लिये तैयार हो कर आईये ताकी उस संघर्ष का संयाग मिल सके। उन संघर्षों को लिख लें जिन पर आप कक्षा में चर्चा करना चाहते हैं।

४. यदी समय हो तो तुफानी विवाद या कहानी पट के लिये तैयार हो कर आईये।

Stage Two - Incubation



Abraham grew strong in faith
(Rom. 4:20)

स्तर दो - अण्डा सेना
दैवी शक्ति को उत्पन्न करना

अब्राहम विश्वास में बढ़ता रहा। (रोमि ४:२०)

अध्याय ७

परमेश्वर की आवाज और दर्शन पर विचार कर मनुष्य

की तीसरी इंद्रि को भरना

परिचय - अण्डा सेने की क्रिया

जब हम अपने मन में परमेश्वर का रहमा और दर्शन पा लेते हैं, तो हमने जो सुना और देखा है उस को अपने मन में घुमाते रहना है, जब तक मन का हर भाग न भर जाये। हमारे मन में दिमाग, इच्छा और भावनायें हैं, जिन्हें परमेश्वर के स्वपन और दर्शन से भर देना है। परमेश्वर ने हमें इस रीती से बनाया है की हमारी दोनों आत्माओं (मनों) और हमारे प्राणों का दिमाग, इच्छा और भावनायें हों। आत्मा का दिमाग, इच्छा और भावनायें, प्राणों के

दिमाग, इच्छा और भावनाओं से अधिक गहरी हैं और उन में अधिक द्रव्य होता है।

उदहारण के लिये, मन विचार करता है, आत्मा सोचती है। "विचार" करना "सोचने" से अधिक गहरा है।

अगले तीन अध्यायों में हम इन तीनों को जाँचेंगे, यह बताते हुए की ये आत्मा की इंद्रियाँ हैं, और प्राणों के क्षेत्र से अलग है और रहमा और स्वप्न का अण्डे सेन करते समय इन का किस तरह प्रयोग कर सकते हैं। हम यह भी देखेंगे की अब्राहम जो "विश्वास का पिता" है, उसने किस तरह परमेश्वर के रहमा और स्वप्न को अपनी इन योग्यताओं में किस तरह भरा, ताकी वह विश्वास में और अधिक शक्तिशाली बन सके (रोम ४:२०)।

	इंद्रि	किस प्रकार प्रयोग करें	बाईबल में उदहारण	स्थिती
१.	भीतरी कान (यूह ५:३०)	परमेश्वर के रहमा को प्राप्त करना	उत्पत्ति १२:१-३	प्राप्ति
२.	भीतरी आँख (प्रका ४:१)	परमेश्वर का दर्शन पाना	उत्पत्ति १५:५,६	
३.	भीतरी दिमाग (लूका २:१९)	परमेश्वर के विचारों पर ध्यान लगाना	रोमि ४: २०, २१	अण्ड सेवन
४.	भीतरी इच्छा (प्रेरित १९:२१)	परमेश्वर के रहमा पर बोलना	उत्पत्ति १७ : ५	
५.	भीतरी भावनाएँ (१ राजा २१:५)	परमेश्वर के रहमा और दर्शन पर कार्य करता है	उत्पत्ति १७ : २३	
अन्त में नतीज	उस दर्शन की मृत्यु जिसे मैं नहीं ला पा रहा हूँ		उत्पत्ति १६ : २ उत्पत्ति १७: १८, १९	जन्म
	अलोकिक रूप में उस दर्शन का पुनर जन्म "समय के पूरा होने पर परमेश्वर उसे देता है"		उत्पत्ति २१ : १, २ उत्पत्ति ४ : ४ अ	

आत्मा के दिमाग को पहचानना

यह मेरे सिये एक चौंका देने वाली बात थी की मेरे मन/आत्मा के दिमाग होता है। मुझे पता था की मेरे प्राणों का दिमाग होता है, परन्तु यह मुझे नहीं पता था की मेरी आत्मा को भी योग्यता है की वह गहराई से सोचे। बाईबल इस बारे में क्या बताती है, देखते हैं।

"मरियम ये सब बातें अपने मन में रखकर सोचती रही।" (लूका २:१९)।

"तब कई शास्त्रि जो वहाँ बैठे थे, अपने अपने मन में विचार करने लगे।" (मरकुस २:६)।

यह वचन यकीनन हमें यह बताता है की हमारे मन और प्राणों में विचार करने की योग्यता है। मनुष्य की

आत्मा और प्राणों में भेद बताना, इससे साबित होता है: जो प्राणों से आता है वह बाहरी, बदलनेवाला और प्रतिकार करने वाला होता है, जो आत्मा से आता है उस में तत्व, गहराई और विचार करने वाला होता है।

आत्मा के दिमाग को भरना

परमेश्वर चाहता है की हम उसके स्वप्नों, दर्शनों और रहमा को अपने मनों में समाय रहें। वह चाहता है की हमारा भीतरी दिमाग किसा और से नहीं वरन उस के दैवी प्रकाशन से भरा रहे। यदी हम उस में और उसके रहमा में बने रहें, तो हम जो चाहें, उससे माँग सकते हैं (यूहन्ना १५:७)।

परमेश्वर चाहता है की हम निर्णतर परमेश्वर में बने रहें, और उस के कहे हुए वचन हम में, ताकी हमारे मन की इच्छाएँ पूरी हो सकें।

अब्राहम विश्वास में दृढ होता रहा क्योंकि वह अपने मन में परमेश्वर पर और उस के वादे के उपर ध्यान लगाता रहा। आराम से, विचारपूर्ण और प्रार्थनापूर्वक, रोमियों ४:१७ - २४ लिखें।

अब जो लिखा है उस पर प्रार्थना पूर्वक ध्यान लगाएँ और परमेश्वर, जो दैवी ज्ञान आप को दे रहा है, उसे लिख लें।

अब्राहम ने स्थिती पर ध्यान डाला (व १९)। वह परमेश्वर के वादे के विपरित अपनी शारीरिक सच्चाई से सतर्क था। परन्तु, उसने न ही शारीरिक सच्चाई को माना और न ही उस को विश्वास में कमजोरी का कारण बनने दिया। वह परमेश्वर की योग्यता और परमेश्वर के वादे को देखता रहा और अपने विचारों में केवल सही विश्वास लाता रहा। वह इस बात में दृढ था की परमेश्वर ने उससे वादा किया है, उसे वह पूरा भी करेगा। यह केवल ुसके लिये नहीं लिया गया, परन्तु इसलिये की हम भी ऐसा ही करें।

हम बाईबल के एक और उदहारण को देखते हैं, मरियम, लूका २:८ - २० में। इसे भी पढिये।

वचन १० - १४ में, दूत, गडरीयों को रहमा सुना रहे हैं। वचन १७ में गडरीयों ने मरियम और युसुफ को "बच्चे के बारे में जो बताया गया वह कहा (रहमा)। वचन १९ में "मरियम ये सब बातें (रहमा) मन में रख कर सोचती रही। इस तरह मरियम ने परमेश्वर के रहमा को अपने मन में छिपा रखा और उस पर विचार करती रही। हमें अपने मन में विश्वास को क्या करना है, उस का यह यही उदहारण है।

बाईबल का एक उदहारण है जो अण्डा सेन क्रिया का विपरित है। १ राडाओं १८ और १९ अध्यायों को

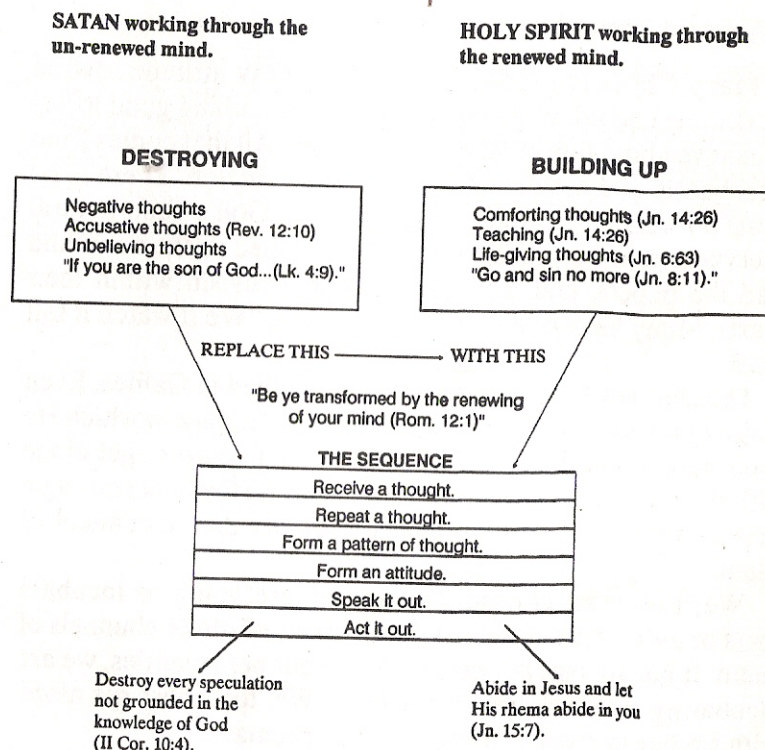
पढ़िये, जिस में एलिशा का उदहारण है।

जब एलिय्याह ने चार सौ पचास बाल के पुजारीयों को अपनी चमत्कारी शक्ति से हरा देने के बाद, रानी ईजेवेल के साधारण से दुष्ट शब्द को सुन कर वह भय से डर कर पीछे हट गया। उस ने उसे मार डालने की धमकी दी थी (१९: १ - ३)। बड़ाये इसके की वह परमेश्वर की इच्छा को जाने, उसने इस नष्ट करने वाले शब्दों को अपने मन में बसा लिया और बजाये इसके की परमेश्वर की अलौकिकता में स्थिर रहे, भय से डर कर भाग गया। ऐसा करने से उस ने मन में धार्मिकता के बजाये बुराई, और विश्वास के बजाये डर को जगाह दी। उसे दुबारा स्थिर करने में परमेश्वर को कई दिन लग गये। परमेश्वर ने उस तक वचन (रहमा) अपने दूतों से कहलवाया। एलिय्याह चालीस दिनों तक पहाड़ पर उपवास करता रहा (१९:८)। फिर उस के बाद परमेश्वर का वचन (रहमा) पा कर उस का मन पूरी तरह दृढ़ हो गया। जब उस ने परमेश्वर के साथ बातचीत प्रारंभ की, तो परमेश्वर ने उस के मन में रहमा कहा, जिस से उस की आत्मा पुनर तृप्त हो गया और वह फिर से परमेश्वर के कार्य में लग गया (१ राजाओं १९ : १३ - १८)।

यह हमारे जीवनों के लिये बहुत बढिया उदहारण है। मेरे साथ भी ऐसा कई बार हुआ है। मैंने अच्छाई के बजाये बुराई को अपने मन में बसा रखा और मेरे मन को बनाने के बजाये नष्ट करता रहा। फिर से मुझे अपनी विस्वास की यात्रा को मसीह के रहमा से अपने मन को शुद्ध कर के, नये रूप से तैय करना पडा।

इन बातों को समझने से मेरा मसीह में प्रे बनाये रखना आसान हो जाता है और जब गिर जाता हूँ तो लौट आना आसान हो जाता है। मैं प्रार्थना करूँगा की आप के जीवन में भी ऐसा ही हो।

मन के विश्वास में आने के लिये, हमें अंधकार के राज्य से निकल कर आना होगा और बदलना होगा और ज्योती के राज्य में आना होगा। हमें शैतान के कार्यों को पहचान कर उन्हें नष्ट करना है और पवितेरात्मा के कार्यों को उत्पन्न करना है।



ABRAHAM - THE FATHER OF FAITH

1. HEARD THE VOICE OF THE LORD (Gen. 12:1-3)
2. SAW WITH EYES OF FAITH (Gen. 15:5,6)
3. THOUGHT WITH A HEART OF FAITH (Rom. 4:20,21)
4. SPOKE THE WORD OF FAITH (Gen. 17:5)
5. ACTED IN FAITH (Gen. 17:23)
6. RECEIVED THE PROMISE OF FAITH (Gen. 21:5)

पराने दिमाग में शैतान का कार्य
नष्ट करना
उलटे विचार
दोष लगाने वाले विचार
अविश्वास करने वाले विचार

"यदी तू परमेश्वर का पुत्र है ...(लूका ४:१९)"

इन्हें -----इन से बदलीये

"तुम्हारे मन के नये हो जाने से तुम्हारा चाल चलन भी बदलता जाए।" (रोमि १२ : २)।

क्रम

विचार प्राप्त करीये
विचार को दोहराईये

नये दिमाग में पवित्रात्मा का कार्य
बनाना

आश्वासन देने वाले विचार (यूह १४:२६)

शिक्षा (यूह १४:२६)

जीवन देने वाले विचार (यूह ६:६३)

"जा अब पाप मत करना (यूह ८:११)"

विचारों का नमूना बनाईये
स्थिती बनाईये उसके बारे में बताईये
उस पर कार्य करीये

जो भी बात परमेश्वर के ज्ञान में नहीं बनी है,
उसे नष्ट कर दीजिये (२ कुरि १०:४)।

यीसु में बने रहो और उस का रहमा तुम में बना रहे
(यूह १५:७)।

अब्राहम - विश्वास का पिता

१. परमेश्वर की आवाज को सुना (उत्पत्ति १२:१-३)।
२. विश्वास की आँखों से देखा (उत्पत्ति १५:५,६)।
३. विश्वास के मन से विचार किया (रोमि ४:२०,२३)।
४. विश्वास का वचन बोला (उत्पत्ति १७:५)
५. विश्वास से कार्य किया (उत्पत्ति १७:२३)।
६. विश्वास का वाचा प्राप्त किया (उत्पत्ति २१:५)।

एक निजी उदाहरण

अमेरीका के नष्ट होने और गिरने के बारे में कई मसीहों का प्लय के दिन जैसा व्यवहार है। इस महान देश के विषय में इन लोगों के पास कहने को कुछ अच्छा नहीं है। उन के मन में और मुख से केवल प्रलय और नष्ट ही निकलता है। हमारे बीच में विश्वास, दर्शन, आशा, परमेश्वर के अलौकिक मध्यस्थता के लिये प्रार्थना, नहीं है। उन्होंने समाचारपत्र में पढ़ा है, जिससे उन्होंने अपने मनों में उल्टे विचार बैठ लिये हैं। कई तो यह भी कहते हैं की "हम इसे टूटते हुए देखेंगे।"

गलील में चलते हुए यीशु का यह तरीका नहीं था। उन के समय में रोमी सम्राट की बुराईयाँ थीं, परन्तु उन्होंने परमेश्वर के साथ अकेले रहना चुना, ताकी वे उन के चारों ओर के लोगों के लिये, मृत्यु की राह बनने के बजाए वे जीवन राह बन जायें।

हमें भी अच्छा या बुरा, चुनना है, हम जीवन की राह बनेंगे या मृत्यु की राह। यदी हम अपने मन में उलटे विचार स्थापित करते हैं तो, मसीह को हमारे मन में बैठाने के बजाए हम शैतान को मन में बैठा रहे हैं। हमें भी परमेश्वर के साथ अकेले हो कर सुद्ध रहमा प्राप्त करना है।

पिछले तीन वर्षों में मैंने महिने में एक दिन, अपने राष्ट्र के लिये उपवास रखा है। मैंने ऐसा और कई मसीहों के साथ मिल कर किया है। "इंटरसेसर्ज फॉर अमेरीका" के नेतृत्व में ऐसा किया है। आप उनका मासिक पत्र इस पते से पा सकते हैं, "इंटरसेसर्ज फॉर अमेरीका", बाक्स १२८९, एलीरिया, ओहिओ ४४०३६।

हम ने मिल कर अपने राष्ट्र के पापों की क्षमा माँगी, परमेश्वर से धार्मिक नेताओं के लिये प्रार्थना करी की वह अपनी पवित्रात्मा की शक्ति को सारे राज्य में उण्डेले। परमेश्वर ने मुझे इन के बारे में रहमा और दर्शन दिया जब मैंने उपवास रख कर प्रार्थना करी। मैंने इन बातों को अण्ड सेवन अवस्था में रख छोडा है और परमेश्वर हमारी प्रार्थना सुन रहा है और मेरे इर्द गिर्द के लोगों के बीच मृत्यु की राह के बजाये जीवन की राह बना रहा है। हम सब भी जीवन के हर क्षेत्र में ऐसे ही हों। हम जीवन दान देने वाले के साथ इतना समय व्यतीत करें और उस के वचन

का अण्ड सेवन करें ताकी हम लगातार मृत्यु के वचन के बजाये जीवन के वचन बोलें।

हर बात जो उल्ट हो, दोष लगाने वाली हो और अविश्वास योग्य हो, वह सान्त्वना देनेवाली और जीवन देने वाली बातों से बदल जाये। हम अपने जीवन में पवित्रात्मा का अण्ड सेना करें, शैतान का नहीं।

पत्राचार करना

"प्रभु, क्या मेरे जीवन में ऐसा कोई क्षेत्र है, जहाँ मैं आप के वचन, जो आपने मुझ से कहे हैं, उन को बैठाने के बजाये मैं विपरित विचारों का अण्ड सेना कर रहा हूँ? यदि हाँ, तो मुझे वह क्षेत्र दिखाईये और बताईये की आप उसे कैसे ठीक करना चाहते हैं।" जो जवाब प्राप्त होता है, उसे निम्न लिख लें।

प्रार्थना - परमेश्वर, आप हमारे मनो को अपने स्वप्नों और दर्शनों से शुद्ध करीये।

अध्याय ८

परमेश्वर की रहमा और दर्शन को पहचान कर मनुष्य की आत्मा की चौथी इंद्रि को भरना

मन में से बात करना

"जो मन में भरा है, वही मुँह पर आता है," यीशु ने कहा। "भला मनुष्य मन के भले भण्डार से भली बातें निकालता है, और बुरा मनुष्य बुरे भण्डार से बुरी बातें निकालता है।" (मत्ति १२:३४, ३५)

हम वही बोलते हैं जो हमारे मन में रहता है। यदी हमारे मन में बुराई है तो हम बुरा ही होलेंगे। यदी हमारे मन में विपरीत बातें हैं, तो हम विपरित बातें ही बोलेंगे। यदी हमारे मन में सर्वशक्तिमान परमेश्वर की आवाज और दर्शन भरा हुआ है तो हम परमेश्वर की आवाज और दर्शन के बारे में ही बोलेंगे।

इसलिये आत्मा से उत्पन्न उत्पादकता का मुख्य कार्य बोलना है। ब्रह्माण्ड को बनाने में, परमेश्वर ने "जो बातें हैं ही नहीं उनका नाम ऐसे लेता है जैसे की मानों वे हैं," (रोमि ४:१७)। जैसा निर्देश परमेश्वर हमें देता है, हमें उसी तरह उस निर्देश को बताना है। यदी हम नहीं बोलते तो हम उत्पादक क्रिया के क्रम को पूरा नहीं होने देते। हमारे भीतर आत्मा में जो शक्ति वन रही है, उसे निकालने का रास्ता होना चाहिये। हमारे बोल वह रास्ता बन सकते हैं। जब हमारी आत्मा से उत्पादक शक्ति निकलती है तो हमारे मुँह से निकले शब्दों के द्वारा वह उस आकार को भर देती है जो उस के लिये बनाया गया है उदहारण के लिये जब यीशु ने किसी शरीर को चंगा होने का आदेश दिया, तो वह अपने अंदर की पवित्रात्मा की शक्ति को निकालने की राह बना रहे थे और शक्ति को निर्देश दे रहे थे की वह उस मकसद को पूरा करें और उस ने किया।

	इंद्रि	किस प्रकार प्रयोग करें	बाईबल में उदहारण	स्थिती
१.	भीतरी कान (यूह ५:३०)	परमेश्वर के रहमा को प्राप्त करना	उत्पत्ति १२:१-३	प्राप्ति
२.	भीतरी आँख (प्रका ४:१)	परमेश्वर का दर्शन पाना	उत्पत्ति १५:५,६	
३.	भीतरी दिमाग (लूका २:१९)	परमेश्वर के विचारों पर ध्यान लगाना	रोमि ४: २०, २१	अण्ड सेवन
४.	भीतरी इच्छा (प्रेरित १९:२१)	परमेश्वर के रहमा पर बोलना	उत्पत्ति १७ : ५	
५.	भीतरी भावनाएँ (१ राजा २१:५)	परमेश्वर के रहमा और दर्शन पर कार्य करता है	उत्पत्ति १७ : २३	
अन्त में नतीज	उस दर्शन की मृत्यु जिसे मैं नहीं ला पा रहा हूँ		उत्पत्ति १६ : २ उत्पत्ति १७: १८, १९	जन्म
	अलौकिक रूप में उस दर्शन का पुनर जन्म "समय के पूरा होने पर परमेश्वर उसे देता है"		उत्पत्ति २१ : १, २ उत्पत्ति ४ : ४ अ	

निजी साक्षी

पहले मेरे लिये विश्वास के शब्दों को कहना कुछ मायने नहीं रखता था। कई वर्षों तक मेरे भीतर परमेश्वर की आवाज को दूसरों के सामने बताने से हितकिचाता था। मुझे यह डर था की यदी वह आवाज परमेश्वर की न हुई तो, मैं परमेश्वर के नाम को बदनाम करूँगा। परन्तु अब जबकी मैं पत्राचार के द्वारा परमेश्वर की आवाज को जान गया हूँ, तो दूसरों के सामने इस के बारे में बोलने से नहीं डरता।

इस तरह का उदहारण रविवार की सुबह को हुआ, जब मैं परमेश्वर से रविवार की सभा के विषय में मार्ग दर्शन माँग रहा था। उस ने मेरे पत्राचार के माध्यम से मुझे बताया की वह उस शाम मेरे सहयोगी वृद्ध की कमर को चंगा करेंगे। खेती करते समय उस की कमर में चोट आई थी। मैंने उस सहयोगी वृद्ध से इस के बारे में सुबह बताया और उसने इसे स्विकार किया। शाम में मैंने बात सारी कलीसीया को बताई। मैंने मेरे सहयोगी वृद्ध को आगे आने को कहा और कलीसीया को उसके चारों ओर खड़े होकर उस की कमर पर हाथ रखने को कहा। जब हम ने प्रार्थना करी तो उस की कमर का दर्द दूर हो गया और वह स्वस्थ हो गया।

यहाँ पर परमेश्वर ने किसी बात के होने से पहले ही उसके बारे में मुझे बता दिया था और इस बात के होने से पहले सब के सामने रखना ही मेरा विश्वास था। तब परमेश्वर ने अपनी अलौकिकशक्ति को छोड़ा।

अपनी आत्मा की इच्छा से स्विकार को स्थापित करना

मैं यह जान कर अचम्बित हुआ की मेरी आत्मा की 'इच्छा' होती है। मुझे पता था की दिमाग, इच्छा और भावनायें प्राणों के भाग हैं, परन्तु मुझे यह नहीं पता था की वे आत्मा के भी भाग हैं। देखीये की किस तरह निम्न दिये गये वचन हमें बताते हैं की हम निर्णय ले सकते हैं, जो की हमारे मनों या आत्मा के कार्य हैं।

"पौलुस ने आत्मा में ठाना की यरूशलेम को जाऊँ" (प्रेरित १९:२१)।

"हर एक जन जैसा मन में ठाने वैसा ही दान करे" (२ कुरिं ९:७)।

"पौलुस आत्मा में बेधा हुआ...." (प्रेरित २०:२२)।

जब हम आत्मा में सोचते हैं तो यह निर्णय बहुत महत्वपूर्ण होता है। इसे आसानी से नहीं बदल सकते।

हम वह बोलते हैं जो हमारे मन में आता है (मत्ति १२:३४)। तो यदी हम परमेश्वर की इच्छा अपने मन में बसा लें और अपनी आत्मा में उन पर चलने का निर्णय ले लें तो इस का नतीजा यह होगा की हम विश्वास के साथ उन बातों को बतायेंगे। हम वह बोलते हैं जो हमारे मन में सोचते हैं। नये नियम में एक महत्वपूर्ण जीवन दायी आदेश यह है की हम वही बोलें जो उस समय की आवश्यक्ता है (इफि ४:२९)। यदी हम अपनी आत्मा में ऐसा करने का सोच लेते हैं तो हम अपने अंदर अदभुत जीवन का बहाव अनुभव करते हैं। जब हम अपने मन में पवित्रात्मा के उपदेश और आश्वासन के शब्दों को बसाते हैं तो हमारा मुँह इन्हीं शब्दों को बोलता है, विनाशक, विपरीत, शैतान के शब्दों को नहीं।

हमारी आत्मा को इस तरह तैयार करना की वह परमेश्वर के दर्शन और रहमा को स्विकार करे

जब परमेश्वर ने अब्राहम को रहमा और दर्शन दिया और जब अब्राहम ने अपने भीतर के दिमाग को इन से भर लिया, तब परमेश्वर ने उस को अपने भीतर की इच्छा को तैयार कर उस के बारे में बताने को कहा। उस ने

उस का नाम अब्राहम से अब्राहम रखा, जिस का अर्थ है, "जातीयों के समूह का मूल पिता"। इसलिये हर बार जब भी अब्राहम ने अपना नाम बोला, वह परमेश्वर के वादे के बारे में बोल रहा था। उत्पत्ति १७:५ लिखीये।

अबमरकुस ११:२२-२४ प्रार्थना पूर्वक लिखीये।

आप ने जो लिखा है, उस को प्रार्थना पूर्वक विचार करीये और जो अंतर ज्ञान प्राप्त होता है उसे लिख लें।

मन के विश्वास का अर्थ यह है की परमेश्वर के रहमा और दर्शन जो हमारे मनों में बसा है, उन के बारे में बोलना, इस विश्वास से की समय आने पर परमेश्वर उसे पूरा करेगा।

यहोशू ६ में हम देखते हैं की यरीहो की दीवार के गिरने से पहले ही इस्राएलीयों ने धन्यवाद दिया। यूहन्ना ११:४१-४३ में, यीशु ने लाज़र के कबर से उठने से पहले ही धन्यवाद दिया।

फिलिपीयों ४:६-८ में हमें बताया गया है की हमें हमारी प्रार्थनाओं और विनतीयों के साथ हमें धन्यवाद देना है। ऐसा करने से हम प्रार्थना को सच में प्रार्थना बनाते हैं। मैं उदहारण बताता हूँ।

यदी मैं अपनी आवश्यकताओं को प्रार्थना और विनती के द्वारा परमेश्वर के पास ले जाऊँ और उन के कदमों में छोड़ कर चला आऊँ तो क्या मैंने प्रार्थना करी है? मुझे नहीं लगता। क्योंकि प्रार्थना परमेश्वर के साथ एक आत्मिक मुलाकात है, जिस में आत्मिक बातचीत के माध्यम से मैं उस से बोलता हूँ और वह मुझ से बोलता है। जब मैं अपनी विनती को उस के सामने रखता हूँ तो वह मुझे उनके बारे में बताता है। इस तरह मेरी प्रार्थना धन्यवाद में बदल जाती है, क्योंकि उन परिस्थितियों के उद्देश के बारे में वह मुझे बताता है। मेरी प्रार्थना और विनती धन्यवाद में बदल गयी। जो परमेश्वर ने मुझे बताया है, उसका अंगीकार करता हूँ। "अंगीकार का अर्थ है "उस बात

को दौहराना"। इस तरह, मैं वही दौहराता हूँ जो परमेश्वर ने मुझे प्रार्थना में बताया है। (इस तरह से प्रार्थना करने के लिये, "परमेश्वर से बातचीत" नामक किताब जो इसी लेखक ने लिखी है, उसे पढ़ने से मदद मिल सकती है।)

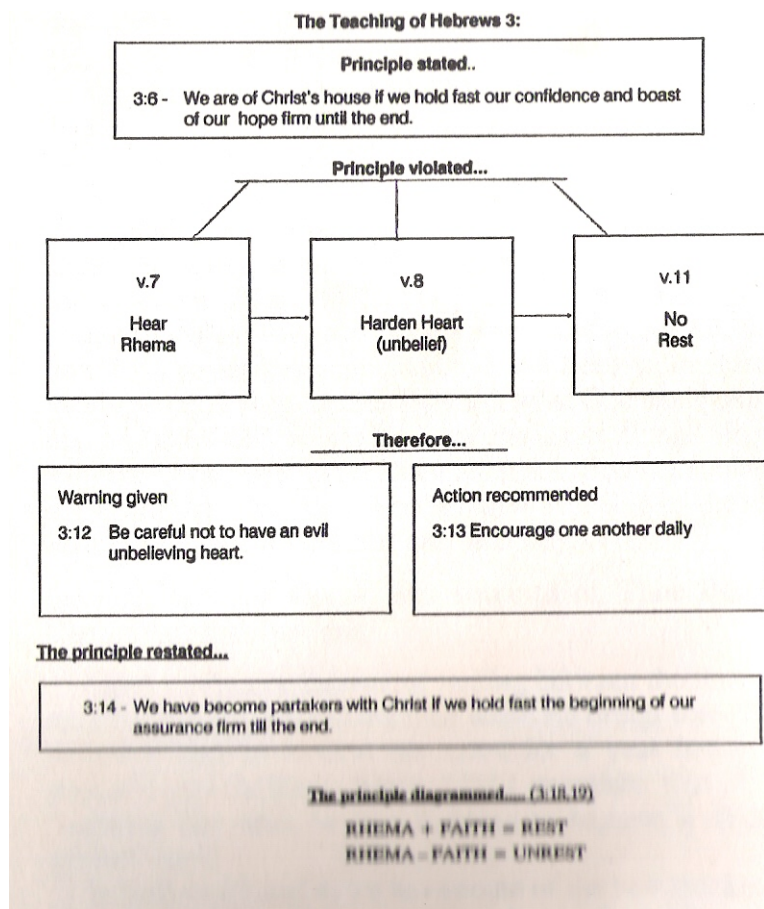
प्राप्त करने और अंगीकार करने के बीच के अवकाश के समय में विश्वास में विश्राम करना

परमेश्वर के प्रयोजन के कहने और पूरा होने के बीच एक अवकाश का समय होता है। अब्राहम का भी वादा पूरा होने से पहले उसे उसका नाम एक वर्ष तक दौहराना पड़ा। मरकुस ११:२३, वादा करता है की यदि कोई "अपने मन में सन्देह न करे, बरन् प्रतीति करे की जो कहता है वह हो जायेगा तो उस के लिये वही होगा।"

इब्रानीयों ३ और ४ में बाईबल की बहुत ही अच्छी शिक्षा है की अवकाश के समय रहमा से विश्वास का जोड कैसे होता है और इस तरह विश्राम और शांति में जिया जा सकता है, जब आप परमेश्वर के प्रयोजन के पूरा होने का इंतज़ार कर रहे हैं। हम इसे अभी देखेंगे। कृपया इब्रानीयों ३ और ४ को प्रार्थनापूर्वक पढ़िये और निम्न रिक्त स्थान में जो रहमा और विश्वास, जो जोडने की सच्चाई है, उसे लिख लें और इस तरह विश्राम में प्रवेश करीये।

मैं मानता हूँ की परमेश्वर के विश्राम (विश्राम और शांती से भरा, भीतरी जीवन) में प्रवेश करने के लिये हमें परमेश्वर के कहे शब्दों को परमेश्वर के दिये गये भीतरी मन में विश्वास से मिलाना है। परमेश्वर के शब्दों को परमेश्वर के विश्वास से जोड़ने से परमेश्वर का विश्राम प्राप्त होता है। यह हमें संसार भर के लोगों से अलग करते हैं, जिन के पास यह तीनों नहीं हैं। हम परेशानी के समुद्र में आशा की किरण बन जाते हैं।

निम्न दिये गये पर एर बार ध्यान दें



इब्रानियों ३ की शिक्षा जो सिद्धान्त बताया गया

३:६- हम मसीह का घर हैं, यदी हम साहस पर और अपनी आशा के घमण्ड पर अन्त तक दृढ़ता से स्थिर रहें।

सिद्धान्त तोड़ा गया

व. ७
रहमा सुना

व. ८
मन को कडा करना

व. ११
विश्राम नहीं है

(अविश्वास)

इसलिये

चेतावनी दी गया

क्या करना चाहिये

३:१२- चौकस रहो की तुम में ऐसा बुरा
और अविश्वासी मन न हो।

३:१३- एक दूसरे को समझाते रहो

सिद्धांत को दोहराना

३:१४ - हम मसीह के भागीदारी हुए हैं, यदी हम अपने प्रथम भरोसे पर अन्त तक दृढता से स्थिर रहें।

सिद्धांत का चित्रांकन (३:१८, १९)

रहमा + विश्वास = विश्राम

रहमा - विश्वास = अविश्राम

इब्रानियों ४ का निजीकरण और सारांश

मुझे जिस तरह सिरजा गया है की मैं परमेश्वर के जीवते वचन को विश्वास के साथ जोड कर लगातार विश्राम में जीयूँ। मुझे विश्वास के साथ अपने मुँह से उस वचन को बोलना है जो परमेश्वर ने मेरे मन में कहा है। साथ ही साथ मुझे परमेश्वर से कहना है की जब मैं संदेह करूँ, तब वह मुझे विश्वास दे और इस बात को याद रखूँ की यीशु भी शक करने के लिये परिक्षा में पडे थे और जब मैं उन को पुकारूँ तो वह मेरे संदेह को पूरी तरह समझ कर मुझे इस शक से छुटकारा दिलायें।

विश्वास और धैर्य से बाचाएँ प्राप्त होती हैं

जब हम परमेश्वर की वाचाओं को मानते हैं, तो परमेश्वर चाहता है की हम उन के पूरा होने तक धैर्य से इंतज़ार करें। प्रार्थना पूर्वक और विचार पूर्ण रीती से इब्रानियों ६:११ - १५ लिख लें। वचन को लिखने का एक महात्वपूर्ण कारण यह है की पैसिल हमारी सब से अच्छि आँखों की जोडी है। जब हम प्रार्थना पूर्वक और विचार पूर्ण रीती से वचन को लिखते हैं तो परमेश्वर हमें ऐसी बातें बताता है जो हमने पहले कभी नहीं देखीं। इसलिये आत्मिक जीवन में उन्नती पाने का मेरे लिये सब से अच्छा तरीका है। आप को इन वचनों को लिखने के लिये स्थान दिया गया है।

अंत में आप का इन वचनों के बारे में क्या कहना है?

अपने अंगीकार को थामे रहने के लिये प्रोत्साहित करना

"साहस पर और अपनी आशा के घमण्ड पर अन्त तक दृढ़ता से स्थिर रहें।" (इब्र ३:६, ३:१४, ४:१४)

"हम अपनी आशा के अंगीकार को दृढ़ता से थामे रहें, क्योंकि जिसने प्रतिज्ञा की है, वह सच्चा है।" (इब्र १० : २३)।

यदी यह हमारे लिये समस्या न होता तो परमेश्वर हमें अपने अंगीकार को थामे रहने के लिये प्रोत्साहित नहीं करता। हम उसके वचन को पूरा होने के इंतज़ार में अक्सर, परमेश्वर के रहमा और दर्शन का अंगीकार करने से वंचित रह जाते हैं। यह समय के पूरा होने पर सामने आयेगा और इस मध्यकाल में परमेश्वर हमारी सहनशीलता, दीर्घ प्रयत्न, निरन्तरता, दृढ़ता और धार्मिक चरित्र को स्थापित करता है। वह हमारे भीतर से जोड़ता होगा, हमारे मनों और उद्देश्यों को शुद्ध करता होगा और कई कार्य करता होगा। जब हम उस से बातचीत करते हैं, तो वह हमें बताता है की वह क्या कर रहा है, और हमें क्या करना है, जिस से हम सहनशीलता और विश्वास में स्थिर बने रहें।

इस अंतरकाल में, परमेश्वर चाहता है की हम एक दूसरे को प्रेम करने और अच्छे कार्य करने के लिये प्रोत्साहित करें। वह चाहता है की हम एक जुट होकर मिलें और विस्वास में एक दूसरे को प्रोत्साहित करें और पाप न करें और वह जो कह रहा है उस को मानें। (इब्र १०:२४-२६)।

समय का महत्व

इस बात का ध्यान दें की अब्राहम को परमेश्वर के वादे के बारे में खुलकर बोलने में २४ वर्ष लग गये थे। यह एक शोचनीय विषय है। हम अपने समय से अपनी रीति से अंगीकार नहीं कर सकते. बातों को आगे लाने के लिये परमेश्वर के पास उस का सही समय, उसकी सही रीति है। हमें स्वयं कुछ नहीं करना है। इस में अंगीकार भी शामिल है। हम उस समय अंगीकार करते हैं, जब परमेश्वर अंगीकार करने को कहता है और जिस रीति से परमेश्वर अंगीकार करने को कहता है, उसी रीति से अंगीकार करते हैं।

जब परमेश्वर हमारे भीतर, रहमा या दर्शन का दैवी बीज डालता है, तो वह केवल बीज होता है। उसे जड़ पकड़ना है, उगना है और विशाल वृक्ष में बदलना है, जो उन्हें जीवन दान देता हो जो उसे छू लेते हैं। यदी हम बहुत जल्दी अंगीकार कर देते हैं, तो कई लोग उस बात पर हँसते हैं, जो परमेश्वर ने हमें बताई है और वह उसे हमारे द्वारा में पूरा करने जा रहा है। इस से वह कमसिन पौधा जड़ पकड़ कर उगने से पहले ही मुर्झा जाता है। इसलिये उसके रहमा और दर्शन का अंगीकार करने से पहले, परमेश्वर चाहता है की हम इंतज़ार करें। इससे पहले की कोई हमारी आलोचना करे या हमारे विरुद्ध आये, वह चाहता है की वह दृढ़ता से जड़ पकड़ ले। वह अपने दैवी कार्य के बहाव के लिये, पहले एक सही स्थान बनाता है, फिर हम से अंगीकार करने को कहता है।

पूरी अण्डा सेने की क्रिया के समय हमें सतर्क रहना है की हम परमेश्वर के कहे अनुसार चलें, ताकी हम उसे अपनी रीति से कर के रास्ता न भटकें।

निजी पत्राचार को लागू करना

प्रभु, जो मेरे मन में आप ने दर्शन दिया है, उस के बारे में अंगीकार करने के विषय में, क्या आप मुझ से कुछ कहना चाहते हैं? वह जो कहता है, उसे नीचे लिख लें।

अंगीकार से लोग परमेश्वर के अभीप्राय को पहचानते हैं

परमेश्वर के रहमा और दर्शन का अंगीकार करने का एक कारण यह भी है की इस से लोगों को प्रोत्साहन मिलता है की वे भी परमेश्वर के उद्देश्य को स्थापित करने के लिये आप के साथ मिल जायें। जब हम दर्शन को विश्वास के साथ दूसरों के साथ बाँटते हैं, तो लोग परमेश्वर के बताये अनुसार, भाग लेने के लिये प्रोत्साहित होता है।

दर्शन को विश्वास के साथ बाँटना, एक चुनौती भरा कार्य है, जिस में लोगों को उस में लाना है। उस के विरुद्ध बुलवाना नहीं है। निम्न दी गयी कुछ अडचनें हैं, जिन का सामना आप को करना पड सकता है। इन के साथ कुछ बातें भी बताई गयी हैं, जो आप का इन अडचनों से निकलने में मार्ग दर्शन करेंगी।

कुछ सामान्य, मानवीय अडचनें

१. कई लोग बदलाव का विरोद्ध करते हैं। बिना वजाह, किसी की आर्थिक अवस्था, छवि या आत्मिक विश्वास को चुनौती न दें।
२. अधिक अनुरूप करने के लालच में न रहें। दृढ़ रहें।
३. समालोचन तो होगा। उसे जाँचीये और ठोस समालोचन का ही उत्तर दें।
४. कई लोग निन्दा कर सकते हैं, कई ईर्षा कर सकते हैं या कई रुची शून्यता। केवल परमेश्वर के रहमा और दर्शन की ओर सीधे देखते रहीये।

पत्राचार का उत्तर

इस से पहले के पत्राचार पर ध्यान दें। क्या परमेश्वर ने आप के मन में जो दर्शन दिये हैं, उन में से किसी का अंगीकार करने को कहा है? यदि हाँ, तो निम्न दिये गये को पूरा करीये।

प्रभु, जो इन में ग्रस्त हैं, उन में कौन इस बदलाव को रोकेंगे?

प्रभु, मुझे दिखाईये की क्या मैंने कभी उन की आर्थिक अवस्था या स्वयं छवी या आत्मिक विश्वास को चुनौती दी है? यदि हाँ, तो मैं इसे कैसे सुधार सकता हूँ?

प्रभु, क्या मैं दुर्बल और अधिक अनुरूप हूँ? सही तरह से निश्चित हूँ या उपद्रवी हूँ? यदी मैं सही तरह से निश्चित नहीं हूँ तो कैसे सही सुधार लाया जा सकता है?

प्रभु किसी भी समालोचन के विषय मुझ से बात करीये। इन समालोचनों में यदी कोई ठोस विचार है तो मुझे दिखाईये। आप क्या चाहते हैं की मैं उन से क्या सुनूँ? आप किस तरह चाहते हैं की मैं जवाब दूँ?

लोगों की रुकावटों को लाँघने की युद्धकौशल

१. लोगों के मस्तिष्क में बदलाव लाने की आवश्यकता के लिये, यह करीये:
 - अ) लोगों को इस समय उपस्थित समस्याओं के बारे में स्तर्क करें।
 - ब) बदलाव लाने से जो परेशानीयाँ होंगी उन के प्रति लोगों को चेतावनी दें।
 - स) बदलाव से उन को जो लाभ होगा उस पर दबाव डालें।
२. बदलाव लाने में रुकावट का खुललेपन और इमानदारी से सामना करें।
३. लोगों को विचारों की प्रगती की क्रिया में शामिल करीये और सुन के विचारों को सुनिये।
४. यदी मुमकिन हो तो बडे बदलाव को आराम से करीये।
५. बदलावों को कुछ समय के लिये अपना कर देखीये।
६. इस बात को बता दें की जीवन में केवल दो सच्चाईयाँ हैं, बदलाव या मृत्यु।

लोगों की रुकावटों को लाँघने की युद्धकौशल पर पत्राचार

प्रभु, आप क्या चाहते हैं की मैं उन के दिमागों में बदलाव की आवश्यकता को कैसे डालूँ?

प्रभु, मुझे बताईये की बदलाव की रुकावट का सामना क्या मैंने खुल्लेपन और इमानदारी से किया है?

प्रभु, आप क्या चाहते हैं की मैं लोगों को किस तरह विचार प्रगति की क्रिया में शामिल करूँ? क्या मैंने उन के विचारों को सुना है?

प्रभु, क्या इस दर्शन को लोगों के साथ बाँटने के लिये कुछ सामान्य क्रम है (छोटे कदम)?

प्रभु, क्या मैंने दानियल की तरह बजाये स्वमताबीमानी सच्चाई के प्रयोग सम्बंधी बदलाव बताये हैं?
(दानि १,२)

जीतने वालों की टीम बनाना

१. ऐसे लोगों से घिरे रहना जो विश्वास स्थापित करने वाले काल्पनिक हों, जिन के कदम ज़मीन पर हों।
२. सब से अच्छे लोगों को शामिल करें।
३. जिन को आप ने शामिल किया है, उन के तोड़ों को बहने दो।
४. अपनी टीम के सदस्यों को चुनौती भरे और अर्थपूर्ण लक्ष्य दें।
५. लोगों को असहमती का अधिकार दें।
६. अपने टीम के सदस्यों की जी भर कर तारीफ करीये और उन को मान्यता दीजिये (इफि ४:२९-३१)।

टीम को स्थापित करने सम्बंधी निजी पत्राचार

प्रभु, जिन को मेरे साथ कार्य करना है, वे विश्वासी लोग कौन हैं, काल्पनिक कौन हैं, जिन के कदम ज़मीन पर हैं?

प्रभु, जिन्हें आप ने मेरे सामने रखा है, क्या कोई लोग हैं जिन के पास इन क्षेत्रों की बढ़ीया योग्यता है, जिन्हें आप चाहते हैं की मैं उन्हें अपने साथ कार्य करने के लिये नियुक्त करूँ?

प्रभु, क्या वे लोग जिन्हें मैंने नियुक्त किया है, आप ने जो उन के अन्दर उपहार डाले हैं, क्या उन का बहाव स्वतंत्र है?

प्रभु मुझे बताईये की मैं टीम के सदस्यों को चुनौती भरे और अर्थपूर्ण लक्ष्य कैसे दूँ?

प्रभु, क्या मैं लोगों को मेरे साथ असहमत होने का अधिकार दे रहा हूँ?

प्रभु, क्या मैं अपने चारों ओर के टीम के सदस्यों की खुल कर तारीफ करता हूँ और उन्हें मान्यता देता हूँ?

अच्छे सम्पर्क स्थापित करना

१. सोचीये की वे कौन लोग हैं जिन्हें आप जानते हैं और जो आप की मदद कर सकते हैं।
२. अपने विचारों को अपने दोस्तों के साथ बाँटीये। उन से पूछीये की क्या वे किसी को जानते हैं जो आप की मदद कर सकते हैं।
३. ऐसे लोगों और संस्थाओं की खोज में रहीये जो आप को विचारों को प्रयोग में ला सकते हैं।
४. जिन अंजान व्यक्तियों से आप मिलते हैं, उन से बात करीये।
५. वहाँ जोईये जहाँ कार्य हो रहा है।

पत्राचारी जवाब

प्रभु, वे कौन लोग हैं, जिन्हें मैं जानता हूँ, जो मेरी मदद कर सकते हैं?

प्रभु, मेरे किस दोस्त के साथ मैं इस विचार या दर्शन के बारे में चर्चा कर सकता हूँ?

प्रभु, इस विचार या दर्शन को पूरा करने में कौन सी समस्या मेरी मदद कर सकती है।

जिन अनजान व्यक्तियों से बात कर के उन के विचार मिले हैं, उन्हें लिख लें। फिर परमेश्वर से पूछीये की इन में से किस पर वह आप को कार्य करवाना चाहते हैं।

प्रभु, वह कौन सा स्थान (यानी जगह, शहर, क्षेत्र, राज्य) है, जहाँ यह लक्ष्य को मैं अच्छी तरह से पूरा कर सकता हूँ।

संक्षिप्त प्राप्तियों को जाँचने के लिये सौंपना

अध्याय ९ में "परमेश्वर के रहमा और दर्शन पर कार्य" में प्रवेश करने से पहले यह अच्छा होगा की हम, दर्शन, लक्ष्य और कार्य के क्रम जो बताये गये हैं उन को सारांश में देखें।

इस रिपोर्ट को उस व्यक्ति के पास ले जाईये जो उस क्षेत्र में योग्यता साबित कर चुका है, जिस में आप खोज कर रहे हैं और उसके विचार प्रकट करने को कहिये। यह ध्यान रहे की आप योग्य पुरुष को ही चुनें। यदी आप के विचार में कई क्षेत्र है तो आप को इसे कई लोगों को सौंपना होगा, जो उन क्षेत्रों में योग्यता प्राप्त हैं।

आप जिन लोगों को जानते हैं, उन में से इन में काबिल क्षेत्रों के लोगों को चुनि कर उन्हें मिलें और अपना प्रस्ताव रखीये और उन को सलाह देने को कहिये।

यदी वे कुछ सुझाव देते हैं, तो अपनी योजना को पूरा करने के लिये उन के सुझावों को डल कर दुबारा कार्य करीये।

आप अपनी योजना को आप के सब से बडे समालोचक को सौंपें, ताकी वह आप की कमियों को बता सके। फिर जिस क्षेत्र में कमियाँ हैं, उन को पूरा कर के दुबारा योजना बनाईये।

यह परिश्रम भरा काम है। परन्तु, परिश्रम पर ही जीत निर्भर होती है। यदी आप अंत तक इस क्रम को लागू

करते रहे और प्रभु यीशु मसीह से निर्देश लेते रहे तो आवश्यक आप उत्पादक विचारों को जन्म देंगे और इस से आप की और संसार की समस्याओं का हल मिल जायेगा। इस से न केवल आप उन्नति प्राप्त करेंगे, परन्तु इस संसार को भी उत्पादकता प्राप्त होगी।

अध्याय ९

मनुष्य की आत्मा की पाँचवीं इंद्रि को विश्वास के साथ कार्य कर के भरना

मनुष्य की आत्मा में भावनायें हैं

अब हम मनुष्य की पाँचवीं इंद्रि पर पहुँचे हैं, जिस की योग्यता भावनाओं को पहचानना है। मैं एक बार फिर यह जान कर चकित हो गया की मनुष्य की आत्मा को भावना अनुभव करने की क्षमता है। मैं यह जानता था की हम प्राणों में भावनायें अनुभव कर सकते हैं, परन्तु मुझे यह नहीं पता था की मेरे स्वभाव पर असर करने वाली भावनायें मेरी आत्मा से बहती हैं। हम देखेंगे की बाईबल इन मन के या आत्मा की भावनाओं के बारे में क्या कहती है।

अहाब की आत्मा उदास थी. क्योंकि उस के वह नहीं मिला जो वह चाहता था। (१ राजाओं २१:५)

जब यीशु पवित्रशास्त्र का अर्थ बताता था तो चेलों के मनो में उत्तेजना उत्पन्न होती थी। (लूका २४:३२)

परमेश्वर ने यहजेकेल के मन को ढीत किया और वह कठिन दुख से भरा हुआ, जलता हुआ चला गया। (यहेजेकेल ३:८, १४)।

इन में से हर एक में, मनुष्य की आत्मा में भावनाओं का अनुभव देखते हैं, उसके प्राणों की नहीं। कई और वचन हैं जो मनुष्य के भीतर की भावनाओं के बारे में बताते हैं। यहाँ कुछ उदाहरण आप के लिये दिये गये हैं।

उत्पत्ति ४१:८, भजन १४२:३, दानियल ७:१५, निर्गमन ६:९, नितिवचन १५:१३, यूहन्ना ११:३३, १ समुएल १:१५, सभउपदेशक १०:४, प्रेरित १७:१६, अय्यूब २१:४, यशायाह १९:३, उत्पत्ति ४५:२६, भजन ३४:१८, यशायाह ५४:६।

	इंद्रि	किस प्रकार प्रयोग करें	बाईबल में उदाहरण	स्थिति
१.	भीतरी कान (यूह ५:३०)	परमेश्वर के रहमा को प्राप्त करना	उत्पत्ति १२:१-३	प्राप्ति
२.	भीतरी आँख (प्रका ४:१)	परमेश्वर का दर्शन पाना	उत्पत्ति १५:५,६	
३.	भीतरी दिमाग (लूका २:१९)	परमेश्वर के विचारों पर ध्यान लगाना	रोमि ४: २०, २१	
४.	भीतरी इच्छा	परमेश्वर के रहमा पर बोलना	उत्पत्ति १७ : ५	

	(प्रेरित १९:२१)			अण्ड सेवन
५.	भीतरी भावनाएँ (१ राजा २१:५)	परमेश्वर के रहमा और दर्शन पर कार्य करता है	उत्पत्ति १७ : २३	
अन्त में नतीज	उस दर्शन की मृत्यु जिसे मैं नहीं ला पा रहा हूँ		उत्पत्ति १६ : २ उत्पत्ति १७: १८, १९	जन्म
	अलौकिक रूप में उस दर्शन का पुनर जन्म "समय के पूरा होने पर परमेश्वर उसे देता है"		उत्पत्ति २१ : १, २ उत्पत्ति ४ : ४ अ	

यह वचन हमें यह बताते हैं की मनुष्य की आत्मा से गहरी भावनायें बहती हैं। वॉचमैन नी कहते हैं, "भावनायें आत्मा की धारायें हैं।" भातरी गहरी भावनायें वह स्थान है, जहाँ से पवित्रात्मा हम में से बह कर निकलती है। इस सच को जानने से पहले मैंने भावनाओं को बमेशा काट दिया था यह समझ कर की वे प्राणों से सम्बंधित हैं, और इन का मसीही सेवा में कोई प्रयोग नहीं है। पर अब मैं जानता हूँ की आत्मा की भावनायें आवश्यक हैं।

एक बार फिर प्राणों को आत्मा से अलग करने का जो सिद्धांत है, "वह जो प्राणों से आता है वह बाहरी और बदलने योग्य है, जो आत्मा से आता है वह ठोस और गहरा होता है।" पौलुस भी प्राणों की भावनाओं और आत्मा की भावनाओं को अलग भागों में बाँटता है, जब २ कुरिंथियों ४:८ में वह कहता है, "निरुपाय तो हैं, पर निराश नहीं।" पौलुस के प्राण निरुपाय थे पर उस की आत्मा निराश नहीं थी। यह दोनों भावनायें हैं। वचन ६ में पौलुस कहता है, यीशु की ज्योती जो उसके मन में थी उसने उसे निराश नहीं होने दिया, चोहे उसके चारों ओर की परेशानी से उस के प्राण निरुपाय हो गये थे।

हमारे प्राणों और आत्माओं, दोनों में भावनायें होती हैं। आत्मा की गहरी भावनायें ही हमें कार्य करने के लिये प्रोत्साहित करती हैं। जब तक हमारे मन की भावनायें छू नहीं जाती तब तक हम काम नहीं करते हैं। उदहारण के लिये हम जानते हैं की संसार भर में लाखों बच्चे भूखें हैं, परन्तु हम तब तक इस विषय में कार्य नहीं करते जब तक हमारे मन को यह बात छू न ले।

अब, एक अन्तिम बात। कार्य केवल आत्मा की भावनाओं से ही नहीं बहते परन्तु, भावनायें दर्शन से भी बहती हैं। मन पर विचारों से अदिक प्रभाव चित्र का होता है। आप के मन को छूने वाला प्रवक्ता वही है जो एक अदभुत कहानीकार है, वह जिस ने चित्रों को रंगा है और आप को उन तक खींच कर लाया है।

हमारी भावनायें चित्रों के प्रति तुरन्त जवाब देती हैं। इसलिये, जब आप परमेश्वर के चित्र को अपने मन में डालते हैं, तो आप की भावनायें उत्तेजित हो जाती हैं, और आप कार्य करने लग जाते हैं।

परमेश्वर के दर्शन और भावनाओं के द्वारा कार्यों का बहाव

अब हम अब्राहम को देखते हैं। ९९ वर्ष की आयु में परमेश्वर ने अब्राहम को दर्शन दिये। जो रहमा वह बोल रहा था वह चित्र द्वारा कहा गया था। खतना के बारे में परमेश्वर ने स्पष्ट निर्देश दिये थे। यदी अब्राहम परमेश्वर के दर्शन और वाचाओं को अपने मन में न बसाता तो वह इस आज्ञा के बारे में सुन कर विचलित हो जाता था। परन्तु परमेश्वर के कहे शब्दों पर अब्राहम के मन पर प्रभाव किया और वह कार्य करने लगा। इस आज्ञा कारी कार्य ने

परमेश्वर का दुबारा दर्शन दिलवाया और इस बार, एक वर्ष के बीतर एक पुत्र के वादे के साथ।

विश्वास से हमेशा कार्य करना चाहिये। पतरस के विश्वास ने उसे जल पर चलाया। दस कोडीयों को जाने के लिये कहा गया और जाते जाते वे चंगे हो गये। रहाब, जो की एक वैश्य थी, उसने दो जासूसों को पनाह दी। याकूब कहता है की कार्य से विश्वास सिद्ध होता है और विश्वास कर्म बिना मरा हुआ है (याकूब २:२२,२६)।

सामान्य तौर से विश्वास के कार्य न्यायविरुद्ध लगते हैं। कुछ उद्धारण हैं: इस्राएलीयों का यरीहो की दीवारों के चारों ओर घूमना; नमान का कोड से चंगाई पाने के लिये यरदन नदी में सात बार डुबकी लगाना; अंधे को सिलोम के पानी में जा कर धोने के लिये कहना; और दस कोडीयों को जाकर याजक के सामने अपने आप को जाँच करवाने को कहना, जब की उन में अभी भी कोड था। यह न्यायविरुद्ध विश्वास के कार्यों ने प्रभु के अलौकिक व्यवस्था को आगे लाया।

प्रभु आप से विश्वास के साथ जो भी कार्य करने के कहे, उसे बुद्धि पूर्वक पूरा करूये ताकी परमेश्वर की आलौकिक व्यवस्था सामने आ सके।

एक निजी उदहारण

मैं आप के साथ वह बात बाँटना चाहता हूँ, जब परमेश्वर का दर्शन पा कर मैं कार्य में लग गया और मुझे 'बेवकूफ' सा अनुभव हुआ।

मैं एक अनजान व्यक्ति को परमेश्वर के पास ले कर आया ही था। मैंने इस बात पर दबाव डाला की वह केवल बाईबल पढ़ कर मुक्ति न पाये बलकी सच में पश्चताप करे और पूरी तरह परमेश्वर में आ जाये। मैंने इस बात कि पुष्टि की की वह अपना जीवन मसीह के लिये निछावर कर दे, और यह की वह अपना जीवन निछावर करेगा तो वह जीवन पायेगा। उसने पश्चताप और मसीह को अपना जीवन सौंपने की सच्चि प्रार्थना करी। मुझे अच्छा लगा की यह सच में परिवर्तित हुआ है। उस का सर झुका हुआ थ, तो मैंने अपनी भीतरी आँख यीशु की ओर लगाई की यह देखने के लिये की वह मुझ से इस व्यक्ति के बारे में कुछ कहना चाहता है, या दिखाना चाहता है। मैंने एक दर्शन पाया की पवित्रात्मा उस व्यक्ति को घेरे हुए है, वह उस में प्रवेश करना चाहता है परन्तु उस व्यक्ति के भीतरी परेशानी के मारे वह प्रवेश नहीं कर पा रहा है। मैं उदास हो कर उस दर्शन को दुतकारने वाला था, क्योंकि यह नहीं हो सकता था। मेरा दिमाग सकीन के साथ कह सकता था की यह व्यक्ति ने मुक्ति पाई है। परन्तु, पिर पवित्रात्मा क्यों उसके बाहर है, उस में प्रवेश क्यों नहीं कर पा रही है?

मैंने आँखें खोल कर उस से पूछ की क्या उसने कुछ अनुभव किया, क्योंकि मेरा यह विश्वास है की जब कोई मुक्ति पाता है तो पवित्रात्मा, उसकी आत्म से साक्षी बन कर कहती है की वह परमेश्वर का बेटा है। यदी पवित्रात्मा साक्षी नहीं दे रही तो मैं कौन हूँ यह कहने के लिये की पवित्रात्मा ने ताम किया है? एक नये रूप में मुक्ति प्राप्त व्यक्ति प्राणों की भावनाओं का नहीं वरन् आत्मा की भावनाओं का अनुभव करता है।

उस व्यक्ति ने उपर देख कर कहा, "मुझे नहीं लगता की कुछ हुआ है।" मैं चकित रह गया। मेरा इश्वर ज्ञान छू मंतर हो गया। जो मैंने सीखा था उस के मुताबिक तो इस व्यक्ति को मुक्ति पा लेनी चाहिये थी, और यह बात उसे अपनी आत्मा में पता चल जाना चाहिये थी। परन्तु उस का यह अंगीकार मेरे दर्शन से मेल खा रहा था। मैंने उस से कहा, "मुझे भी लगता है की कुछ नहीं हुआ।" फिर उस व्यक्ति ने बताया की उस का एक लडकी के साथ नजायज़

रिश्ता ता और वह अपनी पत्नि को त्याग कर उस जवान लडकी से शादी करने वाला था। मैंने उससे कहा की यदी वह मसीह यीसु को चुनता है तो उसे इस प्रेम बंधन को छोड कर अपनी पत्नि के साथ रिश्ता बाये रखना पडेगा। उस ने कहा की वह ऐसा नहीं कर सकता। मैंने उस से कहा की ऐसा करने से उसे मसीह में मुक्ति नहीं मिल सकती जब तक वह मसीह के लिये अपनी जीवन निछावर न कर दे।

परमेस्वर के दर्शन हमें कई बार पागलपन करवा देते हैं। परन्तु, जब हम उस पर कार्य करते हैं तो परमेश्वर अपना अलौकिक सच बता ही देता है।

इब्रानियों ११ की निजी पढाई - विश्वास से भरा अध्याय

इब्रानियों ११, विश्वास से भरा अध्याय, विचारपूर्ण और प्रार्थना पूर्वक, कम से कम चार बार पढिये, और निम्न दिये गये को लिख लें।

१. पहली बार पढने के बाद, विश्वास ने जो कार्य करे हैं, उन को लिख लें।

२. दूसरी बार पढने के बाद, वह सच लिख लें जो परमेश्वर के वादों को पाये बिना विश्वास में मरने के बारे में है।

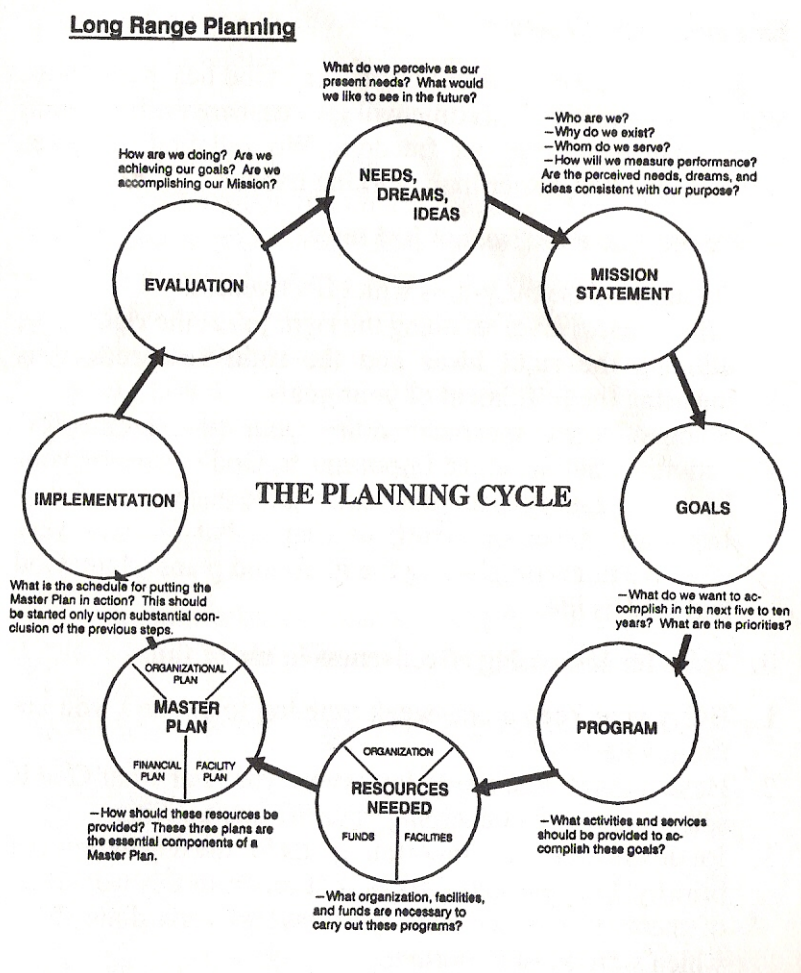
३. तीसरी बार पढ़ने के बाद, इन व्यक्तियों के बारे में संसार का दृष्टिकोण और परमेश्वर का दृष्टिकोण लिखीये।

४. चौथी बार पढ़ने के बाद, परमेश्वर जो आप को अंतरदृष्टि दे रहा है उसे लिख लें। मन के विश्वास पर कार्य करने के बारे में परमेश्वर आप से क्या कह रहा है?

प्रार्थना: "प्रभु, हम संसार के लिये कई समय से बेवकूफ रह चुके। अब हमें आप अपने लिये बेवकूफ बनाईये।"

अगले पन्ने पर एक चित्र दिया गया है, जिस में प्राप्ति से ले कर अंत तक दर्शन का क्रम बताया गया है। इसे "द लीड ग्रुप, इंकारपोरेशन" ने बनाया है। आप के सामने परमेश्वर ने जो योजना रखी है, उस पर आप इस चित्र में बताये क्रम के अनुसार कार्य करना चोहेंगे। क्रम के हर स्थर पर पत्राचार करीये। इस तरह करने से आप को अपने विचारों के बजाये परमेश्वर के विचार प्राप्त होंगे।

योजना क्रम



समय का सही उपयोग करना

जीत तब प्राप्त होती है जब हम परमेश्वर के दिये गये समय का बुद्धिमानी से प्रयोग कर सकें। इस से हमें स्वतंत्रता मिलती है। हम कठिनाई से कार्य करने के बजाये अच्छि तरह कार्य कर सकते।

अ) हमें क्षमताशाली बनना है, केवल क्रियाशील नहीं।

१. क्रियाशील को क्षमताशील न समझें।

२. क्षमताशाली का अर्थ है की सही कार्य को सही समय पर, सही विचारों के साथ और सही सामग्री के साथ करना, ताकी लक्ष्य को प्राप्त कर सकें।
३. क्षमताशाली होने का अर्थ है की हमारे जीवन के लिये परमेश्वर की योजना को पूरा करने के लिये कुछ कार्यों को सही समय पर करना।
४. यीशु कभी भी गडबडी नहीं करते थे परन्तु फिर भी उन के जीवन के लिये परमेश्वर के लक्ष्यों और योजनाओं को पूरा करते थे।

ब) समय के प्रयोग में क्षमताशाली योग्यता को बढ़ाने के यंत्र

१. हर वर्ष एक सप्ताह के लिये समय सारनी बनाईये यह देखने के लिये की आप समय का प्रयोग किस तरह कर रहे हैं।
२. प्रति दिन एक शांत समय रखीये, यह देखने के लिये की आप के जीवन और कार्यों के विषय परमेश्वर आप से क्या कहना चाहता है।
३. उस दिन के मुख्य लक्ष्यों को अवश्यता अनुसार लिख लें। अपने कार्यों को उस क्रम के अनुसार करीये। इस तरह करने से यदी आप सब कार्य नहीं कर सकते तब भी आप ने मुख्य कार्यों को तो कर ही लिया है।
४. कार्यों को दिन के उस समय करीये जब उस कार्य को समाप्त करने की क्षमता रहती है।
५. समय में थोड़ी ढील छोड़ीये, क्योंकि परमेश्वर, लोग या समस्या उस समय आ सकते हैं।
६. सुस्ताने का समय भी रखीये ताकी परमेश्वर जो बता रहा है उसे आप का मन अण्ड सेन कर सके।
७. उन समयों को क्षमता पूर्वक प्रयोग में लाईये जिन का प्रयोग क्षमता पूर्वक नहीं हो पा रहा है।

स) अवरोधों और विधनों को कम करना

१. पूछीये: "क्या यह आवश्यक है, या यह मुख्य है, या दोनों है?" एक बात का ध्यान रहे की आवश्यक मुख्य नहीं होता।
२. उन बातों को ना कर दीजिये जो परमेश्वर की ओर से आप के जीवन के लिये नहीं है।
 - इन कार्यों को ना करना ही ठीक होगा।
 - अ) जो कार्य मुख्य नहीं हैं।
 - ब) वो कार्य जिन का कोई महत्व नहीं।
 - स) वह कार्य जो आप दूसरों से करवा सकते हैं।
 - द) वो कार्य जिन्हें आप दूसरों के डर के मारे करते हैं या उन की सहमती के लिये करते हैं।
 - इ) आप के समय या क्षमता के बेकार के विचार या बेकार निवेदन।
 - प) वह कार्य जो दूसरों को करना चाहिये।
३. यदी आप किसी कार्यालय में काम करते हैं तो लोगों के आने जाने पर लगाम लगाने के यंत्र।
 - अ) जिस कार्य को करने के लिये एकाकीपन की आवश्यकता है, तो दर्वाजा बन्द कर लें।
 - ब) अपने कार्य के क्षेत्र से कुर्सीयाँ कम कर दे या वह वस्तुयें जो लोगों को आकर्षित करती हैं।
 - स) यदी आप से कोई मिलना चाहता है तो आप बात करने के लिये उस के पास जाईये।
 - द) यदी आप के तैहत काम करने वाले कर्मचारी आप के पास बार बार समस्या ले कर आते हैं, तो आप उन से कहिये की वे अपनी समस्या को लिख लें और साथ में उस समस्या से निकलने के तीन मुख्य तरीके बी लिख लें।

- इ) शरीर की भाषा का प्रयोग करें।
 - प) आप की मेज को दरवाजे से दूर रखें।
 - ज) आप के सचीव को कहिये की वह आवश्यकता अनुसार लोगों को बेजे।
 - च) आवश्यक लोगों से खाने के समय या चाय के समय पर मिलें।
४. टैलीफोन पर लोगों से बातें कम करने के यंत्र
- अ) पत्र लाखने के बजाये टैलीफोन से काम चालायें।
 - ब) अपने फौन से बात करने के समय की सूची बनायें और इन से सुबह के समय बात करें।
 - स) बात करने के लिये अधिक से अधिक समय तीन मिनट का रखें।
 - द) किसी सहायक से कह कर अपने फोन पर लोगों को छँटवायें।
 - इ) बात करने से पहले आप उस व्यक्ति से क्या चाहते हैं, इस की रूप रेखा बना लें।
५. यदि आप को समय में रुकावट नहीं चाहिये तो छिप जाईये। अलग कमरे में , या पुस्तकालय, या दूसरे कार्यालय, किसी होटल के कमरे, या अपनी कार में चले जाईये।
६. अपने कार्यों को समूह में बाँट कर एक समय में समाप्त कर दीजिये।
- द) क्या आप इन में से किसी वस्तु को छोड कर सकते हैं?
- १. सोने के समय को।

२. टी. वी के देखने के समय को।

निजी पत्राचार को लागू करने

१. प्रभु, क्या मैं केवल क्रियाशील हूँ, क्षमताशाली नहीं? क्या मेरे जीवन में ऐसी कोई बातें हैं जिन्हें आप बदलना चाहते हैं, ताकी मैं क्रियाशाली नहीं बरन क्षमताशाली बनूँ?

२. प्रभु, क्या कोई ऐसा रास्ता है जहाँ मैं अपने दिन के कार्यों को, जो मेरे पास समय है, उस के अनुसार कर सकूँ?

३. प्रभु, क्या मैं अपने लिये और अपने परिवार के लिये सही समय तैय कर पा रहा हूँ?

४. प्रभु, क्या मैं उस बात को पूरा करने में लगा हूँ जो मुख्य है, यै उस बात को जो आवश्यक है?

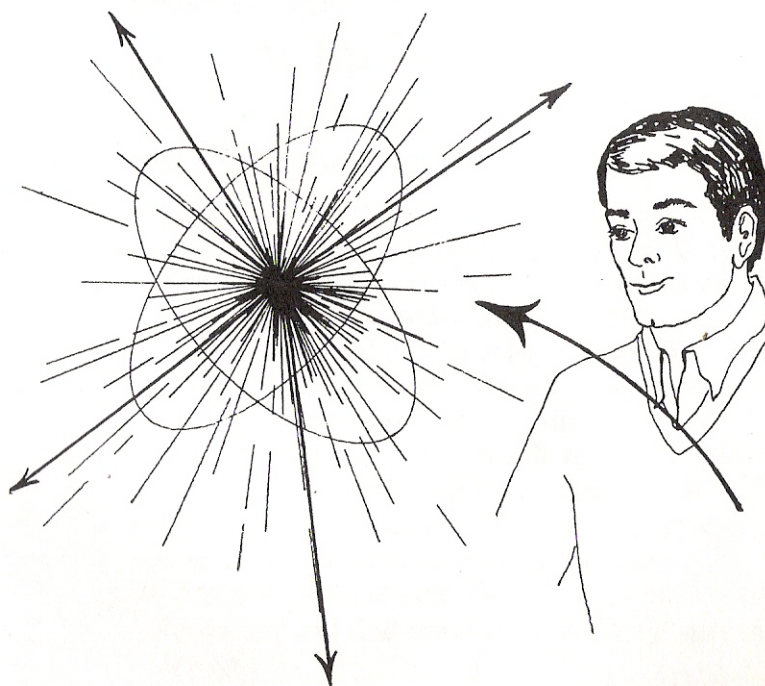
५. प्रभु, क्या मुझे जिन कार्यों को नहीं करना चाहिये, क्या मैं उन्हें छोड़ रहा हूँ?

६. प्रभु, क्या मैं लोगों का आना और टैलीफोन की बात चीत को सही प्रकार से कर रहा हूँ?

७. प्रभु, क्या मैं निद्रा का और दूरदर्शन देखने में सही समय बिता रहा हूँ?

स्तर तीन - चमत्कार का जन्म

Stage Three - Birth of Miracle



"In the Fullness of Time, God brought forth. . ."

(Gal. 4:4)

अध्याय १०

दर्शन की मृत्यु और पुणरुत्थान

परिचय - क्रिया पर एक बार फिर से दृष्टि डालना

अब हम मन के विश्वास की उन्नति के अन्तिम चरण में पहुँच गये हैं। परन्तु परमेश्वर की वाचा प्राप्त होने से पहले हम दर्शन की मृत्यु देखते हैं। इसे देखने से पहले हम क्रिया पर दृष्टि डालते हैं।

हम ने परमेश्वर के शब्द और दर्शन को अपने मनों में बसा कर अण्डा सेन किया। हम ने अपने भीतरी दिमाग, इच्छा और भावनाओं को परमेश्वर के शब्द और दर्शन से भरा। हम ने उन्हें भीतर ही भीतर तब तक घूमने दिया जब तक की वह अपने समय में एक बच्चे की तरह जन्म न ले। डॉ. चौ का कहना है की जो चौथे परिमाण में अण्ड सेन करता है वह तीसरे प्रमाण में उत्पन्न होता है। इस का अर्थ यह है की हम परमेश्वर के दर्शन और रहमा को अपनी आत्मा में जो बसाते हैं, तो वह इस संसार में पहुँचता है, जिस में हम जीते हैं।

परमेश्वर के वचन और दर्शन का अण्ड सेन कर के हम उत्पादक बन सकते हैं। हम यीशु की तरह बन जाते हैं, जो की एक सच्चा उदहारण है। उस ने वही कहा जो अपने पिता को कहते सुना, उसने वह कार्य करे जो उसने अपने पिता को करते देखा और इस तरह वह उत्पादक शक्ति बन कर, चंगाई और मुक्ति को उस स्थान पर ले कर आया जहाँ पर वह था। यदी हम पिता की आवाज और दर्शन को देख कर वही करें, तो हम बी उस तरह जी सकते हैं, जैसे यीसु रहते थे।

	इंद्रि	किस प्रकार प्रयोग करें	बाईबल में उदहारण	स्थिती
१.	भीतरी कान (यूह ५:३०)	परमेश्वर के रहमा को प्राप्त करना	उत्पत्ति १२:१-३	प्राप्ति
२.	भीतरी आँख (प्रका ४:१)	परमेश्वर का दर्शन पाना	उत्पत्ति १५:५,६	
३.	भीतरी दिमाग (लूका २:१९)	परमेश्वर के विचारों पर ध्यान लगाना	रोमि ४: २०, २१	
४.	भीतरी इच्छा	परमेश्वर के रहमा पर बोलना	उत्पत्ति १७ : ५	

	(प्रेरित १९:२१)			अण्ड सेवन
५.	भीतरी भावनाएँ (१ राजा २१:५)	परमेश्वर के रहमा और दर्शन पर कार्य करता है	उत्पत्ति १७ : २३	
अन्त में नतीज	उस दर्शन की मृत्यु जिसे मैं नहीं ला पा रहा हूँ		उत्पत्ति १६ : २ उत्पत्ति १७: १८, १९	जन्म
	अलौकिक रूप में उस दर्शन का पुनर जन्म "समय के पूरा होने पर परमेश्वर उसे देता है"		उत्पत्ति २१ : १, २ उत्पत्ति ४ : ४ अ	

दर्शन की मृत्यु - जैसे की अब्राहम के जीवन में देखते हैं

यह सब हमारे जीवन में सच हो, इससे पहले हम एक बहुत ही दुकदायी अनुभव से हो कर गुज़रते हैं और वह है मृत्यु और पुनरुत्थान, या "दर्शन की मृत्यु।"

यदी हम अब्राहम को देखें तो उसने पच्चीस वर्ष पहले विश्वास की वाचा को प्राप्त किया था। उत्पत्ति २१:५ यहाँ पर लिख लें।

अब्राहम ने जो अनुभव किया हम उस को "दर्शन की मृत्यु" कहेंगे। परमेश्वर के रास्ते पर देखते हैं की वह हमें तीन क्रमों से ले कर चलता है: (१) दर्शन का जन्म, (२) दर्शन की मृत्यु, और (३) अलौकिक रूप से दर्शन का पूरा होना।

हम जब दर्शन के प्राप्त करते हैं तो वह परमेश्वर द्वारा उस को जन्म देना होता है। परन्तु हम उस को अपनी योग्यता से पूरा करना चाहते हैं, की हम महिमा प्राप्त करें। परन्तु सारी महिमा परमेश्वर की है। परमेश्वर ने हमें सामान्य धर्म नहीं दिया की हम उसे अपनी शक्ति के अनुसार पूरा करें। मसीहत कोई परम्परा नहीं है यह अलौकिक है।

देखीये की किस तरह अब्राम और सारै, परमेश्वर के समय से इतने व्याकुल हो गये थे की उन्होंने अपनी पहुँच के अनुसार पूरा करना चाहा (उत्पत्ति १६) और सारै की दासी के द्वारा इश्माएल का जन्म करवाया। तेरह वर्ष बाद भी अब्राहम सोच रहा था की उसका तरीका परमेश्वर को पसन्द आयेगा (उत्प १७: १८, १९): "इश्माएल तेरी दृष्टि में बना रहे।" परन्तु परमेश्वर ने कहा "नहीं।" इस समय अब्राम ९९ वर्ष का था। सामन्य रूप से उसके दर्शन के पूरा होने का कोई रास्ता नहीं था। दर्शन की मृत्यु हो गयी थी और अहाम को स्वयं के सामने मरना पडा।कोई

रास्ता नहीं था केवल इस के की वह परमेश्वर की आज्ञा माने और उस पर निर्भर करे। उसने ऐसा ही किया। परमेश्वर ने जो आदेश उसके दिये, वह उन के पूरा करता रहा और इस तरह परमेश्वर ने उसे अलौकिक तौर से उस वर्ष एक बच्चा देने का वादा किया (उत्प १७: १८, १९)। इसहाक का जन्म उसी वर्ष हुआ।

दर्शन की मृत्यु के बाद अलौकिक रूप में वह दर्शन पूरा होता है। हम इस अन्धकार के समय परमेश्वर की आज्ञा मानते रहें।

अब्राहम को इस दर्शन के कारण केवल एक बार नहीं मरना पड़ा, परन्तु दूसरी बार उसे उस दर्शन को वेदी पर चढ़ाना पड़ा। अब्राहम अब तक समझदार बन गया था। वह जानता था की परमेश्वर ने जो इसहाक को वेदी पर बली चढ़ाने को कहा है, तो वह यकीनन इस दर्शन को अलौकिक रूप से पूरा करेगा। इब्रानियों ११:१९, में जो अब्राहम के विचार लिखे गये हैं, उन के यहाँ पर लिख लें।

परमेश्वर कई बार दर्शन को त्याग देने को कहेगा, क्योंकि यह उसका है हमारा नहीं, उसे महिमा मिलनी चाहिये हमें नहीं।

यीशु की शिक्षा और उदहारण

प्रार्थनापूर्वक और ध्यानपूर्वक यूहन्ना १२:२३ - २५ लिख लें। यह वचन आप से क्या कहता है?

सारे जीवन का सिद्धान्त यही है की पुणरुत्थान का जीवन मृत्यु के बाद ही प्राप्त होता है। बीज मन कर ही वृक्ष में परिवर्तित होता है। यीशु के भी मृत्यु के बाद ही पुणरुत्थान की महिमा प्राप्त हुई। परमेश्वर का रहमा और दर्शन भी, शारीरिक रूप से मर कर ही अलौकिक पुणरुत्थान प्राप्त करेगा।

यीशु ने अपने चेलों से कहा की वह अपना राज्य लायेगा। यह रहमा और दर्शन, चेलों के मन में उस समय मर गये जब उन्होंने मसीह को क्रूस पर प्राण देते देखा, परन्तु परमेश्वर ने इसे अलौकिक रूप से पेंतिकोस्त के दिन जब पूरा किया तो यह उन की सोच से बिल्कुल अलग था।

दर्शन की मृत्यु के पवित्रशास्त्र से कुछ उदहारण

युसुफ को बचपन में एक स्वप्न आया था की वह अपने भाईयों और माता पिता के उपर राज्य करेगा। परन्तु यह चित्र उस समय मर गया जब युसुफ को बंदी बना कर बेचा गया और वह बंदिग्रह में डाला गया। इस कठिनाई के समय परमेश्वर ने उसके टुटेपन को ठीक किया उसकी नम्रता को क्षमताशील बनाया और समय आने पर अलौकिक रूप से उस के स्वप्न को पूरा किया। परमेश्वर एक विनम्र पुरुष को उस स्थान पर रखना चाहता था, किसी टुटे हुए ढीठ जवान को नहीं। दर्शन की मृत्यु के बाद भी परमेश्वर अपने प्रयोजन पर कार्य करता रहता है।

इस्राएलीयों को फरीसीयों के दास्तव से बचाने के लिये मूसा को अधिकार दिया गया। शारीरिक रूप से उसने पहले उस फरीसी को मारा जो किसी इस्राएली को तंग कर रहा था। परमेश्वर उसे वहाँ से निकाल कर, चालीस वर्ष तक, बिहड में उसे अपने रास्ते पर तैयार करता रहा। तब परमेश्वर ने आलौकिक तौर से अपने दर्शन को पूरा किया।

दर्शन की मृत्यु पर, पवित्रशास्त्र में से यह कुछ उदहारण हैं। पढते समय आप कुछ और उदहारण भी पायेंगे।

मृत्यु पर विजय कैसे पायें

कोई भी मृत्यु का अनुभव नहीं करना चाहता। यह एक दुःखपूर्ण, अनचाहा अनुभव है। कई मसीही लोग क्रूस को नहीं अपनाना चाहते। उन्हें उस में पुनरुत्थान और परमेश्वर की महिमा नहीं दिखती। इस कारण कई मसीही अलौकिक मसीहत नहीं पाते, वे आराम से जीवन बिताना चाहते हैं। यीशु ने क्रूस पर विजय पाई। इब्रानियों १२:२ यहाँ पर लिख लें।

यीशु ने क्रूस पर अपनी दृष्टि लगा कर नहीं रखी। फिर भी उस ने यह दर्द भरा कार्य किया। क्रूस ले लटके रहने से जीवन प्राप्त नहीं होता।

उसे क्रूस के पार वह खुशी दिखती है जिसे पाने के लिये उसे क्रूस की शक्ति चाहिये।

मुझे मेरी दृष्टि को परमेश्वर की इच्छा पर लगाये रखना है जो मृत्यु के अनुभव के बाद आलौकिक रूप से जीवन पायेंगे। यीशु ने कलवरी के पार पुनरुत्थान की महिमा को देखा और खुशी ने उन्हें शक्ति दी की वे क्रूस के दर्द को सह सके।

"उस आनन्द के लिये जो उसके आगे धरा था, क्रूस का दुःख सहा।" - इब्रानियों १२:२

यदी मरते समय कोई अपनी दृष्टि को क्रूस पर लगायेगा तो वह अवश्य गिर जायेगा और विफल हो

जायेगा। यीशु गतसमनी गये और दुखी मन से प्रार्थना करी की परमेश्वर उन्हें उस की इच्छा को पूरा करने की शक्ति दे। इस दुखी प्रार्थना में उन्होंने विजय प्राप्त करी। परमेश्वर की इच्छा, उन के मन में और गहराई से छा गयी, और दुख को सहने के लिये उन्होंने अनुग्रह प्राप्त किया।

हमें बी दुक भरी प्रार्थना से जंग को जीतना है। । जब हम बार बार परमेश्वर को पुकारते हैं तो हमारे मनो में शक्ति और दर्शन, एक बार फिर गहराई से स्थापित होता है।

इस स्थान पर या तो जंग जीती जाती है, या हारी जाती है। इस स्थान पर या तो हम आलौकिक मसीहत में प्रवेश करते हैं या विफल हो जाते हैं।

गतसमनी हमें कलवरी के लिये तैयार करता है। कलवरी हमें महिमा के लिये तैयार करती है।

कई लोग यह कह सकते हैं की यीशु ने इसलिये दुख उठाया की हमें दुख न हो। नहीं, मसीह ने इसलिये दुख उठाया की हमारा दुख उस के साथ जुड़ जाये, तोकी परमेश्वर की महिमा का बहाव हो सके।

शरीर में मृत्यु की पीड़ा और पाप ना करना

दर्शन की मृत्यु का अर्थ है की की स्वयं का और पाप की मृत्यु होना, ताकी मैं मसीह में और धार्मिक बन जाऊँ। १ पतरस ४:१, १३, लिख लें।

यहाँ यह बात साफ है की दुख एक अंश है, और यदी हम मसीह पर केंद्रित रहें तो इस से कुछ अच्छा ही होता है (१ पतरस ४ : १२ - १९)। इसलिये हारे लिये परमेश्वर की इच्छा को पहचानना आवश्यक है। हमें बंधुत्व बनाये रखना है, विशेष तौर से जब दर्शन की मृत्यु हो रही है। बंधुत्व में हमें समझ और शक्ति मिलती है। समझदारी से हमें अवकाश मिलता है की हम परमेश्वर के महान कोर्यों में उस का साथ दें। मृत्यु से भागने के बजाये हमें उसे समझदारी, शक्ति और मेल जोल से अपनाना चाहिये। तब हम आलौकिक मसीहत में प्रवेश करेंगे।

दर्शन का आलौकिक रूप में पूरा होना

पिछले अध्यायों में हमने इस विषय पर कुछ चर्चा करी है। उत्पात्ति १७ और १८ में कुछ सिद्धांत हैं, जो आलौकिक रूप दर्शन के पूरा होने के आधार हैं। अब्राम के जीवन में बंधुत्व, १३ वर्षों बाद दुबारह स्थापित हुआ। सब से पहले परमेश्वर उसे आज्ञा पालन करने के लिये कहता है। "मेरी उपस्थिती में चल और सिद्ध होता जा

(उत्पत्ति १७ : १)" परमेश्वर पवित्रता चाहता है। चाहे वह स्वयं कार्य में हार गया था फिर भी परमेश्वर ने अब्राहम को नहीं दुत्कारा। वाचा को पूरा करने से पहले वह पवित्रता चाहता है। उत्पत्ति १७:२३ में हम देखते हैं की अब्राहम ने "उसी दिन" परमेश्वर की आज्ञा का पालन किया। यह एक रास्ता था ताकी परमेश्वर अब्राहम से अधिक बात कर सके (उत्पत्ति १८:१)। इस आगे के बंधुत्व में, परमेश्वर ने पहली बार समय निर्धारित किया की वह एक वर्ष में उस का दर्शन पूरा करेगा।

मैंने यह देखा है की प्रार्थना, उपवास, बंधुत्व और आज्ञापालन से परमेश्वर द्वारा आलौकिकता पूरी होती है। मेरी आत्मिक जीवन का हर महत्वपूर्ण कदम, प्रार्थना, उपवास, बंधुत्व और आज्ञापालन से पूरे हुए हैं।

निजी उदहारण

मैं डॉ. चौ के जीवन का एक उदहारण देता हूँ।
डॉ. चौ के मन में एक स्वपन था की उस के पास कोरिया में सब से बड़ा गिरजाघर हो। परन्तु जब वह शारीरिक रूप से उस स्वपन को पूरा करने में लगा, तो वह हताश हो गया और इस धुन में वह पास्टर के रूप में अपनी जिम्मेदारी भी भूल गया। इस तरह वह मृत्यु की क्रिया में प्रवेश कर गया और उस के सारे निजी स्वपन टूट गये और साथ में कोरिया का सब से बड़े गिरजाघर का स्वपन भी टूट गया। परन्तु परमेश्वर अपने कार्य में लगा हुआ था, उसकी निजी इच्छा को तोड़ कर उसे नम्र बनाने में लगा हुआ था। परमेश्वर ने डॉ. चौ को बताया की उसकी शरीर को चंगाई मिलने में दस वर्ष लग जायेगा, क्योंकि परमेश्वर जानता था की डॉ. चौ के चरित्र की योग्यता को सही करने में दस वर्ष लग जायेगा।

उन दस वर्षों में परमेश्वर ने डॉ. चौ के गिरजाघर के चरित्र को बदला तोकी वह सारे स्वपन और दर्शन से ऊँचा निकल जाये। आज उसके पास न केवल कोरिया का सब से बड़ा गिरजाघर है, परन्तु सारे संसार में सब से बड़ा गिरजाघर है। यदी हम आत्मा में परमेश्वर के साथ बंधुत्व रखें तो इस तरह के कार्य हमारे जीवन में भी होते हैं।

निजी पत्राचार लागू करना

परमेश्वर से कहीये की वह आप को बताये की इस सारे क्रम में आप कहाँ पर हैं। वह जो कहता है उस के लिख लें।

प्रार्थना: "प्रभु, हम पुणरुत्थान की महिमा के स्वप्न में रहें।"

मृत्यु के रेगिस्तानी अनुभव को जल्द से पार करना

कई लोग लगातार मृत्यु में जीते हैं। वे यीशु के लिये दुःख उठाते हैं। वे हमेशा कोई ना कोई कठिनाई से गुजरते रहते हैं। वे कभी भी वादा किये हुए देश तक नहीं पहुँचते। वे सोचते हैं की परमेश्वर न से यही चाहता है। मैं उन से कहना चाहूँगा की जितनी जल्दी हो सके हमें इस बिहड जगह को पार कर के वादा किये हुए देश यानी कनान को जाना है।

इस्राएली लोग उस रेगिस्तान को १२ दिनों में पार कर सकते थे, परन्तु उन्हें ४० वर्ष लग गये। जिस पीढ़ी ने मिस्र छोड़ा था उसे रेगिस्तान में मरना पड़ा। हमें सिनै पर्वत के चक्कर काटते नहीं रहना है। हम परमेश्वर की वाचाओं को मान कर उस रेगिस्तान को जल्द से जल्द पार कर सकते हैं, ताकी हमारा जीवन हम उस वादा करे हुए देश में बितायें बजाये रेगिस्तान में मरने के। हमारे जीवन में जो कठिनाईयाँ और दुःख आते हैं, हमें उन को समझना होगा। निम्न कुछ सामान्य कठिनाईयाँ दी गयी हैं, जिन्हें आप पत्राचार के द्वारा पार कर सकते हैं। इस प्रयोग का कारण यह है की आप को जल्द से जल्द कठिनाई के स्थान से हटा कर दूध और मधू के देश ले जाया जाये।

उन रुकावटों को साफ करना जो दर्शन के पूरा होने में आड़े आती हैं।

अ) निम्न दिये गये सामान्य रुकावटे लग सकती हैं, परन्तु ऐसा है नहीं।

१. बेसब्रि - इस बात का ध्यान रहे की कम समय में आप अधिक की आशा न रखें। जितनी बड़ी सफलता आप चाहेंगे, उतना अधिक समय लगेगा।
२. दरिद्रता से तैय किये हुए लक्ष्य - क्या आप के लक्ष्य प्रार्थनापूर्वक निर्धारित किये गये हैं? परमेश्वर ने आप को लक्ष्य दिये हैं उस में हर दिन महत्व रखता है? क्या यह लक्ष्य, स्पष्ट और नापने योग्य है और क्या इस लक्ष्य को समाप्त करने का दिनांक निर्धारित है? क्या आप कार्य करने के जाल में फँस गये हैं?
३. विप्लव - क्या आप को निर्देश और समर्पण की जानकारी है? अच्छे संगठन का अर्थ है की कार्य करने का सही माहोल बनाना, कार्य करने के सही यंत्र और योजना बनाना तोकी आप आराम से कार्य कर सकें।
४. क्या आप को ऐसा लगता है की आप की समस्या या लक्ष्य अती प्रबल है - यदी बड़े कार्य हों तो उन के टुकड़ों में बाँट कर एक समय में एक कार्य करीये।

ब) परिस्थिती की रुकावटों को हटाना

१. दैवी विधी - जीवन में परमेश्वर के साथ अधिक क्षमता से रहने के लिये निम्न दिये गये पर ध्यान डालीये:

- अ) हर बात का दैवी समय होता है। "समय के पूरा होने पर परमेश्वर सामने लाता है..."। प्रभु के समय को पहचान कर उस के साथ काम करिये।
- ब) परमेश्वर की ओर अपने आप को खुला रखें ताकी यदी अचानक से कुछ बात बताता है जिस के बारे में आप ने सोचा भी नहीं होगा, तो आप विचलित नहीं होंगे।
- स) यह बात याद रखीये की परमेश्वर का अनुग्रह एक से दूसरे की ओर बहता है। नये दोस्त बनाईये।
- द) अपने लक्ष्यों को पाने के लिये उत्पादकता से कार्य करीये।
- इ) अपने भीतर की पवित्रात्मा की बात को ध्यान से सुनिये।
- फ) विश्वास के साथ बहार जोने को तैयार रहीये।
- ग) अपनी हानी को कम करने के लिये प्रार्थनापूर्वक और तुरन्त कार्य करीये।
- ह) परमेश्वर से कहीये की वह आप को एक अनुमोदित योजना भी दे ताकी जिस योजना पर आप कार्य कर रहे हैं, वह ठीक से न चले तो इस का प्रयोग कर सकते हैं। परमेश्वर के पास भी इस सृष्टि के लिये एक अनुमोदित योजना थी, और जब मनुष्य ने पाप किया तो उस ने उस को लागू किया।
- ए) यह मत सोचीये की जीवन आप को कुछ देगा। आप ने स्वमय को जीवन के लिये देना है।

२. पैसा - ऐसा नहीं है की आप के पास यदी पैसा नहीं है तो आप उस कार्य को नहीं कर सकते जिस की योजना आप ने बनाई है। अच्छे विचार पैसे को आकर्षित करते हैं।

- अ) कार्य के लिये यदी आवश्यक हो तो पैसा उद्धार ले सकते हैं।
- ब) काम में न आने वाली वस्तुओं को बेच कर पैसा एकत्रित किया जा सकता है।
- स) पैसा खड़ा करने के लिये कोई उत्पादक योजना बनाईये।
- द) एक और उदयोग करने की सोचीये।

३. अनुभव की कमी - हर व्यक्ति अनुभव की कमी से ही प्रारम्भ करता है और बाद में अनुभव पाता है। गलती करो तो उस से सबक सीखने की क्षमता रखो। बाहरी अनुभव इन बातों से प्राप्त हो सकता है:

- अ) अनुभव पाने के लिये किसी के लिये बिना पैसे लिये कार्य करीये।
- ब) अनुभव की कमी में योग्यता आगे आ सकती है।
- स) सीखने की चेष्टा रखीये।
- द) भीतर जो आप की इच्छा है उसे बाहरी रूप में विश्वास के साथ कार्य करीये।

परिस्थिती की रुकावटों को हटाना - निजी पत्राचार

याद रखीये: प्रार्थना करते समय अपनी दृष्टि यीशु पर रखीये और इन प्रश्नों को उस के सामने रखीये। वह इन के बारे में क्या कहते हैं उस पर ध्यान दें।

१. बोसत्रि - प्रभु, क्या मैं बहुत जल्दी बहुत कुछ चाह रहा हूँ? मुझे बताईये की आप को इस परिस्थिती के बारे में क्या लग रहा है।

२. लक्ष्य - प्रभु, मेरे मन में जो लक्ष्य आप ने डाले हैं, उन्हें एक बार मुझे याद दिलाइये। लम्बे दौर के लक्ष्य क्या हैं? मुझे इस समय क्या करना है?

३. विप्लव - प्रभु, जो कार्य आप चाहते हैं की मैं करूँ, क्या मेरे पास उस कार्य को करने का सही वातावरण, शिक्षा और यंत्र हैं? इस समय इस में क्या आप कुछ जोड़ना चाहते हैं?

४. क्या आप को ऐसा लगता है की आप की समस्या या लक्ष्य अती प्रबल है - प्रभु, क्या कोई ऐसा तरीका है जिस

से मैं इस कार्य को टुकड़ों में बाँट कर कार्य करूँ, और जो मुझे इस समयनजर नहीं आ रहा, पर आप चाहते हैं कि मैं प्रयोग कर इस कार्य को करूँ? बताईये की मैं कैसे करूँ।

५. अपने कार्यों को परमेश्वर के समय के साथ जोड़ना -

अ) प्रभु, मैं इस समय जो कर रहा हूँ, क्या मैं उसे आप के निर्धारित समय के अनुसार कर रहा हूँ?

ब) क्या आप मुझे कुछ दिखाना चाहते हैं, जो मैं नहीं देख पा रहा हूँ?

स) क्या मेरे कोई नये दोस्त बन सकते हैं, जिन से आप मुझे मिलवाना चाहते हैं? वे कौन हैं? मैं उन्हें कैसे खोजूँगा?

द) क्या कोई ऐसा कार्य है जो मैं इस समय नहीं कर रहा हूँ परन्तु मुझे करना चाहिये?

इ) प्रभु, क्या कोई अनुमोदित योग्ना है जो आप मुझे देना चाहते हैं? वह क्या है?

फ) प्रभु, क्या मेरा स्भाव ठीक है? क्या मैं ऐऐसा सोचता हूँ की जीवन ने मुझे कुछ देना है या मैं दूसरों को अपना जीवन त्याग देने के लिये तैयार हूँ?

६. पैसा - आप इस कार्य के लिये किस रूप में पैसा देना चाहते हैं? क्या आप चाहते हैं की मैं उधार लूँ, कुछ वस्तुयें बेच दूँ, एक और काम करूँ, या इस कार्य में पैसा लगाने के लिये आप के पास कोई और उत्पादक विचार है?

७. अनुभव की कमी - प्रभु, इस कार्य को करने के लिये क्या किसी क्षेत्र में मेरे पास अनुभव की कमी है? मुझे दिखाईये।

अ) प्रभु, इस कार्य को पूरा करने के लिये क्या मैं किसी लाभ या योग्यता का प्रयोग करूँ?

ब) प्रभु, मेरे सामने जो लक्ष्य रखे गये हैं, उन कार्यों को करने के लिये क्या मैं अनुभव पाने के लिये किसी के साथ कार्य करूँ? यदि हाँ, तो किस के साथ? और कब?

स) प्रभु, जो मेरे भीतर आप की आत्मा इच्छा व्यक्त करती है क्या मैं उसे कर पा रहा हूँ?

द) प्रभु, जो बातें आप ने मेरे मन में डाली हैं, क्या मैं उन पर विश्वास के साथ कार्य कर रहा हूँ?

अध्याय ११

सर्वशक्तिमान परमेश्वर के रहमा और दर्शन को जन्म देना

आप का राज्य आये, आप की इच्छा जैसे स्वर्ग में पूरी होती है वैसे ही धरती पर भी हो.....

परमेश्वर की आच्छा, मनुष्य की आत्मा के द्वारा उत्पन्न होना। इस ब्रह्मामंड का परमेश्वर, अपनी सृष्टि के शरीरधारी में, अपनी इच्छा को पूरा करता है।

यही बात भविष्यवक्ताओं ने बतायी थी। यही बात यीसु ने कर के दिखाई थी। यह परमेश्वर के मन की इच्छा का पूरा होना है। यह परमेश्वर की महिमा की ज्योति है जो मनुष्य के मन में प्रगट हुई है। यह परमेश्वर का राज है जो हमारे मन में धडक रहा है। यह मसीहत का कार्य है जैसा उसे करना चाहिये

यीशु जब हमारे बीच में था (बिमारों को चंगा कर रहा था, शैतानों को निकाल रहा था, वगैराह), उस ने कहा था की परमेश्वर का राज निकट है। वह उन के बीच में था। उसने अपने शिष्यों को प्रार्थना करना सिखाया, "आप का राज्य आये, आप की इच्छा जैसे स्वर्ग में पूरी होती है वैसे ही धरती पर भी हो।" यह युनानी भाषा में को निवेदन नहीं था। यह एक आदेश था।

	इंद्रि	किस प्रकार प्रयोग करें	बाइबल में उदहारण	स्थिति
१.	भीतरी कान (यूह ५:३०)	परमेश्वर के रहमा को प्राप्त करना	उत्पत्ति १२:१-३	प्राप्ति
२.	भीतरी आँख (प्रका ४:१)	परमेश्वर का दर्शन पाना	उत्पत्ति १५:५,६	
३.	भीतरी दिमाग	परमेश्वर के विचारों पर ध्यान	रोमि ४: २०, २१	

	(लूका २:१९)	लगाना		
४.	भीतरी इच्छा (प्रेरित १९:२१)	परमेश्वर के रहमा पर बोलना	उत्पत्ति १७ : ५	अण्ड सेवन
५.	भीतरी भावनाएँ (१ राजा २१:५)	परमेश्वर के रहमा और दर्शन पर कार्य करता है	उत्पत्ति १७ : २३	
अन्त में नतीज	उस दर्शन की मृत्यु जिसे मैं नहीं ला पा रहा हूँ		उत्पत्ति १६ : २ उत्पत्ति १७: १८, १९	जन्म
	अलौकिक रूप में उस दर्शन का पुनर जन्म "समय के पूरा होने पर परमेश्वर उसे देता है"		उत्पत्ति २१ : १, २ उत्पत्ति ४ : ४ अ	

हम जो स्वर्गिय वस्तु देखते हैं, उसे आदेश करना सीखें ताकी वह धर्ति पर उतर आये। यूसु ने ऐसा हि किया। उस ने अपने चेलों से भी इसी तरह करने को कहा। उन्होंने वैसा ही किया। हमें भी ऐसा ही करना है। हम कर सकते हैं। हम ने मन का विश्वास या आत्मिक उत्पादका के बारे में सीका है, और अब हम उन्हें अपने जीवन में प्रयोग करने के लिये तैयार हैं।

हम सर बनने के तैयार हैं, दुम नहीं, देने वाला, लेनेवाला नहीं, पल दायक और श्रापित नहीं। हमने सर्वशक्तिमान परमेश्वर की आलौकिक शक्ति में बहना सीखा है। अब हमारे जीवन की सीमा नहीं है। केवल ईश्वर। और ईश्वर में भी थोड़ी ही सीमा है। प्रबु ने बार बार मुझ से कहा है, "मार्क, अब तुम्हारे जीवन में कोई सीमा नहीं है। तुम मेरी असीमा में प्रवेश कर चुके हो। मेरी विशालता में। मेरी शक्ति में। मेरी योग्यता में। अब तुम्हारे जीवन में कोई सीमा नहीं है।"

कितना अदभुत। अब मेरी योग्यता या बलहीनता में सीमा नहीं। मैं परमेश्वर की विशालता में प्रवेश कर सकता हूँ। क्या अधिकार है। कितनी खुशी है। कितना सम्मान है। उस के नाम की महिमा हो।

अब आप भी परमेश्वर की असीमा और विशालता में प्रवेश कर सकते हैं। अब आप के जीवन में भी कोई सीमा नहीं है। केवल सर्वशक्तिमान परमेश्वर की सीमा के। आप के शारीरिक धाँचे से कई गुणा अधिक शक्ति और विशालता, अब आप को भी मिलती है। आप ने पवित्रात्मा से उत्पन्न उत्पादका में प्रवेश किया है। आप ने परमेश्वर की इच्छा को जन्म देना सीख लिया है। आप को राजा बनाया गया है और अधिकार दिया गया है, और आप मसीह के साथ स्वर्ग में परमेश्वर के दाहिने हाथ पर बैठे हैं।

जन्म देने के लिये मेहनत लगती है

जन्म देते समय आप को अपनी सारी शक्ति का प्रयोग करना पडता है। आप को अपने आप को उसे सौंप देना होता है, जो उस समय आप के पास है। जो बच्चा परमेश्वर ने आप के अंदर डाला है, उसे जन्म देना और भी कठिन है। आप के जीवन में इस तरह का समय बी आ सकता है। यह कुछ समय के लिये हो सकता है। हमेशा के लिये नहीं। परन्तु आप को इन पर जन्म देते समय पूरा ध्यान लगाना होगा।

एक निजी उदहारण

१९८७ में परमेश्वर ने मुझ से कहा की मैं घर पर रह कर छापने का कार्य प्रारम्भ करूँ। हम बहुत धन

छापने में खर्च कर रहे थे और यदी हम यह काम स्वयं करें तो हमारा खर्चा कम हो सकता था। तीन चार महिने पत्राचार के बाद परमेश्वर ने मुझे से घर पर कार्य करने के कहा। मैंने सोचा, "अब तो मैं लुट गया।" मुझे छपाई करने के बारे में कुछ भी पता नहीं था। मैंने लोगों को शिक्षा दिलावाना प्रारंभ किया और मेरा काम यह था की मैं देखूँ की एक विभाग से दूसरे विभाग जोने में कोई परेशानी न हो और काम न रुके। मुझे १०० से अधिक वस्तुओं की देख रेख भी करनी थी जिन्हें मैं लोगों को बेचता था। यह सब कार्य करने में सारी गर्मियाँ लग गईं। मुझे पूरा ध्यान केंद्रित करना पड़ता था। मुझे परमेश्वर से आदेश मिला था की मैं स्वयं ध्यान दूँ की सब कुछ ठीक चल रहा है। जब तक बर्फ गिरने लगी तब तक सब आराम से चलने लगा और मैं दूसरे कामों की ओर भी अपना ध्यान बाँटने लगा।

तो इस तरह आप जीवन में परमेश्वर की योजना को पूरा करने में लग जाते हैं और इस समय आप पूरा ध्यान उस पर केंद्रित करते हैं। यह थोड़े समय के लिये होता है। कुछ और नया करने से पहले आप को विश्राम का समय भी मिल सकता है।

निजी पत्राचार को लागू करना

अपने जीवन में ऐसा समय बताईये जब परमेश्वर ने आप को जन्म देने की क्रिया के लिये प्रयोग किया हो। क्या इस समय आप, परमेश्वर के उस दर्शन को जन्म दे रहे हैं जो परमेश्वर ने आप के मन में डाला है? यदी हाँ, तो स्थिती को समझाईये।

प्रार्थना: प्रभु, आप का धन्यवाद हो की आप ने मनुष्यों को, आप के सेवकों के द्वारा चुना है की वह आप के राज्य को जन्म दे।

अध्याय १२

परमेश्वर को सारी महिमा देना

जन्म देने की क्रिया अब पूरी हुई। काम हो गया। सब सन्तुष्ट हैं। हर कोई एक दूसरे को बधाई दे रहा है। हम ने कितना अदभुत काम किया है।

जब हम परमेश्वर की इच्छा को पूरा करने का काम समाप्त करते हैं तो हमें जो महिमा प्राप्त होती है, उसे हम किस तरह संभालते हैं? हमें ऐसे समय में आस पास रहना अच्छा लगता है। परन्तु आप और मैं यह जानते हैं की इस कार्य को पूरा करने में हमारी शक्ति का प्रयोग नहीं हुआ। यह हमारा विचार भी नहीं था। वह हम नहीं थे जो इस कार्य को कर रहा था। हम सर्वशक्तिमान परमेश्वर के बहाव में आ गये थे। कितनी खुशी है की हम इस बहाव में फँस गये।

जब लोग हमें आकर बधाई देते हैं, तो हम क्या करें? हम जानते हैं की वे हमारे अन्दर उपस्थित परमेश्वर को बधाई दे रहे हैं, और हम मुस्कुरा कर अपने भीतर धन्यवाद देते हुए कहते हैं, "धन्यवाद हो यीशु। आप के साथ बहते हुए और लोगों के लिये आशिर्वाद का कारण बनाना महान अनुभव कराता है।" बहार से हम कह सकते हैं, "मुझे खुशी है की यह आप के लिये आशीष का कारण बना," या, "परमेश्वर की स्तुती करो। परमेश्वर सच में अदभुत है, है न?" हम खुश होते हैं क्योंकि हम जानते हैं की इस कार्य को करने वाला परमेश्वर है।

हम जानते हैं की वही अलफा और ओमेगा है, प्रारंभ और अन्त है, और उस के अलावा कोई नहीं। हमारा स्वयं पर निर्भर होना टूट गया है क्योंकि वह हमें स्वप्न की मृत्यु के द्वारा ले गया है। हम केवल उस के अनुग्रह के कारण खड़े हैं। हमें अपनी निर्बलता और उसकी शक्ति के बारे में पता है। हमारा जीवन निर्बल है जो उसकी शक्ति से मिलता है। हमारा जीवन उस में छुप गया है। इसलिये, जब कोई व्यक्ति बधाई देता है तो हम "धन्यवाद" कह सकते हैं, यह जानते हुए की यह यीशु है जो "धन्यवाद" कह रहा है।

	इंद्रि	किस प्रकार प्रयोग करें	बाईबल में उदहारण	स्थिती
१.	भीतरी कान (यूह ५:३०)	परमेश्वर के रहमा को प्राप्त करना	उत्पत्ति १२:१-३	प्राप्ति
२.	भीतरी आँख (प्रका ४:१)	परमेश्वर का दर्शन पाना	उत्पत्ति १५:५,६	
३.	भीतरी दिमाग (लूका २:१९)	परमेश्वर के विचारों पर ध्यान लगाना	रोमि ४: २०, २१	अण्ड सेवन
४.	भीतरी इच्छा (प्रेरित १९:२१)	परमेश्वर के रहमा पर बोलना	उत्पत्ति १७ : ५	
५.	भीतरी भावनाएँ (१ राजा २१:५)	परमेश्वर के रहमा और दर्शन पर कार्य करता है	उत्पत्ति १७ : २३	
अन्त में नतीज	उस दर्शन की मृत्यु जिसे मैं नहीं ला पा रहा हूँ		उत्पत्ति १६ : २ उत्पत्ति १७: १८, १९	जन्म
	अलोकिक रूप में उस दर्शन का पुनर जन्म "समय के पूरा होने पर परमेश्वर उसे देता है"		उत्पत्ति २१ : १, २ उत्पत्ति ४ : ४ अ	

क्या हमें यह डर नहीं की हमारे अन्दर घमण्ड न आ जाये?

मुझे नहीं लगता। यदी हम परमेश्वर से डरते हैं, और उसके साथ बंधुत्व बनाये रखते हैं, तो हम जानते हैं की वह सब कुछ संभाल लेगा। पत्राचार करते समय वह मुझे बताता है की वह कौन है और मैं कौन हूँ। जब मैं यह सोचता हूँ की मैं सब कुछ संभाल लूँगा, तो वह मुझे हमारे रिश्ते के बारे में याद दिलाता है और मुझ से घुटने के बल हो

कर प्रार्थना करने के कहता है। वह मेरी निर्बलता को आगे लाता है ताकी मैं उसकी बाहों में समा कर दया और शक्ति मांगूँ। उस के पास कई तरीके हैं जिस से वह मुझे अपने सामने और भाईयों के सामने नम्र बनाता है।

मुझे लगता है की केवल विफल व्यक्ति ही घमण्ड हो सकता है। मैं इसलिये चाहता हूँ की आप पत्राचार चालू रखीये ताकी परमेश्वर आप के घमण्ड को काबू में रखे। यदी आप ऐसा नहीं करते तो घमण्ड आप के जीवन में आकर आप को नाश कर देगा।

शांत रहना, हँसते रहना और जीवन का आनन्द लेना

जीवन में हमें खेल का स्वभाव रखना चाहिये। अपने आप को अधिक गंभीरता से मत लें। परमेश्वर को गंभीरता से लें। जीवन में वही सब कुछ है। अपने आप को एक ऐसा व्यक्ति समझीये जो अपने बहाव में फँस कर बहता जाता है। उसके वैभव और सुन्दरता पर हँसीये और खुश रहीये। उसने जो बंधुत्व का जीवन आप को दिया है उस का आनन्द लीजीये। आप में से जो अविश्वासनीय उत्पादकता बह रही है उस का आनन्द लीजीये। जब तक आप खुश रहेंगे और स्वयं को गंभीरता से नहीं लेते रहेंगे तब तक वह आप के जीवन में महान कार्य करता रहेगा।

आप के जीवन में परमेश्वर ज्योति बन कर आये। शांति।

निजी पत्राचार को लागू करना

प्रभु, क्या मेरे जीवन के हर कार्य के लिये मैं आप को महिमा दे रहा हूँ? मुझ से इस विषय में बात करीये।

परिशिष्ट

परिशिष्ट अ - रहमा की शक्ति को समझना: "कहा हुआ वचन"

परिशिष्ट ब - परमेश्वर को आप की देखने की योग्यता को लौटाने देना

परिशिष्ट स - दर्शन की मृत्यु का एक सारांश चित्र

परिशिष्ट द - विश्वास में चलते हुए अब्राहम ने जो दूसरे पाठ सीखे

परिशिष्ट अ
रहमा की शक्ति को समझना: "कहा हुआ वचन"

	रहमा का प्रकार	बाइबल से उद्धरण
अदिक जीवनदायक	मैं वही कहता हूँ जो परमेश्वर मुझ से कह रहा है (यानी मेरा रहमा उस के रहमा से आता है)।	"यह बातें जो मैं तुम से कहता हूँ अपनी ओर से नहीं कहता, परन्तु पिता मुझ में रहकर अपने काम करता है।" (यूह १४:१०) "जो वचन तूने मुझे दिये, मैंने उन्हें उनको पहुँचा दिया।" (यूह १७:८) (और देखीये, लूका १:३८; ५:५; यूह ५:१९; २०, ३०; ८:२६, २८, ३८; ३:३४; ६:६३; प्रेरित १०:१३; २ कुरिं १२:४; इफि ६:१७; इब्र ११: ३; १२: १९)।
थोडा बहुत जीवन दायक	मैं परमेश्वर का लिखा हुआ वचन सुनाता हूँ।	"मंदिर में खड़े हो कर इस जीवन की सब बातें लोगों

		को सुनाओ (रहमा)।" (प्रेरित ५: २०)
सामान्य	मैं अपने आप से बोलता हूँ.	".....हर एक बात (रहमा) दो या तीन गवाहों के मुँह से निश्चय की जायें" (मत्ति १८:१६)।
थोड़ा विनाशकारक	मैं शैतान की बात कहता हूँ जो मैंने पहले कभी सुनी थी।	"जो निकम्मि बातें मनुष्य कहेंगे, न्याय के दिन वे हर एक उस बात का लेखा देंगे।" (मत्ति १२:३६)।
सब से अधिक	मैं वह कहता हूँ जो शैतान मुझ से इस समय कह रहा है।	"...परमेश्वर के विरुद्ध निन्दा की विनाशकारक बातें कहते सुना है।" (प्रे ६:११)। "जीभ एक आग है नरक कुण्ड की आग से जलती रहती है।" (याकूब ३:६)।

हमारा लक्ष्य : अधिक जीवन लाने के लिये हमें वही कहना है जो हमारी आत्मा के साथ मिलकर परमेश्वर इस समय हम से कह रहा है। (यूहन्ना १४ : १०, १६)।

परिशिष्ट ब

परमेश्वर को आप की देखने की योग्यता को लौटाने देना

कई लोग समझते हैं की दर्शन पाना बिल्कुल ही न मुमकिन है। इस के कई कारण हो सकते हैं। यह अच्छा होगा की हम परमेश्वर से पूछें की क्या रुकावट है, और उसे कैसे दूर कर सकते हैं। निम्न कुछ समस्याएँ हैं जो मेरे जीवन में आयी थीं और साथ में उन के हल भी हैं जो लाभ दायक हैं।

समस्या # १ - दर्शन को तुच्छ समझना और विवेक की पूजा करना

कई लोग पश्चिमी तर्क शास्त्र के बहकावे में इतना आ गये हैं की उसे पूजने लगे हैं और दर्शन देखने वाले को तुच्छ समझने लगे हैं। पश्चिमी लोग अपनी दर्शन देखने की योग्यता को नहीं मानते। व् इस के परमेश्वर का उपहार नहीं समझते।

इस समस्या को सही करने के लिये हमें: १) पस्चताप करीये की आप ने परमेश्वर के उपहार और योग्यता का आदर नहीं किया; २) तर्कशास्त्र को पूजने के लिये प्रायश्चित करीये; ३) वादा करीये की आप अपने देखने की योग्यता का आदर करेंगे; ४) परमेश्वर से कहें की वह आप की देखने की क्षता को लौटा दे; ५) जैसे वह विचार में बसता है वैसे ही उसे चित्रों में बसाईये। अब वह तैयार है परमेश्वर के दर्शन को अपने मन की आँखों से देखने के लिये।

समस्या # २ - धार्मिक विश्वास में प्रवेश करने का डर

कई लोग दर्शन देखने की योग्यता का क्षमताशील प्रयोग नहीं कर सकते क्योंकि उन्हें सिखाया गया है की यह धर्म में प्रवेश करना है।

इस समस्या को दूर करने के लिये हमें, १) यह बात समझ लेनी चाहिये की चित्र को देख कर विचार करने की योग्यता हमें परमेश्वर ने दी है, शैतान ने नहीं; २) जैसे शैतान हमारे देखने की योग्यता को भरना चाहता है, वैसे ही परमेश्वर भी करना चाहता है; ३) परमेश्वर चाहता है की हम देखने की योग्यता से मुड़ न मोड़ें परन्तु उस का प्रयोग करें, ताकी वह इसे लगातार भरता रहे; ४) इस डर को भगा दें की शैतान इस में सा जायेगा, और विश्वास के साथ परमेश्वर को इसे भरने के लिये सौंपें; ५) डर को पाप मानें और परमेश्वर के विश्वास को उपहार के रूप में स्विकार करें; ६) यह बात जान लें की शैतान जैसे विचारों पर हमला करता है वैसे ही देखने की योग्यता पर भी हमला कर सकता है। इस कारण दोनों को परमेश्वर को सौंपना है ताकी वह इसे लगातार भर सके।

समस्या # ३ - व्यभीचार का पाप हटाने के लिये देखने की योग्यता से हट जाना

कई लोगों ने व्यभीचार के पाप से दूर हटने के लिये देखने की योग्यता से हट गये हैं। यह लोग कुछ नहीं देख सकते। उनके बैठक में लगे सोपे को भी।

इस समस्या को दूर करने के लिये हमें, १) यह जान लेना की व्यभीचार से बचने के और भी तरीके हैं; २) इन तरीको को अपनाना ताकी पाप के व्यभीचार से बचे रहें; ३) देखने की योग्यता से कटे रहने के लिये पश्चताप करना; ४) परमेश्वर से कहना की वह इसे दुबारा बना कर वापस लौचा दे; ५) उसे फिर से प्रयोग में लाना प्रारंभ कर दें और ६) परमेश्वर से कहें की वह इस में अपना दैवी दर्शन भर दें।

समस्या # ४ - कोई अप्रिय दृष्य न दिख जाये, इस डर से देखने की योग्यता को समाप्त कर देना।

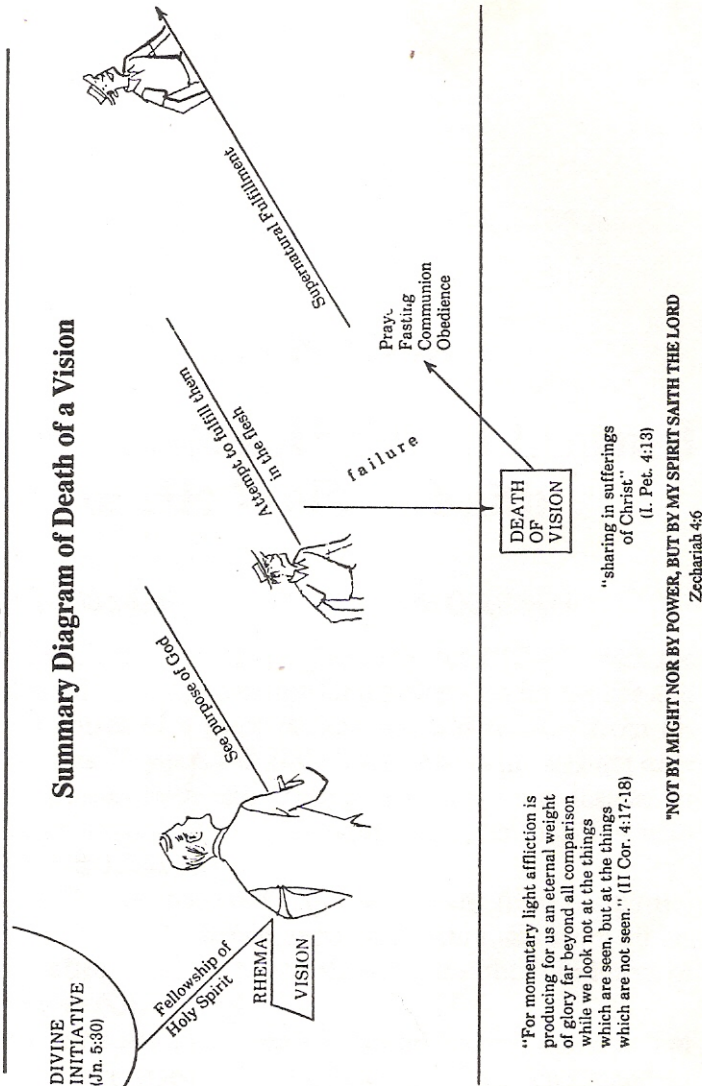
कई लोगों ने दर्शन देखना छोड़ दिया है इस डर से की कहीं उन के जीवन का कोई अप्रिय द-ष्य न दिख जाये। यह छेड़ छाड़ हो सकती है या साँपों का सपना या कुछ और दर्द पहुँचाने वाला चित्र। उन्होंने तैय कर लिया है की इन से पीछा छुड़ाने का एक ही तरीका है की देखने की योग्यता को बंध कर दें।

इस समस्या को दूर करने के लिये हमें, १) देखने की क्षमता को बंध कर देने का कारण ढूँढना होगा; २) इस दृष्य को परमेश्वर को सौंप दें, ताकी वह इसे प्रेम पूर्वक, अपनी उपस्थिती से चंगा करे; ३) दर्शन देखने की योग्यता को परमेश्वर से कहीये की लौटा दे; ४) जब वह जीवन में आ गया है तो फिर से चित्रों में देखना प्रारंभ कर दे; और ५) अपने मन की आँखों को परमेश्वर को सौंपिये, ताकी वह उन्हें भर कर उस में बहने लगे।

संक्षिप्त में, यह थोड़ी रुकावटें हैं जो लोगों को परमेश्वर के स्वप्न, दर्शन और विचार करने से रोकती हैं। जो परमेश्वर ने मनुष्य में योग्यतायें डाली हैं उन का प्रयोग करना सीख लें।

Appendix C:

Summary Diagram of Death of a Vision



परिशिष्ट स दर्शन की मृत्यु का एक सारांश चित्र

दैवी प्रेरणा (यूह ५:३०)

पवित्रात्मा की संगती

रहमा

दर्शन

परमेश्वर की इच्छा को देखना

शारीरिक रूप में उन को पूरा करने का प्रयत्न करना

विफल होना

स्वप्न की मृत्यु

प्रार्थना करना। उपवास, बंधुत्व, आदर करना
आलौकिक रूप में पूरा होना

"क्योंकि हमारा पल भर का हल्का सा क्लेश हमारे लिये बहुत ही महत्वपूर्ण और अनन्त महिमा उत्पन्न करता है। और हम तो देखी हुई वस्तुओं को नहीं परन्तु अनदेखी वस्तुओं को देखते हैं, क्योंकि देखी हुई वस्तुएँ थोड़े ही दिन की हैं, परन्तु अनदेखी वस्तुएँ सदा बनी रहती हैं।" (२ कुरिं ४:१७-१८)

"मसीह के दुखों में सहभागी होते हो..." (१ पतरस ४:१३)।

"न तो बल से और न शक्ति से परन्तु मेरे आत्मा के द्वारा" (जकर्याह ४: ६)।

परिशिष्ट द

विश्वास में चलते हुए अब्राहम ने जो दूसरे पाठ सीखे

अ) तुरन्त पूरी आज्ञा मानने के बजाये थोड़ी आज्ञा मानना

अब्राहम का विश्वास उत्पत्ति १२ : १-३ में प्रारम्भ हुआ, जब परमेश्वर के कहे शब्दों से, परमेश्वर ने उसे उसके जीवन का निर्देश और उस से एक महान राष्ट्र बनाने का वादा किया। वह उस समय ७५ वर्ष का था। इस समय अब्राहम पूरे विश्वास या आज्ञा नहीं मान रहा था, क्योंकि उसे कुटुम्बियों को छोड़ कर जाने की आज्ञा दी गयी थी परन्तु वह अपने साथ लूत को ले गया (उत्पत्ति १२:४)।

परमेश्वर चाहता था की वह पूरी तरह उस पर विश्वास कर के उस की पूरी आज्ञा माने, अपने कुटुम्बियों से दूर रहे ताकी वह उस के वादे को पुरा कर सके (उत्प १३:१४-१८)।

अब अब्राहम ९९ वर्ष का हो गया था और उसने पूरी तरह आज्ञा मानने का पाठ सीख लिया था (उत्प १७)। जब परमेश्वर ने खतना करने की आज्ञा दी तो अब्राहम ने "उसी दिन परमेश्वर के वचन के अनुसार (उत्प १७:२३)" आज्ञा मानी। इस बात ने परमेश्वर के लिये बात करने का द्वार खोला और उस ने फिर से अब्राहम से बात करी (१८:१), जबकी अब्राहम के आज्ञा न मानने के कारण परमेश्वर ने उससे लम्बे समय तक बात नहीं करी थी।

हमें भी यही याद रखना है की पूरी तरह आज्ञा मानने से परमेश्वर कार्य करता है।

ब) परमेश्वर पर विश्वास में शक करना

उत्पत्ति १२:१०-२०में, हम देखते हैं की अब्राहम के मन में शक और डर ने घर कर लिया था। वह डर गया था की मिस्र लोग उसकी पत्नि को रख छोड़ेंगे और उसे मान डालेंगे, इस तरह उसने परमेश्वर के वादे पर शक किया की परमेश्वर उस बचा कर रखेगा। कई वर्षों के बाद भी उसे यही शक हुआ (उत्प २०:१-१८) फिर से अपने आप को बचाने के लिये उस ने झूठ बोला। परन्तु, अब्राहम ने विश्वास करना सीखा और अन्ति परिक्षा में जब उसे इसहाक को वेदी पर बली चढ़ाने को कहा गया तो उसने परमेश्वर की योजना पर विश्वास कर के बली चढ़ाने लगा।

उसे यह भी विश्वास था की परमेश्वर उसे मरे हुआओं में से जी उठायेगा (इब्रा ११:१७)।

हमें भी शक से दूर हट कर परमेश्वर पर विश्वास करना चाहिये।

स) निर्वेक्ष प्रेम - उत्पत्ति १३ और १४

उत्पत्ति १३ में, अब्राहम ने, लूत को उसकी पसन्द के क्षेत्र को चुन कर, झगड़े को समाप्त किया। लूत ने सब से अच्छा क्षेत्र चुना और बुरा क्षेत्र अपने मामा के लिये छोड़ दिया।

उत्पत्ति १४ में, लूत परेशानी में फँस जाता है और अब्राहम उसे बचाने के लिये प्रेम पूर्वक जाता है।

जिन लोगों ने हमें दुख पहुँचाया है, हमें भी उन के प्रति प्रेम दिख कर उन की मदद के लिये आगे बढ़ना है।

द) परमेश्वर के प्रति विश्वस्तता - उत्पत्ति १४ : १७ - २४

वैसे तो लडाई के बाद जो उस राज्य कि वस्तुएँ होती हैं वह नयायपूर्वक अब्राहम की थीं, परन्तु उसने उस में से कुछ भी लेने को मना कर दिया और परमेश्वर के प्रति वचन को याद रखा (१४:२२-२४)।

हमें भी जीवन की न्याय पूर्वक बातों को अलग रख कर परमेश्वर के दिये हुए वचन को निभाना चाहिये।

इ) स्वयं की क्षमता से विफलता - उत्पत्ति १६

परमेश्वर के वादे को पूरा होने के इंतजार में अब्राहम ने अपनी व्याकुल पत्नी के कहे अनुसार किया (१६:२)। उस ने उसे सलाह दी की वह उसकी दासी के द्वारा बच्चे पैदा करे। इस सुझाव के कारण आज तक उस के वंश एक दूसरे से लडाई करते रहते हैं। परमेश्वर यह नहीं चाहता था की उस के आलौकिक प्रयोजन के बजाये वह स्वयं परिश्रम करे (१७:१९)।

हमें परमेश्वर के समक्ष धीरज से खड़े रहना है, यह जानते हुए की हमारी स्वयं क्षमता केवल उजाड़पन ही लाती है।

फ) धार्मिक लोगों के लिये मध्यस्थता - उत्पत्ति १८:२०-३३

जब अब्राहम ने सदोम और अमोरा के नष्ट होने की बात सुनी तो वह परमेश्वर से उस में बस रहे धार्मिक लोगों के लिये मध्यस्थता करने लगा, की परमेश्वर उन्हें बचा ले। इस तरह परमेश्वर की आलौकिक योजना सामने आई और वे बच गये।

हमें भी धार्मिक लोगों के लिये मध्यस्थता करना सीखना है।

ज) सारांश - हमें जो पाठ साखने हैं

१. विश्वास
२. आज्ञापालन
३. निर्वेक्ष प्रेम
४. परमेश्वर के प्रति विश्वस्तता
५. स्वयं की क्षमता को दूर करें।

६. धार्मिक लोगों के लिये मध्यस्थता

आत्मा से उत्पन्न उत्पादकता



उत्पादकता - घनिष्ट परिचय का साथी फल

परमे इर ने मनुष्य को उत्पादक बनाया है

मनुष्य की आत्मा की पाँच इंद्रियों का उपरी दृष्य और परमे इर उन्हें कैसे भरना चाहता है

पहला स्तर - धारणा

परमे इर के उत्पादक विचारों को प्राप्त करने की तैयारी

परमे इर की आवाज को सुन कर मनुष्य की आत्मा की पहली इंद्रि को भरना

स्तर दो - अण्ड सेवन

परमे इर के दर्शन को देख कर मनुष्य की आत्मा की दूसरी इंद्रि को भरना

परमे इर की आवाज और दर्शन पर विचार कर के मनुष्य की आत्मा की तीसरी इंद्रि को भरना

परमे इर के रहमा और दर्शन को स्विकार कर मनुष्य की आत्मा की चौथी इंद्रि को भरना

वि ग़ास द्वारा कार्य कर के मनुष्य की आत्मा की पाँचवीं इंद्रि को भरना

स्तर तीन - जन्म

दर्शन की मृत्यु और पुणरुत्थान

सर्व शक्तिमान परमे इर के रहमा और दर्शन को जन्म देना

सारी महिमा परमे इर को देना

परिशिष्ट

रहमा, 'कहा गया वचन', की शक्ति को समझना

परमे इर द्वारा आपके दर्शन को देखने की क्षमता को वापस लौटने देना

दर्शन की मृत्यु का एक संक्षिप्त चित्र

वि ग़ास में आगे बढते हुए अब्राहम ने जो दूसरे पाठ सीखे

“Speaking To The Purposes Of God For This
Generation And For The Generations To Come”

P.O.Box 310
Shippensburg, PA 17257